सिद्ध प्रयोग – Part I –

with commentary in Hindi by

पं. विश्वेश्वर दयालु वैद्य. (अनुभूतयोगमाला-10)

3/e, Etawah, 1932.

(12)

सिद्ध प्रयोग

"अनुभूत योगमाला" का १० वां रत्न

सिद्ध प्रयोग

(प्रथम भाग)

लेखक व प्रकाशक—

चिकित्सक पं० विश्वेश्वरदयालु जी

वैद्यराज।

❀ श्री धन्वन्तरयेनमः ❀

सिद्ध प्रयोग

लेखक व प्रकाशक—

चिकित्सक पं० विश्वेश्वरदयालु जी

वैद्यराज,

बरालोकपुर-इटावा।

तृतीयवार } सन १९३२ ई०
१००० } सं० १९८९ वि०

पं० विश्वेश्वरदयालु जी वैद्यराज के प्रबन्ध से
श्री हरिहर प्रेस, बरालोकपुर
जि० इटावा में मुद्रित।

भूमिका

रागादिरोगा न्सततानुसक्तान् निःशेषकाय प्रसृतानशेषान् ।

औत्सुक्यमोहारतिदाञ्जघान योऽपूर्ववैद्यायनमोऽस्तु तस्मै ॥

प्रिय आयुर्वेदानुरागी सज्जनो !

इस परिवर्तनशील संसार-चक्र पर अवस्थित प्रत्येक का परिवर्तन अवश्यम्भावी है, यह निर्विवाद सिद्ध है। अपरिवर्तनात्मक पदार्थ इस जगतीतल में कोई भी नहीं। सुरासुर, मानुषादि से वृक्षवीरुधादि पर्यंत समस्त चराचर भ्रमात्मक है। प्रत्येक द्विजाति सन्ध्यात्रय में यह श्रुत स्मरण करते हैं। यथा—"धाता यथा पूर्व मकल्पयत्" अज्ञात देश काल में समुत्पन्न प्रातः स्मरणीय पूर्वज आप्त महर्षियों ने त्रिकाल में इसी परिवर्तन-क्रम को सदा ध्यान रखने की सदाज्ञादी है। अब कहिये; आपको आगे क्या सोचना है? इसी प्रकृति-चक्र में पड़कर क्या हमारी आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली निर्बाध रह सकती? तात्पर्य यह भी मुक्त नहीं रह सकी। ठीक ऐसे ही अवसर में अल्पज्ञ किंतु स्वार्थ-साधन-पटु वैद्य नामधारियों ने पूर्वाचार्य कथित सदुपदेशों का दुरुपयोग किया, योग्य साधनों के अभाव से आयुर्वेद का यथार्थ ज्ञान न होने से वे चिकित्सा कार्य में असफल होने लगे तब तो उनकी सब ओर से स्तुति होने लगी। यथा—वैद्यराज नमस्तुभ्यं यमराज सहोदरं। यमस्तु हरति प्राणान्वैद्यः प्राणान्धनानि च॥ ऐसे लांछनों से अपमानित हो "अनुभूत-प्रयोगों" की खोज करने लगे, तब समयानुसार एक-एक प्रयोग के सैकड़ों मूल्य हो गये। इतना ही नहीं; कितने ही कुक्षिम्भरि अदूरदर्शी स्वार्थी पुरुष अपने सहस्रशोऽनुभूत योगों को अन्यों को न बतला कर अपने साथ ही लेकर सदा को बिदा हो गये; रहे सहे लोग प्राणों से भी अधिक उन प्रयोगों की रक्षा करते हुये केवल प्रचुर द्रव्योपार्जनार्थ अनुभूत औषधियों को पेटेण्ट कराने लगे, उन पेटेण्ट स्वार्थाक्रान्त प्रयोगों में निःक्षिप्त औषधियों को न जानने से जनता को अधिकांश में हानि उठानी पड़ी, तब बड़ा का यह लक्षण किया गया। "व्याधारी-भ्रष्टवैद्यः सहस्रेण

तु वैद्यराट्"। इतनी त्यागें करने पर व आयु के अन्तिम समय में वैद्यराज की उपाधि से विभूषित सज्जन अपने सहोदर (यम) के शांति-निकेतन को उपस्थित हो गये। अस्तु; इस प्रकार अति श्रम से भी कोई भी वैद्य पीयूष-पाणि क्रियाकुशल सुयोग्य चिकित्सक न हो सका, परन्तु पूर्वोक्त कार्य द्रव्य लोभ से पहिले से भी कहीं अधिक परिणाम में होने लगा। इस प्रकार वैद्यराज अपने सहोदर के एजेण्ट बन बैठे, तो कहिए; इनके कारण आयुर्वेद का मुख उज्वल कैसे हो? इसी समय जनता में विदेशी चिकित्सा का प्रवेश हुआ। लोग अंग्रेजी शीशियों की चटक मटक, डाक्टरों की पोशाक, गोलियों की बनावट आदि से मोहित होने लगे। सर्वत्र ही धर्मध्वजा (थर्मामीटर) फहराने लगी। स्वधर्म का ध्यान न रहने लगा, देशकाल की परिस्थिति अनुसार विदेशी चिकित्सा का भारत में दौर-दौरा हो गया। अब वैद्यगण हाथ पर हाथ रखे बैठे रह गये, शिकार भी हाथ से चला गया। अपनी विपत्ति रोवें तो कहां पर? साधारण पर स्वार्थ-साधन कुशल वैद्यों के कारण प्राचीन प्रिय धन आयुर्वेद पर व योग्य वैद्यों पर भी अयश-कालिमा पोती जाने लगी, कई वर्षों तक चिकित्सा कर प्राप्त अनुभवों को यदि अन्य वैद्यों के समक्ष प्रकट किया जाता रहता तो उन्हें भी क्यों उतना ही काल अनुभव प्राप्त करने में लगता? क्यों कलङ्कित होते। जितने समय में उन्हें नवीन अनुभव होना चाहिए था उतने में तो प्रथम अनुभव में लग गये, इस प्रकार सबको नवीन अनुभव करने का समय न मिलने से रोगियों की मृत्यु-संख्या बढ़ती ही रही। शतमारी सहस्रमारी की उपाधि बनी ही रही। कितने ही दयार्द्र व परोपकार के भाव से युक्त रहने पर भी कई कारणों से अपने अनुभूत प्रयोगों को जनता में प्रकाशित न कर सके। जैसे कि; १—प्रकाशित करने की दशा का अज्ञान, २—स्वार्थान्धता, ३—आलस्य जिससे समय पर भी स्वयं नोट न कर सके, ४—प्रकाशनार्थ समाचार पत्रादि उपयोगी साधनों का अभाव, ५—अपने नाम से प्रकाशित करने में द्रव्याभाव, ६—प्रचार की कमी, ७—सम्मान का अभाव,

८-जनता के आग्रह का अभाव, ९-अधिकारियों की लापरवाही, आदि।

अनुकूल प्रयोगों की मांग उग्ररूप धारण करती चली गई, प्रत्येक वैद्यबन्धु को उपर्युक्त कारणों को दूर करने की चिन्ता हुई, यत्न सोचने लगे, उसी समय में परम कृपालु दयासागर परमात्मा को यह अशांति दूर करने की अभिलाषा व आवश्यकता हुई। उस अदृष्ट रूप ने असमर्थ हृदय में अपनी शक्ति का लेश मात्र संचार किया। जिससे उपर्युक्त कारणों का पता लगाकर "अनुभूत योगमाला" नामक आयुर्वेदीय पाक्षिक पत्रिका को प्रकाशित कर कमी को पूरा करने का सन्देश प्रत्येक वैद्य के कान में मन्त्रवत् फूंक दिया। क्योंकि यह दैवी प्रेरणा थी, इसलिये उनके उद्देश्यों को सबने स्वीकार किया और इस कमी को पूर्ण करने के लिये वर्तमान बहुत कुछ अंशों में इस कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हो गये, बहुत से पत्र भी "माला" के उद्देश्यों को लेकर स्वयं से निकल उठे, संसार में चहल-पहल मच गई तथा सभी को अपने उद्देश्यों में कुछ न कुछ सफलता मिल गई परन्तु प्राकृतिक व प्रेरित भाव न होने से वे लोग यथार्थ प्रचार का मार्ग निश्चित नहीं कर सके। 'गतानुगतिको लोकः' के न्याय से श्रद्धा से प्रत्येक दूसरे का अनुकरण करता है परन्तु परीक्षा समय पर दूध का दूध और पानी का पानी ही रह जाता है, हमारी इस प्रगति का भी कभी न कभी अनुकरण होगा ही, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु हमें इस पर अणुमात्र भी भय या दुःख नहीं है। किन्तु अतिशय आनन्द का लाभ होगा। प्रचार सच्चे हृदय से हो तो अत्युत्तम माला आज अपने जन्म के ४ वर्ष समाप्त कर पञ्चम वर्ष में पदार्पण करने जा रही है। इतने काल में अपने घनघोर आन्दोलनों में जितने अनुभूत प्रयोग प्रकाशित कर चुकी है उन २ प्रयोगों को पुनः वैद्यसमाज के सामने परीक्षार्थ रखकर सत्य की कसौटी पर कसवाकर दूसरी बार की परीक्षा में जितने प्रयोग रामबाणवत् शीघ्र फलप्रद निश्चित हुये हैं। उन २ प्रयोगों का संग्रह करके आयुर्वेद के गण्य विद्वानों द्वारा संस्कृत छन्दों में रचना कराकर, [illegible] द्वारा सभेद प्रकाशित कर "माला" के

ग्राहकों को पञ्चमवर्षारम्भ की खुशी में सफलता सूचक उपहार स्वरूप मुफ्त अर्पण करने को उद्यत हुये हैं। यह कार्य कैसा कठिन और कितने श्रम से सम्पादित हुआ है और जनता को कितना लाभ प्रद होगा इसका भार हम अपने सुज्ञ समालोचकों के ऊपर ही छोड़ते हैं वे स्वयं इस बात को प्रकाशित करने के लिये स्वतन्त्र हैं विचार करें। यहां एक प्रश्न उठता है कि संस्कृत पद्य में और पुनः भाषा टीका कर इसका कलेवर व्यर्थ क्यों बढ़ाया गया? इसका यह उत्तर है कि १-संस्कृत पद्य मय होने से विशेष प्रामाणिक और श्रद्धा के साथ देखी जायगी। २—संस्कृत पद्यमय होने के कारण संसार भर के सभी प्रांतों के निवासी योग्य लाभ उठा सकेंगे। क्योंकि संस्कृत शब्द-कोष सर्वत्र एक समान ही अर्थ द्योतक है। ३-विद्वानों का उत्साह बढ़ेगा, संस्कृत साहित्य की वृद्धि होगी। ४-भाषा टीका समेत होने से थोड़े पढे-लिखे लोग भी इससे यथेष्ट लाभ उठा सकेंगे। इसकी पद्य रचना में जिन-जिन महानुभावों ने हमारी सहायता की है और अपना अमूल्य समय देकर पद्य रचना में जो श्रम किया है उस श्रम का काव्यकर्त्ता विद्वज्जन ही अनुभव और अनुमान कर सकते हैं इतरजन नहीं, अतः हम उन लोगों के चिर कृतज्ञ रहेंगे क्योंकि हम इन्हीं महात्माओं की कृपा से इतना शीघ्र प्रकाशित कर सके हैं, उनके शुभ नाम प्रकाशित करते हैं।

१-वैद्यमार्त्तण्ड पण्डित मनसाराम जी आयुर्वेदाचार्य रावलपिंडी २-वैद्यराज पं० शिवगुलाम जी पांडे ओंकार आयुर्वेदिक औषधालय अकोला। ३-श्री रामदत्त जी वैद्यरत्न डि० बो० औषधालय पवारी मारहरा एटा। ४-श्री रामशरण वर्मा वैद्यरत्न अम्बा स्टेट (पञ्जाब)। ५-श्री पण्डित कौशलप्रसाद जी द्विवेदी संस्कृताध्यापक शवरीनारायण बिलासपुर। ६-पं० चन्द्रदत्त जी वशिष्ठ आयुर्वेद विशारद महेन्द्रगढ़ नारनोल।

समस्त विद्वानों की रचना के नीचे उनके नाम के सांकेतिक चिह्न भी लगा दिये हैं ताकि जनताजन उनकी रचना से भी अवगत रहें। हम

से, मन, शिव, दत्त, शरण, कौशल, चन्द्र यह होंगे। जिन पर कोई चिह्न नहीं, वह समस्त सम्पादकीय रचना समझनी चाहिये।

हमारे इस विचार एवं श्रम और द्रव्य व्यय से यदि जन-समाज को तनिक भी लाभ हुआ तो हम अपने श्रम और द्रव्य को सफल समझेंगे। योग परीक्षकों की न्यूनता के कारण हम इसे अभी इसी छोटे रूप में निकाल रहे हैं। अगले वर्ष इससे भी बड़े आकार में सजधज के साथ दूसरा भाग पाठकों के समक्ष रखेंगे। यद्यपि ४ वर्ष से लगातार ग्राहकों की कमी के कारण हमें "माला" में हानि ही रहती है तथापि उत्साह से यह उपहार पाठकों के लिये मुफ्त अर्पण करने जा रहे हैं। मानव सुलभ दृष्टि-दोष से कोई त्रुटि रह गई हो उसके लिये क्षमा प्रार्थना है।

सर्वे कुशलिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणिपश्यन्तु न कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

विश्वसेवकः—
वैद्यराजः

समर्पणम्

सिद्धप्रयोगो जननि ! त्वत्सहायात्प्रकाश्यते ।
तुभ्यं विनमये तस्य किं देयमितिचिन्तये ॥
एषा कृतिस्त्वदीयास्यात् प्राणिनां कार्य्यनोदनात्
अर्प्येऽहंत्वत्कृतिं तुभ्यं प्रीत्या स्वीकुरु स्वीकुरु ॥
प्राणिनांदुःखनाशाय कृतिः स्यादुत्तमोत्तमा ।
प्रकाशं नीयते नित्यं शक्तिं वितर प्रार्थये ॥

विनीतः—

विश्वेश्वरः

सिद्ध प्रयोगस्य अनुक्रमणिका

वृश्चिकदंशे

राजयक्ष्माधिकारे

कासश्वासरोगाधिकार

कर्णस्रावे

अर्शोधिकारः

भग्नरोगे

वायुरोगाधिकारः

कुंकुमाद्यवलेह कासे

उपदंशरोगाधिकारः

दद्रुपामाधिकार

शिरोरोगाधिकारः

मुखरोगाधिकारः

नेत्ररोगाधिकारः

बालरोगाधिकारः

परिशिष्टम्

❀ ओ३म् ❀

अथ सिद्धप्रयोग प्रारम्भः

वन्दना

विन्ध्यारण्यनिवासिनीं भगवतीं प्रत्यूहव्यूहापहाम् ।
व्याधिव्यालविशालज्वालज्वलने सिद्धप्रयोगः स्थितौ ॥
कण्ठा लुण्ठनकारकोहि विदुषां नत्वा प्रकुर्मो वयम् ।
सिद्धं प्राप्यप्रहर्षयन्तु भिषजाः योगाद्यथा योगिनः ॥

ग्रन्थ निर्माणस्य हेतुः

वैद्यानां हृदिराजते निकृष्टचर्चा संगोपिनी आयूताम् ।
दूरात्तामपहाय योगनिचयान् माला बबषुर्यतः ॥
तेषांकारणिकैः कृताहि नितराम् बहुशः परीक्षा कषे ।
सिद्धान्योगवरान्नियोज्य कुरुते विश्वेश्वरो वैद्यराट् ॥

ज्वराधिकारः

मृत्युञ्जय रसः

मरीचं सौभाग्यं कुसुमितमलं वातसुहृदा ।
कणागन्धं शुद्धं विषमित पृथक् तोलकमितम् ॥
द्वितोलं निम्बूकस्वरस परिशुद्धन्तु दरदं ।
सुसिद्धोऽयं नाम्ना गदित इहमृत्युञ्जयरसः ॥

अर्थ—काली मिरच का कपड़छन चूर्ण अग्निताप से फुलाया हुआ सुहागा, पिप्पली चूर्ण, विशुद्धगंधक और शोधित विष प्रत्येक एक २ तोला और निम्बू स्वरस से शोधित हिंगुल २ तो० इन ६ औषधियों के योग से मृत्युञ्जयरस बनाया जाता है ।

अस्य निर्माण प्रक्रिया

विशुद्धममृतं खल्वे शृंगवेरोत्थ वारिणा ।
भृशंसम्पेषयेत्तावद् यावत्फेनप्रभं भवेत् ॥
हिंगुलञ्चवलिं दत्त्वा भृशं सम्पेषयेत्पुनः ।
ततोऽन्यद् भेषजं दत्त्वा भावयेज्जम्बुकाम्बुना ॥
अथास्य गुञ्जार्धमिता गुञ्जैकप्रमितास्तु वा ।
वटिकाः कारयेद्वैद्यो रसतन्त्र विचक्षणः ॥

अर्थ—किसी सुदृढ़ पत्थर के खरल में विशुद्ध वत्सनाभ के टुकड़ों को अदरख के रस से तब तक घोटता जाय जब तक विष फेनाभ न होजाय जब विष के टुकड़े सर्वथा पिष्ट न हो जायँ और खल में फेन ही फेन दृष्टिगोचर होने लगे तो उचित मात्रा में हिंगुल और गंधक गेर कर फिर कुछ समय तक घोटता जाय जब वे भी सुपिष्ट होजायँ तब अवशिष्ट योगिक औषधि (सुहागा, कालीमिर्च और पिप्पली चूर्ण) गेर कर नीबू के स्वरस से एक भावना दे जब इन औषधियों की पिष्टिका गोली बनाने योग्य होजाय तो आधी रत्ती या १ रत्ती परिमित गोली बनाले ।

मृत्युञ्जयरसगुणाः

भूताभिषङ्ग प्रभवं ज्वरं वा जीर्णज्वरं दुर्जलजाञ्चजूर्तिम् ।
धातुस्थितं जन्तुगदज्वरञ्च नवज्वराभं खलुसन्निपातम् ॥
अजीर्णदुष्कृतरुणज्वरञ्च विनाशयत्याशु न संशयोऽत्र ।
यथार्थनामा समुदीरितोऽयं रसस्तुमृत्युञ्जय नामधेयः ॥

अर्थ—कीटाणुविषजनितविषमज्वर, जीर्णज्वर, दुर्जलज्वर, धातुगतज्वर, कृमिरोगज्वर, नवज्वर, सन्निपातज्वर, अजीर्ण युक्तनवज्वर को यह अवश्य ही दूर कर देता है यह अत्युक्ति नहीं है यह उक्त ज्वरों की विषमावस्था से उपस्थित मृत्यु को जीत लेता है इस लिये यह यथार्थ में मृत्युञ्जय है ।

प्रयोगक्रमः

शतैकमितमात्रातो वेदाधिकशतोन्मिते ।
प्रवृद्धे तापमाने तु हृल्लासपरिपीडिते ॥
दाहतृष्णापरिगते द्रुतहृत्स्पन्दनान्विते ।
रक्तोत्पलायमाने च त्वातुरानन मण्डले ॥
कासकम्पशिरः शूलसंयुक्ते द्रुत नाडिके ।
भूताभिषङ्गप्रभवे ज्वरे वा दुर्जलोत्थिते ॥
वातके पित्तके चाथ श्लैष्मिके कफवातिके ।
चातुर्थके प्रात्याहिके त्र्याहिके सविपर्य्यये ॥
सामे निराऽमेपि नवज्वरे खलुविशेषतः ।
मृत्युञ्जयः प्रयोक्तव्यः प्रत्यक्षफलदोरसः ॥

अर्थ—यदि दैहिकताप सौ से एकसौ चार तक (Temperature) हो, हृल्लास हृत्स्पन्दन तेज हो, दाह, तृष्णा अधिक हो, रोगी का मुखमण्डल रक्त हो, कास, कम्प, शिर शूल, नाड़ी की गति तेज ये उपसर्ग उपस्थित हों तो भूताभिषङ्गोत्थित वा दुर्जलोत्थितवातिक, पैत्तिक, कफज, वातकफज्वर, चातुर्थिक, दैनिक, तृतीयक, चातुर्थक-विपर्य्यय प्रभृति विषमज्वरों की साम तथा निराम अवस्था के लिये यह रस दृष्टिफल तथा अमोघ औषधि है।

नवज्वरे रसप्रदानकालः

प्रथमे वा द्वितीये वा तृतीये दिवसेऽपिवा ।
प्रभाते चाथमध्याह्ने त्वपराह्णेऽपिवा न वा ॥
देशं दोषं बलं कालं वयश्चापि विवेचयन् ।
एकैकांवटिकांदद्यात् यथादोषानुपानतः ॥

अर्थ—ज्वरारम्भ दिनसे पहिले अथवा दूसरे दिन या तीसरे दिन इसका प्रयोग करना चाहिये इसका प्रयोग दिन में अपेक्षानुसार प्रातः मध्याह्न वा सायंकाल में करना चाहिये देश, दोष, बल, काल, उम्र का विवेचन कर एक बार में एक बटी का प्रयोग करना चाहिये।

नवज्वरे अनुपानानि

स्वरसास्वरसेनेह मधुनावापि वातिके ।
पटोलदलजेनापि पार्पटेन रसेन वा ॥
नारिकेलजलेनापि पैत्तिकेविनियोजयेत् ।
बलासजेविशेषेण श्रृंगवेरोत्थवारिणा ॥

अर्थ—वातज्वरों में तुलसी के पत्तों के स्वरस के साथ या मधु के साथ या दोनों के साथ पैत्तिक ज्वरों में पटोलपत्र स्वरस या पित्त-पापड़ा के रस अथवा नारियल के जल के साथ दें, कफोत्थित नवज्वरों या विषमज्वरों में आद्रक स्वरस के साथ प्रयोग करें ।

विषमज्वरे

गौरवारुचि संसृष्टेसामे वाऽऽमविवर्जिते ।
जम्बीरवारिणादेयो रसोऽयं विषमज्वरे ॥

अर्थ—विषमज्वर की साम तथा निराम अवस्था में, गात्रगौरव अरुचि, अजीर्ण, प्रभृति लक्षण हों तो इसे जम्बीर स्वरस के साथ देना चाहिये ।

जीर्णज्वरे

प्रवृद्धतापमात्रेतु ज्वरे खलु चिरोत्थिते ।
पिप्पलीमधुयोगेन देयो मृत्युञ्जयो रसः ॥

अर्थ—जीर्णज्वर में यदि नवज्वर के समान तापमान अधिक परिलक्षित हो तो पिप्पलीचूर्ण ४ रत्ती और १ माशा मधु के साथ प्रयोग करे ।

सन्निपातज्वरे

नवज्वरायमाणे च त्वाध्मानजीर्णसंयुते ।
सन्निपातेतु दातव्यो जम्बीरद्रवयोगतः ॥

अर्थ—यदि सन्निपात ज्वर में तापमान-नवज्वर के समान तेज हो और आध्मान अजीर्ण ये लक्षण विद्यमान हों तो जम्बीर स्वरस के साथ मृत्युञ्जय का प्रयोग करना चाहिये।

फुफ्फुसभित्ति शोथे (Pneumonia)

आरक्तवक्त्रे प्रबलज्वरे च श्वासोच्चये कष्टदकासवेगे।
देयोऽदिनेऽयं प्रथमे द्वितीये मृत्युञ्जयः फुफ्फुसभित्ति शोथे॥

अर्थ—रोगी का मुखमंडल आरक्त हो, ज्वर प्रबल हो, श्वास अधिक हो, और खांसने में कष्ट प्रतीत हो, ऐसी अवस्था में मृत्युञ्जय का प्रयोग प्रथम वा दूसरे दिन करने से निमोनियां कष्टसाध्य दशा में परिणित नहीं होता। शीघ्र सुख साध्य हो जाता है।

प्रवाहिकायाम्

अजीर्ण शूल प्रबलज्वरायां प्रवाहिकायां भिषजां वरेण्यैः।
ज्वरप्रशान्त्यै विनियोजनीयो मृत्युञ्जयोऽयं ह्युचितोनुपानैः॥

अर्थ—अजीर्ण, शूल, और प्रबलज्वर युक्त प्रवाहिका रोग में मूल रोग की चिकित्सा करने पर भी ज्वरादि उपद्रव शांत न हो तो मृत्युञ्जय का प्रयोग करें।

कृमिरोगोत्थ ज्वरे।

अजीर्णाध्मानसंयुक्ते ज्वरवेगेबलीयसि।
तुलसीस्वरसेनेह कृमिरोगे प्रयोजयेत्॥

अर्थ—कृमि रोग के कारण यदि आध्मान, अजीर्ण, अरुचि, प्रभृति उपसर्ग सहित प्रबल ज्वर होने पर तुलसी स्वरस के साथ मृत्युञ्जय का प्रयोग करें।

मृत्युञ्जय प्रदान निषेधः।

नर्गाभणीषु बालेषु नातिक्षीणेषु रोगिषु।
प्रवृद्ध मोहयकृति नैवजीर्णज्वरे तथा॥

सशोथेसातिसारेच नैवेह विषम ज्वरे।
उदरामयसंसृष्टे न च वै दुर्जलज्वरे॥
श्वासहिक्का प्रलापादि पीडते सन्निपातिके।
नदातव्यो विशेषेण रसोमृत्युञ्जयाभिधः॥
वनिताबाल वृद्धेषु तथा क्षीणेषुरोगिषु।
रसेऽवश्यप्रदातव्ये युञ्जीतात्यल्पमात्रया॥

अर्थ—गर्भिणीस्तन्यपायिशिशु और अति दुर्बल रोगियों के लिये इसका प्रयोग न करे, जीर्ण ज्वर में यदि यकृत, सोहा बढ़ गई हो तो भी इसे न दे शोथ अतिसारयुक्त, विषमज्वर, उदरायम युक्त, दुर्बलज्वर और श्वास, हिक्का, प्रलाप, प्रभृति, उपसर्ग युक्त सन्निपात ज्वर में मृत्युञ्जय रसका प्रयोग न करे। स्त्री, बालक, वृद्ध, अतिक्षीण, प्रभृति रोगियों के लिये यदि किसी अवस्था में मृत्युञ्जय का देना आवश्यकीय हो तो अल्प मात्रा में इसका प्रयोग करना चाहिये।

नेत्राञ्जनः।

श्यामा मनः शिलारिष्टफलं सम्यग्विचूर्णयेत्।
कारवेल्ली रसेनैव गुटिका कारयेद्बुधः॥
अस्मात् नेत्राञ्जनात्सर्वे ज्वरानश्यन्ति दारुणाः।
ज्वरघ्नी गुटिका नाम नेत्ररोगापहारिणी॥

अर्थ—श्यामा नाम पिप्पली का है यथा (कटुबीजा श्यामा दन्त कफेति) पिप्पली, मनःशिला, निबौली, (नीम का फल) सम भाग इसका चूर्ण कर करेला के रस से गोली तैयार करे। पानी से घिसकर इसे नेत्रों में आंजने से ज्वर मात्र की शांति होती है। ज्वर के वेग में प्रथम दो तीन बार इसका अंजन पानी या गुलाब के अर्क से करना चाहिये, विशेष लाभ होता है। खाने की औषधि भी खिलाना चाहिये। इसका प्रयोग भी करना चाहिये। एकान्तरा ज्वर चातुर्थिकज्वर में भी इसका विशेष फल देखा गया है।

ज्वरहर

पाषाण भेदं शुभगञ्चतुल्यं विधायचूर्णं तु कवोष्णवारा ।

स्वेदं विधायाथज्वरस्यनाशं त्रिमाषमानेन करोति दत्तम् ॥

अर्थ—पाषाणभेद और कच्चे सुहागे का समान भाग किया हुआ चूर्ण ३-३ माशा की मात्रा से गरम जल से देने पर स्वेद लाकर ज्वर को दूर करता है ।

करंजादिः

सुमज्जा करञ्जस्य देयाद्विकर्षाः ।

कणैकाद्ममात्रा तदैलाधंकर्षा ॥

सुचूर्ण्याशु चैता गुटी माक्षिकेण ।

विधियाधं माषोन्मितांतां द्वि सन्ध्यम् ॥

एकामेकां गुटीं खादेत् विषमज्वर पीडितः ।

ज्वरान् सर्वान् निहन्त्याशवनुभूतोयं सहस्रशः ॥ २॥

(राम)

अर्थ—कञ्जा की गिरी २ तो०, पीपल १ तो०, इलायची ६ मा०, इन सबको कूट चूर्ण बना लेवे और शहद में मिलाकर चार २ रत्ती की गोलियां बना लेवे इनमें से प्रतिदिन सुबह और शाम १-१ गोली जल के साथ सेवन करने से विषमज्वर (मलेरिया) आदि सभी ज्वर शीघ्र नष्ट होते हैं यह हजारों बार का अनुभूत है ।

आनन्दभैरव वटी

दरदं वत्सनाभंच व्योषं च द्रावणं तथा ।

सर्विषा भर्जितं हिंगु लवंगं कटफलं तथा ॥

एलावीजानि प्रत्येकं कर्षमानं समा हरेत् ।

संकुट्य चूर्णं मेषांतु वासमागालयेद्भिषक् ॥

चातुर्यामं विमर्दस्याच्छृङ्गवेररसेन तु ।

माषमाना वटीः कृत्वाच्छायाशुष्कांश्च कारयेत ॥

एकाहिके द्व्याहिके या चातुर्थिकविपर्य्यये ।
शीते पूर्व्वे प्रदाहान्ते संततायष्टधाज्वरे ॥
प्रयुज्यते वटीयंतु तत्तत्पानानुसारतः ।
होरायुग्मे प्राग् ज्वरारम्भ कालाद्भुक्त्वा ह्येनामापिबेच्चानुनीरम् ।
कोष्णं कोष्णं शाययित्वाधिशय्यां तूलयन्तरचतं तदावेष्टयेत्तु ॥
सुस्विन्नोऽसौ मुच्येते तत्क्षणाद्वै शाल्यन्नञ्च प्रादिशेत्तस्यपथ्यम् ।
कासं श्वासं वह्निमान्द्योत्थ रोगसंघातञ्च हन्ति हन्ति प्रहन्ति ॥
सर्व्वावस्थास्वेव सर्वेषुरोगेष्वेनां युञ्ज्या द्वैद्यविद्या प्रगल्भः ।
तत्तत्पानं कल्पयित्वात्ममत्या सत्यं सत्यं कोटिशोमेऽनुभूताः ॥

(मन)

भाषा—शिंगरफ (नीबू के रस से शोधा हुआ) बच्छनाग शुद्ध त्रिकुटा और सुहागेकी खील, घी से भुनी हुई सुधी हींग, लोंग, कायफर, इलायची छोटी के बीज प्रत्येक १-१ तोला लेवे इनको कूटकर कपड़ छान कर लेवे और खरल में डाल एक दिन अदरकके रस में मर्दन करे इसके अनन्तर १ माशेकी गोलियां बना छायामें सुखा लेवे।

एकाहिक (एक दिनछोड़ आनेवाला) द्व्याहिक (दोदिन छोड़आनेवाला) चातुर्थिक विपर्य्य (चौथियासे विपरीत अर्थात् चार दिन आकर फिर क्रम भंग हो जाय। शीतपूर्वक और अन्त में दाह हो ऐसे ज्वर में तथा सन्तत (दिन रात चढ़ा रहना) इत्यादिक आठ प्रकार के ज्वरों में इस बटी को उन २ अनुपानानुसार देवे और खाटपर लिटाकर रजाई में लपेट देवे बस पसीना आते ही तत्क्षण ज्वर मुक्त होगा पथ्य शालि चावल देवे इसके सेवन से ये गुण होते हैं।

खांसी दमा और बदहजमी और उससे होनेवाले रोग समूहको समूल यह नष्ट कर देती है यह बिल्कुल सत्य मानिये इस महा मृत्युञ्जय बटी में विशेष प्रशंसा यह है कि इसे वैद्य तत्तत् पानानुसार सब रोगों में अपनी बुद्धि से मात्रा कल्पना करके दें तो अवश्य नाश हो सत्य ही यह मेरा शतशोऽनुभत है।

स्वेदजनकः ।

भृष्टां शताह्वां द्विगुणां सिताञ्च ।
आर्द्राम्बरे वेष्टय भस्मराशौ ॥
दत्वाऽहिमायां घटिकां प्रतीक्ष्य ।
ज्ञात्वा सुभृष्टां परिपेषयाशु ॥ १ ॥
मात्रां द्विकार्षिकीं दद्यात् बुधः कोष्णेन वारिणा ।
स्वेदमायाति विष्टम्भ सन्धिशूल ज्वरार्तिनुत् ॥ २ ॥ (राम)

अर्थ—सौंफ को तवा पर भूनकर उससे दुगनी मिश्री मिलावे और गीले कपड़े में दोनों को लपेट कर भूबल में दबा देवे १ घड़ी पर्य्यन्त प्रतीक्षा कर अर्थात् भुनजाने पर पीस कर रख लेवे इस में से २ तोला मात्रा से गरम पानी के साथ खिलाने से पसीना आने लगता है और बुखार "ज्वर" उतर जाता है तथा पेशाब और दस्त साफ आता है सन्धियों का दर्द आदि बेचैनी दूर होती है ।

सुदर्शनं चूर्णम्

वचा निशा मुस्तयवास शृङ्गी मञ्जिष्ठव्याघ्रयौषधिकाकतुण्डाः ।
तिक्तं वनफशा पिचुमर्दबाले शटीकणा वत्सक ग्रन्थिमूर्वा ॥ १ ॥
इन्द्राह्वयं पुष्करमूल यष्ट्यौ शतावरी दारुनिशोग्रबीजम् ।
केदारजं लोहितचंदनञ्च सत्वं सामादाय बिरोजकस्य ॥ २ ॥
लामज्जकं पत्र मथाजमोदं विषासुराष्ट्री किल शालिपर्णी ।
विल्वं गुडूची मरिचं पटोलं धात्रीद्विजाङ्गयंशुक पृष्ठपर्ण्यः ॥ ३ ॥
रजः समानंनिखिलौषधीनां सर्वार्धमानंतु किरातकस्य ।
सुदर्शनंचूर्ण मिदम् प्रसिद्धं ज्वरासुराणां कलने प्रशस्तम् ॥
सामं निरामं त्वथवैकृतंवा घोरं विकारं प्रकृतोद्भवं च ।
धातुगतं जीर्णज्वरं सशोथं वैषम्यजातं समुपद्रुतं च ॥
बलासपित्तानिल सम्भवं यत् समूल मुन्मूलयतीह दोषम् ।
मर्शां स्यतीसारमथोदरं च प्लीहाभिवृद्धिं जठराग्निमान्द्यम् ॥
जयेदसाध्यानपराजरोगान् बल्लद्वयंचास्य महौषधस्य (मन)

भाषा—बच, हल्दी, मोंथा, धमासा, काकड़ासिंगी, मजीठ, कंटकारी, सोंठ, अगर, पित्तपापड़ा, बनफशा, नीम, नेत्रबाला, कचूर, पिप्पली, कुड़ाछाल, पिप्पलीमूल, मूर्वा, इन्द्रयव, पुष्करमूल, मुलैठी, शताबरी, दारुहल्दी, सिग्रुबीज, पद्माख, रक्तचंदन, सतविरोजा खस, तजपत्र, अजमोद, अतिविषा, फिटकरी, शालिपर्णी, बिल्व, गिलोय, मरिच, पटोल, आमला, कुटकी, तज, पृष्टपर्णी, ये सब वस्तु समान भाग लेकर सबसे आधा भाग चिरायता मिलाकर बारीक चूर्ण करे। यह सुदर्शन चूर्ण सर्वत्र प्रसिद्ध है। इसकी २ रत्ती मांत्रा से सेवन करे, इस प्रयोग से सब प्रकार के आम निराम प्राकृत, वैकृत धातु गत, जीर्णज्वर, सन्निपातज्वर, समूल नष्ट होते हैं।

अर्श, अतिसार, उदर रोग, यकृत, प्लीहा, मंदाग्नि आदि आदि सम्पूर्ण व्याधि शान्त होती हैं।

फुफ्फुस, प्रदाह, हृच्छूल वृक पार्श्वशूलादौ

(निमोनिया प्रभृति)

अर्क त्वचो मास चातुष्टयं स्यात् तथोन्मितं स्यार्दहफेन संज्ञम्।
कर्षप्रमाणास्त्विह सोरकञ्च संयोज्यचैकत्र समाददीत ॥ १ ॥
गुंजाश्चतस्त्रोऽस्य तदीय मात्रा शबतस्फाख्यं च तथानुपानम्।
काहूजवा सम्भवमर्कमत्र हृत्पार्श्ववृक्कार्त्तिमिदं निहन्ति ॥ २ ॥

मर्दनाय

पलंभवेत्तैलमिदं तिलानां वह्निप्रतप्ते खलुसिक्थकर्षे।
कर्पूरकमाषमितं प्रदाय तावन्मितं स्यादहिफेनकञ्च ॥ ३ ॥
सम्मेलयेत्सर्वमथैक पात्रे विमर्दयेच्छूल भवे प्रदेशे।
वटस्यपत्रेण सतूलकेन वद्ध्वा दद्दे प्रस्तरश्च तापः ॥ ४ ॥
समूलघातंविनिहन्तिशूलं सिद्धौषधंसिद्धवरोपदिष्टम्। (मन)

अर्थ—आक के जड़ की छाल ४ मा०, अफीम ४ मा०, कलमी शोरा १ तो० सबको पीसकर एकत्रकरे। मात्रा-४ रत्ती, अनुपान-शर्बत,

शफा और गाजवां का अर्क इसके खाने से हृदय का शूल पसलियों का दर्द, गुर्दे का दर्द तथा निमोनियां के सब उपद्रव शांत होते हैं।

मर्दन करने की औषधि

एक तोला मोम को एक पल तिलों के तेल में डालकर गरम करे उसमें १ माशा कपूर, १ माशा अफीम मिलाय एक पात्र में डालकर जहां दर्द हो उस जगह पर इसको मले और ऊपर बट का पत्र गरम करके रुई रखकर बांध दे और पत्थर गरम करके सेंकदे इससे दर्द बिलकुल शांत होता है।

ज्वरहरी

सुधाचूर्णस्य तुर्य्यांशं गृह्णायात्पीततालकम्।
कन्यानीरेण संमर्द्य कुर्य्यादेकञ्च गोलकम् ॥ १ ॥
तुलाष्ट मितवन्येषूपलेषु गोलसम्पुटम्।
पुटेत्तीव्राग्निना स्वांगे शीते जम्बीरवारिणा ॥ २ ॥
मर्द्येयेद्झसा कुर्य्यात् गुटिकां चणकोपमाम्।
बनप्साशार्करैर्देया जम्बीर शार्करेण वा ॥ ३ ॥
गुटीमेकां द्विकां खादेत्केवलं वारिणाथ वा।
(??) द्व्याहिकैकाहिकामेषु सततसंततज्वरे ॥ ४ ॥
चातुर्थिके चवस्तञ्च वटयो मालिद्या सह।
ज्वरात्पूर्व प्रयोज्याथ त्रिहोरां वारि वर्जयेत् ॥ ५ ॥
मात्रैकयैव नायाति ज्वरश्चातुर्थिका पुनः।
ज्वरे पथ्यं यथावश्यं सदादेयं विजानता ॥ ६ ॥ (दत्त)

अर्थ—विना बुझा हुआ चूना १ भाग और इससे चतुर्थांश पीली हरताल इन दोनों को कूट पीस कर घीगवार रस में घोटकर एक गोला बनावे और ऐसे ही गीले गोले पर सम्पुट कर एक मन उपलों की तेज आंच देवे ठंडा होने पर जम्बीरी के रस में घोटकर तत्काल चने के बराबर गोलियां बनावे सूखने पर एक या दो गोली

शर्बत बनफसा या शर्बत नीबू अथवा केवल जल के साथ ज्वर चढ़ा हो या उतरा हो तिजारी रोज आने वाला ज्वर सतत संतत ज्वर को दूर करता है सततज्वर जब तक न उतरे तब तक खाने को न देवे। उतरने पर उचित पथ्य देना चाहिये चौथय्या ज्वर में चार गोलियां मलीदा के साथ खिलावें और तीन घंटे तक पानी न देवे इस तरह से एक ही मात्रा में ज्वर दूर हो जाता है जानकार वैद्य ज्वर में उचित पथ्य देवें।

नोट—रोटी का चूर्ण घी मीठा मिला लेने से मलीदा बन जाता है।

ज्वरारिवटी

करञ्जमज्जा बलिगोरदालकम्।
पलं दशाख्यं दशशुक्रयस्तथा॥
स्फुटी च सोडा किलकार्बसंज्ञितम्।
पलं कुनाईन युगार्धमात्रकम्॥१॥
प्रगृह्य शुद्धानि च भैषजानि।
किरातकाथे मुनि भावनास्तदा॥
प्रदाय वटयः कुरु वार्धमाषिका:।
जलेन सेव्या ज्वर नाशिनी परा॥२॥ (दत्त)

अर्थ—कञ्जा की गिरी ४० तो०, शुद्ध गंधक ४० तो०, गोदन्ती हरताल की भस्म ४० तो०, शुद्ध फिटकरी २० तो०, सोडाबाईकार्ब २० तो०, कुनाईन १० तो० इन सब शुद्ध औषधियों को लेकर चिरायता के क्वाथ की सात भावनायें देवें। ४-४ रत्ती की गोली बनाकर ज्वर आने के प्रथम १-१ गोली १-१ घंटे के बाद जल के साथ देने से ज्वर नहीं आता और ज्वर उतरता भी है।

हरतालभस्म

गोदन्ती हरतालस्य समाहृत्याच मात्रकम्।
आशीत्यष्टमिते कल्के निम्बस्य चक्वरोधयंत्॥१॥

ततो गजपुटे पाच्यम् शीतेश्चेत रजो हरेत।
गुञ्जैका नवोनीतेन स्फटी शुद्धा द्विमाषिका ॥ २ ॥
प्रतसन्तानिकया योज्या ज्वरात्पूर्वं प्रदापयेत्।
मात्रैकयैव वा हन्ति चातुर्थिकं तृतीयकम ॥ ३ ॥

अर्थ—गोदन्ती हरताल १ तो०, १ सेर नीबू की पत्ती के कल्क रखकर दस सेर कण्डों के गजपुट में फूंक दे, स्वांग शीत होने पर सफेद भस्म निकाल लेवे, उसमें से १ रत्ती भस्म फिटकरी की खील २ मासा को मलाई या मक्खन में मिलाकर ज्वर से पहिले खिला दे, तो एक ही मात्रा में तिजारी और चौथिया ज्वर रुक जाता है।

अन्यच्च।

गोदन्ती हरतालस्य विधूमं भस्म कारयेत्।
द्विगुञ्जा मधुनां देया त्रिवारं शीतजूर्तिनुत ॥ १ ॥

अर्थ—गोदन्ती हरताल की धूम रहित भस्म बनाकर २-२ रत्ती शहद में मिलाकर तीन बार ज्वर आने के प्रथम देने से उसी दिन ज्वर रुक जाता है।

अश्वकंचुकी रसः

टंकणं वत्सनाभञ्च पारदं गंधकं तथा।
तालस्या द्वंश पत्राख्यं दन्तीबीज विशोधितम् ॥
एतदौषधि जातंतु शुद्धमेव समाहरेत्।
निर्विषी ग्रंथिकं चैव त्र्यूषणं त्रिफलां तथा ॥
एकैकं भागमेतेषां श्लक्ष्ण चूर्णानि कारयेत्।
खल्वमध्ये विनि क्षिप्य मर्दयेद्दिन सप्तकम् ॥
भृङ्गराज रसेनैव मरिचाभांगुटीं चरेत्।
अरिष्ट पत्र त्रितयस्य कल्के वटीं विनिक्षिप्त पयोऽनुपानैः।
मात्रात्रयं चास्य क्रमेण वैद्यः प्रयोजयेद्दोष वलं जिगीषुः ॥
भयंकरं ग्रन्थिक सन्निपातं विनाशये देववरः प्रयोगः।
ग्रन्थि प्रदेशेऽथ पुरः प्रदिष्टं मलापहं तैल मिदं प्रयोज्यम् ॥ (मन)

भाषा—सुहागा, विष, पारा, गन्धक, वर्की हड़ताल, जायफल ये सब वस्तु शुद्ध करके ले, निर्बिषी, पिप्पलीमूल, त्रिकटु, त्रिफला प्रत्येक वस्तु को समान भाग लेकर बारीक चूर्णकर खरल में डालकर भांगरे के रस से सात दिन पर्यन्त घोटे। गोल मिरच के समान गोली बनाकर प्लेग के रोगी को बल दोष के अनुसार नीम के तीन पत्तों का कल्क बनाकर उसमें गोली रखकर जल से खिलावे। इसके यथायोग्य सेवन से प्लेग दूर होता है। प्लेग की गिल्टी पर निम्न लिखित मलहर (मल-हम) तैल लगाना चाहिये।

प्लेगरोग निवारणार्थं मलापहं तैलम् (मलहम)

विषञ्च मल्लं रसगन्धके च तालं शिलां निम्बु भवंतु पत्रम्।
तुत्थ च सिन्दूरमथार्द्ध तोले तथैव फीनाइन संज्ञकंस्यात्॥
माषद्वयंवैविष तिन्दुकस्य सिकथं भवेत्तोलक सम्मितन्तु।
दशैव संख्या कथिता सुवैद्यैः सम्मेलयेच्चावलमोगराणाम्॥
पादप्रमाणं किल सेटकस्य तैलं समादाय तिलोद्भवंतत्।
वह्नावधिश्रित्य सुतप्ततैले रजः क्षिपेदौषधि संग्रहस्य॥
तुर्यांश दग्धे खलु तैल जाते सम्मिश्रये तत्र तदेव सिक्थम्।
अवतार्य तूर्णं तद्वस्त्रपूतं स्थाप्यं सुपूतेप्यथ काच पात्रे॥
दृढं विमर्घोऽप्य मुना स देशोयत्रोद्गता शूलयुता विदारी।
शाम्यत्ययं घोर तमो विकारः संक्रामकः सर्व समुद्भवश्च।
प्लेगाख्यरोगो ह्यय योग मुक्तो बहुशोऽनुभूतोऽखिल दोषहारी॥
(मन)

अर्थ—विष, संखिया, पारा, गंधक, हड़ताल वर्की, मनसिल, नीम की पत्ती, तुत्थ, सिंदूर, फीनायल सब वस्तु ६-६ मा०, कुचला २ मा० मोम १ तो०, चावल मोगरा १० अदद, तिल का तेल १ पाव, तैल अग्नि पर गरम करे, सब औषधों को पीसकर उसमें डाले, चतुर्थांश तैल के दग्ध हो जाने पर उसमें मोम डालकर जल्दी नीचे उतार लें। वस्त्र से छानकर साफ शीशी में रख लें। प्लेग की जगह पर खूब जोर

से इस मलापहर (मलहम) तैल को मले इससे प्लेग की गिल्टी बैठ जाती है। बहुत बार का अनुभूत है।

तृतीय ज्वर हर प्रयोग

कुनेनसल्फेटड्राम‌ं लोहसल्फेटकं तथा।
गन्धकैसिडाद्वड्राम मेवं टाटरिकस्य च॥
अर्धड्रामं ग्रहीतव्यं भिषग्भिः सुमनीषिभिः।
औंसमेकं प्रक्षिप्तव्यं साल्टमगनेसियापिवा॥ ७॥
दशबिन्दु प्रमाणेन टिंचरनक्सवोमिका।
लिकरारसनिकंवा पंचबिन्दु प्रमाणतः॥
एवंलिकरेष्ट्रिकनिया कार्बोलिकेसिडं तथा।
शुद्धजलैर्निर्मातव्या योगोऽयमुत्तमः परः॥
अस्यषोडश मात्राणि दद्याद्युव करोगिणे।
सर्वविधं ज्वरंहन्ति यथासिंहो मृगंगणे॥
बलकालदशां दृष्ट्वा मात्रांकुर्याद्भिषग्वरः।
विशेषतया तार्तीय ज्वरंहन्ति न संशयः॥ (शरण)

अर्थ—कुनाइन सल्फेट १ ड्राम, सल्फेट आफ आयरन १ ड्राम, सल्फ्यूरिक एसिड २ ड्राम, डिल किया हुआ टाटरिकएसिड आधा ड्राम, मगनेसिया साल्ट १ औंस, टिंचर नक्सवोमिका १० बूंद, लाइकर आर्सेनिक ५ बूंद, लाइकर इष्ट्रिकनिया ५ बूंद, एसिड कार्बोलिक ५ बूंद पावभर पानी मिलाकर शीशी में भरलें यह युवान आदमियों की १६ खुराक दवा होती है, प्रति दिन १-१ खुराक प्रातः सायं दें और पारी के दिन तीन खुराक दें इससे इकतरा, तिजारी, चौथिया बुखार शीघ्र छूट जाते हैं।

शीत ज्वरहर प्रयोग

निष्कमात्रं सुकर्पूरं कर्षार्द्धं मरिचन्तथा।
पत्रद्वय कारवेल्लदलं बन्पेष्य यत्नतः॥

बदरीफलमानेन निर्माय वटिकाः शुभा; ।

शीतज्वरे प्रयोक्तव्या ज्वरात्पूर्वं पृथक्पृथक् ॥२॥ (कोशल)

अर्थ—कपूर ४ मा०, मरीच ६ मा०, करेले के पत्ते २ पल इन सबको यत्न से पीसकर बदरी फल के समान शुभ वटिका बनाकर शीतज्वर में ज्वर से पहिले एक-एक वटिका का प्रयोग करना चाहिये।

चातुर्थिक ज्वर हर प्रयोग

अध्वशल्यदलजातचूर्णकं स्यात्तदर्धगुड़मिश्रितंयदा ।

द्विद्विगुंजमितकल्पितावटी त्र्याहिकज्वरपरज्वरं हरेत् ॥

अर्थ—अपामार्ग की पत्ती के चूर्ण में आधा गुड़ मिला, २-२ रत्ती की वटिका बना, विना जल के पारी के दिन २-२ घंटे पर देने से चौथिया ज्वर दूर होता है।

अतीसार संग्रहण्यधिकार:

सामातिसारहर प्रयोग:

आफूकजीरोषणरामठानाम्, क्रमेणविध्वष्ठ्युगाब्धिकर्षैः ।

द्विगुञ्जमानावटिकाविधाय, सामातिसारार्त्तिहरा निषेव्या ॥

अर्थ—शुद्धअफीम १ तो०, जीरा भुना ८ तो०, सोंठ ४ तो० हींग भुनी २ तो० को पानी में पीस कर चने प्रमाण गोलियां बनाकर प्रत्येक दस्त के पीछे १-१ वटी दें। २-३ मात्रा में ही लाभ होगा।

अतिसारेभसिंह रस:

पारदंगन्धकंशुद्धमहिफेनञ्च तत्समम् ।

मर्दयेद्द्विजपात्रावे धत्तूरस्वरसैः पुनः ॥

जातीफलंचतुर्थांशम् माषमात्रन्तुभक्षयेत् ।

अतिसारेभसिंहोऽयं विख्यातो रसागरे ॥

अर्थ—अफीम शुद्ध, पारद शुद्ध, गन्धक शुद्ध इनको समान भाग लेकर भांग के रस और धतूरे के पत्तों के रस में मर्दन करके समस्त

दवाइयों से चौथाई भाग जायफल मिलाकर प्रयोग करे मात्रा एक मासा लिखी है यह अधिक है इस लिये ४ रत्ती की मात्रा से दें शहद के साथ या धान्यपंचक काथ के साथ दिन में ३-४ मात्रा देना चाहिये ।

संग्रहणी नाशक योग

गोतक्रेण समन्वितं यदि पिबेल्लोध्रस्य चूर्णं सदा ।
कृच्छ्रात्कृच्छ्रतरोऽपि याति ग्रहणीरोगः शमं सर्वथा ॥
शक्रस्यापि सुदुर्लभं भुविवरं तक्रं विधात्रा कृतं ।
दोषाणान्त्रितयं निहन्ति ग्रहणी रोगातुरः पीयताम् । १ ।

(कौशल)

अर्थ—यदि ग्रहणी रोगी गौ के तक्र के साथ सदा लोध के चूर्ण का पान करे तो कठिन से कठिन भी ग्रहणी रोग सर्वथा शांत हो जाता है विधाता ने इन्द्र को भी दुर्लभ श्रेष्ठ तक्र को पृथ्वी पर निर्माण किया यह तक्र तीनों दोषों को नाश करता है ग्रहणी रोग से पीड़ित प्राणी उसका पान किया करे ।

रक्तातिसार

बिल्वास्थिचूर्णं सितयासमानं,
षष्ठे त्रिवारं खलुटंकमानं ।
रक्तातिसारं मधुनावलीढं,
निवारयत्याशु सुदुर्निवारम् ॥

कच्चे बेल की गिरी का चूर्ण समान भाग मिश्री मिला ३-३ माशा शहद में मिला दिन में ३ बार खाने से निश्चय रक्तातिसार दूर होता है जो शहद न खाना चाहें वे शर्बत अनार से सेवन करें ।

गुदभ्रंशे

संचालिन्यास्त्वचोभस्म सम्यक्कृत्वा भिषक्सुधी ।
गुदभ्रंशं नयेन्नाशं त्रिवारेणैव योजितम् ॥ (चन्द्र)

अर्थ—चलनी के चाम की बनाई हुई भस्म को गुदा पर लगा और भीतर दबा लँगोट कसे रहने से ३ बार में ही कांच बाहर आना दूर होता है।

अतिसारे

रालं कर्षमितं श्वेत खण्डं पञ्चगुणं तथा।
सद्धप्रहरपर्य्यन्तं खल्वे संपेष्ययत्नतः॥
प्रथमं रेचनंदत्वा दद्यादेतन्मुहुर्मुहुः।
प्रयोगो जल्पितोऽप्येष सर्वातीसार नाशने॥ (चन्द्र)

अर्थ—राल सफेद १ तोला, मिश्री ५ तो० इन दोनों को ४-५ घंटे खूब घोंटले प्रथम रेचक औषधि देकर पेट साफ करलें बाद को १-१ या २-२ घंटे के बाद इसे खिलावे यह बच्चों और मनुष्यों के अतीसार नाशने में सिद्ध योग है, मात्रा २ रत्ती से १ माशा तक।

रक्तातिसारे

रसाञ्जने नागफेनमष्टमांशंविनि क्षिपेत्।
चांगेर्य्यास्तुरसेनैव भावितं सकलं दिनम्॥ १॥
माषामानांवटीकृत्वा छायाशुष्कांश्च कारयेत्।
प्रयोगकाले सम्पिष्टा चांगेर्य्याऽम्बुनैवसा॥ २॥
रक्तातिसारेऽनुभूता वटीयं शतशोमया।
प्रवाहिकातिसारे च सद्यः फल प्रदायिनी॥ ३॥
वंशीधरे तिनामासौ विद्वन्मण्डलमण्डनः।
अमृतसरपाठशालाध्यापकः प्रथमोहि च॥ ४॥
त्रिगर्त देशोकिललब्धजन्मा भिषग्वराणां प्रथमाभिधानः।
आचार्य्यपूर्वं पदमा दधानोऽकरोदतीसारहरं प्रयोगम्॥ ५॥
(मन)

अर्थ—रसौत में अफीम ८ भाग मिलावे। अनन्तर चांगेरी (खटकल) के रस में एक दिन खरल करके १ माशा की वटी बनाकर छाया में उन गोलियों को सुखा लेवे। इस्तेमाल करते समय १ वटी लेकर चांगेरी ही के रस से पीस कर रोगी को देवे। यह गोली

रक्तातिसार (खूनी दस्त) प्रवाहिकातिसार (पेचिस मरोड़) तथा अनेक प्रकार के अतिसारों में अमोघ शक्ति रखती है। यह शतशोऽनुभव करके लिखा है। रसौत को शुद्ध कर लेना और मात्रा रोगी तथा रोग की अवस्थानुसार घटा बढ़ा सकते हैं।

कीटनिष्ठीवन योग

शुचौ हरितकीटैको घासस्योपरि जायते।
तन्मुखाद्बहुफेनश्च निष्क्रामति निरन्तरम् ॥ १ ॥
वसत्ययं फेनमध्ये प्रातर्ग्राह्यं सफेनकम्।
वस्त्रपूतं कृमिं त्यक्त्वा कीटष्ठीवनसंज्ञितम् ॥ २ ॥
अस्मिन्नाफूककाश्मीरं समं घृष्ट्वा निधापयेत्।
द्वितण्डुलसमं दत्तं सर्वातीसारवारणम् ॥ ३ ॥
गंगाधराख्यचूर्णेन द्रुतं हन्त्यतिसारकम्।
पञ्चबिंदुमितं फेनं ताम्बूलोपरिखादयेत् ॥ ४ ॥
द्रावयेत्तेन नारीणां कथितश्चाप्तबुद्धिभिः।
फेनेऽस्मिन् मधुरांवश्व कर्षार्धे द्राविणिः पृथक् ॥ ५ ॥
पञ्चान्मिता समादद्यात् संचूर्ण्य मर्दयेत्ततः।
द्विगुञ्जा गुटिका कार्या शताह्वार्केण भक्षयेत ॥ ६ ॥
गुटिकेद्वे पुनर्भूयो विसूचीं हन्ति दारुणाम् ॥ (दत्त)

अर्थ—शरद ऋतु में घास के ऊपर एक छोटा सा कीड़ा हरे रंग का रहता है और हर समय उसके मुख से फेन निकलता रहता है। तथा वह भी उसी फेन के भीतर रहता है उसको मय फेन के प्रातःकाल कटोरी में लेकर बारीक वस्त्र से छानकर उस कीट को फेंक देवे। शेष फेन "कीट निष्ठीवन" कहलाता है। अब इस निष्ठीवन में अफीम केशर, समान भाग लेकर घोंटकर रख लेवे। दो चावल की मात्रा से खिला देवे तो फौरन दस्त बन्द होवें। यही रसगंगाधर चूर्ण में मिलाकर खिलावे तो शीघ्र अतिसार को नष्ट करता है। इसकी पांच बूंद पान पर रखकर खिलावे, तो स्त्री द्रावित हो जावे। तथा इसी फेन

में सौंफ ६ मासा, सोंठि ६ मासा, इलायची छोटी ४ नग, का चूर्ण मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लेवे और अर्क सौंफ के साथ १ दो-दो गोलियां बार-बार खिलावे, तो दारुण (भयङ्कर) विसूचिका (हैजा) अवश्यमेव दूर होता है।

अजीर्णाधिकार

अग्निकुमार रस

॥ वचामुस्ता मरीचञ्च तावत् कुष्टं समं समम् ।
सर्वैः समं विषं शुद्धं श्लक्ष्णं पिष्ट्वार्द्रकाम्बुना ॥
योग्यानुपानतो हन्याद्रोगं जाठरजं द्रुतम् ।
गुञ्जामानमितं दद्यात् सुवैद्यो रोगिणांकृते ॥

अर्थ—वच, नागरमोथा, कालीमिर्च, असली कूठ चारों समान भाग ले और इन चारों के बराबर शुद्ध मीठा तेलिया मिला खूब महीन पीस छानकर एक दिन आर्द्रक रस में घोट १-१ रत्ती की बटी बना योग्यानुपान से दें। यह पेट के रोगों को नाश करता है।

नमक सुलेमानी

पोदीना मरवल्लर्सापृथुकला जीरोषणारामठं ।
भागौद्वौ मिसिकोलकं प्रतिवपेदेकैकभागं तथा ॥
सार्द्धं विश्वमहोषधे त्रिगुणिते शैलेयमोदे दश ।
राजीतो नव सैंधवाच्छ्ररमितं त्वक्षञ्च प्रस्थं गडम् ॥
मुनिसंख्यकवारेस्तुभाव्यं शुक्ते स्तुमृणमये ।
द्वित्रिमाषैर्हिदातव्यं जठरामय नाशनम् ॥ २ ॥

अर्थ—पोदीना शुष्क, अमरबेल, काला जीरा, श्वेत जीरा, पीपल छोटी, काली मिर्च, भुनी हींग प्रत्येक २-२ तो०, सौंफ, श्वेत मिर्च १-१ तो०, सोंठि १॥ तो०, बालछड़ ३ तो०, अजमोद ३ तो० भुनी हुई राई १० तो०, सेंधा नमक ९ तो०, काला नमक ५ तो०, सांभर नमक १ सेर लेकर, कूट, पीस, चूर्ण कर, अंगूरी सिर्के की सात भावना देकर,

१-३ मासा की मात्रा से उदर रोगों में देना चाहिये। यह आज कल अग्निमांद्यादि रोगों में बहुत व्यवहृत होता है। कोई मिचियाकन्द भी ४ तो० इसमें डालते हैं।

सुधासागरो रसः

सहस्रमूल्यम्बु तथा मिषेश्च पादोनशोटंप्रमितं गृहाण।
शरावयुग्माञ्च सितां विशुद्धां निम्बवम्बु सार्द्धद्विपलंरसज्ञः॥ १॥
सत्वंगुडूच्याःपलपादमेकं विशुद्धमाहेयमथापिफेनम्।
सार्द्धैककर्षंतुनिरुक्तसत्त्ववात् सारन्न दीप्योद्भव माददीत॥ २॥
उपोदिकासत्वमतीवशुद्धं सत्त्वद्वयस्यापि शृणुप्रमाणम्।
पादोनषट्प्रमितास्तु माषा सत्वद्वयस्येति मतं प्रमाणम्॥
निरुक्तनीर त्रय मिश्रितासिता मंदंपचेत्तच सुपाकवित्तमः।
संप्राप्त माने च क्षिपेत सुपिष्टां कृष्णांसितांतच्चावतारयित्वा॥
अर्धां वपकेतु रसेक्षिपेद्वै भुजंगफेनं परिचूर्ण्य सम्यग।
वशिष्टद्रव्यं परिक्षिप्य सर्व पुनारसो मंदमतीवपाच्यः॥
ततःसमुद्धृत्यरसंसुशीतं स्वतःसुकूपीष्वथ सम्भरेत।
विधायमुद्रामथ तस्यमात्रां मत्यास्वया सम्परि कल्पयेत्॥
ऋतुं बलं देशमथोवयश्च सम्प्रेक्ष्यरोगा बधितारतम्यम्।
प्रयोगकाले परिचाल्यकूपीं भैषज्यमादाय ततोददीत्॥
ऊनाद्विवर्षायतु जातकायदद्त वैद्यो ननुपञ्च विन्दून्।
चतुर्दशाब्दायुषि सम्प्रयुञ्ज्याद् बिंदूनदशैवास्य रसस्यवैद्यः॥
द्विवर्षमारभ्य चतुर्दशांतं क्रमाऽय मुक्ता भिषजावरेण्यैः।
इतोऽधिकायुष्कनरायुञ्ज्यादापञ्च पञ्चाप्य थवातु त्रिंशत्॥
दिनेद्विवारंह्यथवामयस्य समीक्ष्यवृद्धिं खलुयोजनीयः।
पीत्वाऽऽगदंशीतमनुप्रपेयं जलं गुणांस्ते परिकीर्तयामि॥
ग्रहणीमतिसारञ्च वमिशूल शिरोरुजाः।
कासश्वासाम्ल पित्तञ्च दाहमान्द्यं तथैव च॥
विविधानातिसारांश्च बालानां नाशयेत्तराम्।
सङ्कमता मविचान्येषांरोगाणां नाशयेद्ध्रुवम्॥

रामवाण स्समोऽमोघवीर्य्योऽयंरोग नाशने।
पूर्वं विरेचयद्देयोऽयं रसशास्त्र विदानरा॥
मलंसंरुध्यतेचेत्तु पयस्तस्यानु पीयताम्।
मरिचाम्लगुडंतत्रसेवमानो विवर्जयेत्॥
सशर्करमजा क्षीरं मुद्गं शाल्यन्न भोजनम्।
सस्नेहाश्च यवागूं वैलधवत्रश्च समादिशेत्॥
श्वास वेगोऽधिकश्चेत् स्यात् कर्पूरं माषकं त्रिकम्।
सार्धं द्विकाधिकेस्नेहे टारपीना भिधानके॥
सम्मर्द्याभ्यञ्जयेद् वैद्यो हृदिश्वासोपशान्तये।
लवणंराजिकायुक्तं तस्य निर्माय पोट्टलीम्॥
कोष्णीं कृत्य तपेद्वक्षस्तेन निर्यातिद्राककफम्।
नयेच्छ्वास वेगञ्च सत्यं सत्यं न संशयः॥ (मन)

अर्थ—शतावर का रस और सौंफ का अर्क ये ऽ॥ पक्का लेवे और खन्ड ऽ१ सेर पक्का लेवें, नीबू का रस ऽ= पाव, गिलोय का सत १ तो०, अफीम डेढ़ तोला, पोदीना का सत और अजवायन का सत ६ माशा ६ रत्ती।

बनाने की विधि—ऊपर कहे तीनों स्वरसों में मिश्री मिलाकर धीमी आंच से पाक को जानने वाला पकाव और पकती हुई चाशनी में ६ मा० सफेद मिर्च पीसकर डाले, और पकते २ जब आधा रस रह जाये तब उसमें अफीम बारीक पीसकर डाल दे और बाकी रहा चूर्ण भी डालकर मन्द २ आंच से पकाव, जब चाशनी ठीक बन जावे तब उतार स्वतः-शीत होने पर शीशियों में भर लेवे उसमें मजबूत कार्क लगाकर रख छोड़े, और ऋतु, बल, काल, देश, अवस्था आदि का विचार कर अपनी मति से मात्रा कल्पना करे। प्रयोग काल में शीशी को हिलाकर दवा देवे। २ वर्ष के करीब बालक को ५ बिंदु दे, और १५ साल तक की आयु वाले को १० बिंदु देवे। यह क्रम तो २ साल से लेकर १५ साल तक के लिये वैद्यों ने रक्खा है इससे अधिक आयु वाले को २५ या ३० बिंदु योग्यतानुसार देवे।

दिन में २ बार इस रोग का तारतम्य देखकर इसे प्रयोग करे इसे पीकर ठंडा पानी ऊपर से पिये इसके गुण तुझे सुनाता हूँ, तू सुन—गृहणी, अतिसार, वमन, शूल, शिरदर्द, कास, श्वास, खट्टी डकारें आना अग्निमन्दता और बच्चों के अनेक प्रकार के दस्त तथा अन्यान्य संक्रामक रोगों में यह रामबाण के समान है इसके प्रभाव से कब्जियत होती हो तो दूध पिये।

पथ्य—खटाई गुड़ न दे और विशेष कर इसपर बकरी का दूध खांडयुक्त और दालभात सेवन करे।

स्वादिष्ट करामाती अर्क

जीरंश्वेतंबीजमेलाभवञ्च ग्राह्यम् चतुष्कंफलं सर्वमेतद्।
तन्मानास्या दूषणा तत्रज्ञेया षटतोलं स्याद्देवपुष्पं नवीनम् ॥१॥
सोवर्चलन्तु द्विपलं तत्रप्रोक्तंपथ्यायोज्या पञ्चतोलोन्मिताबै।
ऊपोदीत भेषज सार्द्धसेटके तस्यास्तु षड गुणं वारिदेयम् ॥२॥
सञ्चूर्णोह भेषजं चूर्णयित्वा क्षिपत्वा नीरे सर्वमेतत्ततश्च।
मन्दं २ सम्पचेद् वह्निनातु कूर्पोन्यस्येद्यन्त्र नाल्यामुखेतु ॥३॥
मुक्ताबिन्दु जालरूपेण कूप्यां पुञ्जीभूतं तद्रसंह्यादददाति।
शक्त्योद्धरेच्च षट सप्त कूप्यो मार्गेणतेनोपरिदर्शितेन ॥४॥
एकैकस्यां कूपिकायां प्रपिष्य निम्बुक्षारं शाणमानं क्षिपेद्वै।
हन्यात् सर्वं वह्निमान्द्योत्थ रोगसंघातजातन्तु रसोऽयमाशु ॥५॥
(मन)

अर्थ—जीरा सफेद, सफेद इलायची के बीज, काली मिरच ये सब चार २ तो० लेवे और नवीन लौंग ६ तो०, सोंचर नमक ८ तो०, हरड़ ५ तो०, पोदीना ऽ। गीला और ६ गुना पोदीना से पानी डालकर बाकी कूट कपड़छन किया चूर्ण उसमें डालकर मन्द अग्नि से पकावे और नालिका यन्त्र की नाली के मुख में शीशी लगा देवे ताकि मोतियों के गुच्छों की तरह बिंदुशः गिरकर जमा हुआ रस वैद्य ग्रहण कर लेवे ऊपर कहे हुये इस तरीके से ६ या ७ शीशियां उतारी जा सकती हैं।

एक-एक शीशी में नीबू का सत २-३ माशा पीसकर डाल देवे इसके सेवन से अग्निमांद्य तथा उससे उत्पन्न होने वाले रोग समूह जड़ सहित नष्ट होते हैं।

अग्नि वर्द्धक

सार्धसप्तदशार्द्धं स्याल्लवणं जीरकोषणम्।
पृथग् सार्धद्वयार्द्धं स्यात् पिपरमेंट रामठम् ॥१॥
त्रिमाषं चुक्रसत्वार्द्धं गृह्णीयाच विशारदः।
हिंगुजीरौघृते भृष्ट्वा सर्वं संमर्द्य चूर्णयेत् ॥२॥
चतुर्गुञ्जा मितामात्रा चूर्णसदोऽग्निवर्द्धकम्।
स्वादिष्टं दीपनं रुच्यं खादेदानन्द पूर्वकम् ॥३॥

अर्थ—नमक १७॥ तो०, जीरा सफेद २॥ तो०, सफेद मिर्च २॥ तो०, पिपरमेंट ३ मा०, हींग हारा ३ मा०, टाटरी १ तो० लेना चाहिये, हींग जीरा को घी में भूनकर डालना चाहिये सब दवाओं को बारीक चूर्ण कर ४-४ रत्ती की मात्रा से खाना चाहिये यह "अग्निवर्द्धक" चूर्ण आनन्द पूर्वक खाने से अरुचि और मन्दाग्नि को दूर करता है और स्वादिष्ट है।

स्वादिष्ट चूर्णम्

छत्राजाजी नागरं कर्षमात्रं धान्यं शुक्लां नेत्रकर्षां गृहीत्वा।
निम्बूसत्वं वेदमाषन्त्रिमाषन्पीपर्मेंटं भक्षयेत्स्वादुचूर्णम् ॥

अर्थ—सौंफ, भुना जीरा, सोंठ प्रत्येक १-१ तो०, भुना धनियां २ तो०, मिश्री २ तो०, नीबू का सत्व (टाटरी) ४ मा०, पिपरमेंट ३ मा० का चूर्ण बनाले यह चूर्ण खाने में अत्यन्त आनन्दप्रद है।

अग्निवर्धक चूर्णम्

भृष्टं वै सितजीरकञ्चमरिचं सार्द्धं द्विकर्षोन्मितम्।
पारावारगुणं हितेन लवणं सूपांग शाणोन्मितम् ॥
निष्कं पीपरमेंटकञ्च वटकं निम्बूक सत्वंतथा।
चैतद्वह्निविवर्धनञ्च रुचिरं मंदानले पूजितम् ॥

अर्थ—भुना सफेद जीरा १॥ तो०, मिरच स्याह धुली हुई २॥ तो० काला नमक १७॥ तो०, भुनी हींग ४ मा०, पिपरमेंट ३ मा०, नीबू सत्व (टाटरी) १ तो० को पीसकर चूर्ण बनाले, ये चूर्ण रुचिकारक और मन्दाग्नि नाशक है।

स्वादिष्ट पाचकावलेह:

कृष्णादीप्यमयूरमोदनकरा विश्वं लवंगोषणा।
वाकल्लं जतुकं सुजीरकद्वयं त्वक् तोलद्वन्द्वं क्षिपेत् ॥
खर्जूराद्रकशर्करापटुद्वयं द्राक्षां गिराशोन्मितम्।
भाव्यं जृम्भल नीरतो विधिवता पात्रे धरेत्काचजे ॥
भुक्त्वान्नश्च सदाहिद्रंच एमितं संलेढि यो मानवो।
मन्दाग्निश्च विसूचिकां च वमनं जिह्वाप्रसेकं तथा ॥
नूनं जाठररोग शत्रुवाहिनीं जित्वा स संमोदते।
देवानाविस्वादु लोह दधते जिह्वालतालोलताम् ॥

अर्थ—पीपल छोटी, अजवायन, अजमोद, सोंठ, लौंग, कालीमिर्च, अकरकरा, भुनी हींग, दोनों जीरे भुने हुये, दालचीनी प्रत्येक १-२ तोला का चूर्ण बनालें, फिर छुहारा गुठली निकाले हुये, काला नमक, सेंधा नमक, अदरख इसको छीलकर छोटे २ टुकड़े कर लेना, शक्कर, किशमिश प्रत्येक ११-११ तोला को किसी कांच-पात्र में भरकर नीबू का अर्क इतना डालें कि समस्त द्रवायें डूब जायँ। बर्तन को खूब हिलाते रहें प्रतिदिन, १५ दिन तक पात्र का मुख बन्दकर सुरक्षित स्थान पर रक्खें। बाद को भोजन के पश्चात् ३ माशा से १ तोला तक खाया करें, इससे अजीर्ण, विसूचिका, वमनेच्छा, जीभ से पानी छूटना, अन्न का ठीक न पचना, समय पर भूख न लगना, ये समस्त दोष इससे दूर होते हैं। यह इतना स्वादिष्ट बनता है कि देवताओं की जीभ भी चटाके खाने लगती है।

पाचकावलेह

निम्बूरसे प्रस्थमिते तदर्द्ध मारग्वधम्पातय वासरान्तः।
प्रातर्विमर्द्य वसनप्रपूतं कृत्वाक्षिपेत्सर्वमिदं सुशुद्धम् ॥

शुण्ठी कणौला जतुकन्तनुत्वक्षद्वयं चाग्र सुकृष्णबीजम् ।
सौवर्चलं सैन्धवजीरके च द्राक्षाम्पलं चानय दाडिमाम्भः ॥
निम्बूरसाक्तां सुफलां विधाय संस्थाप्य तत्काचमये सुपात्रे ।
माषत्रयात्कर्षमितं स्वकृत्या सायं विलीढं जठरं विशुन्धेत् ॥

अर्थ—१ सेर नीबू के अर्क को कांच या मिट्टी या पत्थर के बर्तन में डालकर उसमें आधा सेर अमलतास की फली का गूदा भिगोकर रात्रि भर रख छोड़े, प्रात: मलकर छान ले और उसमें पीपर, सोंठ, भुनी हुई हींग, दालचीनी, इलायची बीज प्रत्येक २-२ तोला, भुना हुआ जीरा और बालू में भुना हुआ काला दाना, काला नमक, सेंधा नमक, किशमिश नीबू अर्क में पीसी हुई, अनारदाने का रस प्रत्येक ५-५ तो० डालकर रख छोड़े। सायंकाल ३ मासे से १ तोला तक खाने से प्रात: साफ दस्त होता है। अजीर्ण, अरुचि, मुंह का बद जायका, दस्त साफ न होना, ये दोष इसके सेवन से दूर होते हैं। यह स्वादिष्ट भी अत्यन्त बनता है।

प्लीहारोगाधिकार:

अर्क लवण

कृष्णाभयामलकचित्रकरक्तमूलम् ।
प्रत्येक कर्षमितं ततु चूर्णयित्वा ॥
दुग्धै रवेश्च परिभावय सप्तवारम् ।
दद्यात्तदा गजपुटे लवणं गुडाख्यम् ॥ १ ॥
एवंभूतं गुडाख्यञ्च प्रदद्यात्कर्षसम्मतम् ।
प्लीहचूर्णमदः प्रोक्तं खादे मात्रा त्रिमाषकीम् ॥ २ ॥
कोष्णेन वारिणा नित्यं प्रातः सायं त्रिसप्तकम् ।
प्लीहानं सज्वरं हन्ति पुराणं पथ्यतोषिनम् ॥३॥ (इत्त)

अर्थ—पीपल, हरड़छोटी, आमला लाल चीते की जड़, हर एक को एक-एक तोला लेकर बारीक चूर्ण करे और सांभर नमक में आक के दूध की सात भावना देकर गजपुट में फूंक कर ऐसे नमक को

एक तोला लेकर चूर्ण में मिला देवे इस चूर्ण को सुबह शाम ३ मा० की मात्रा से गरम पानी के साथ २१ दिन सेवन करे तो पुरानी से पुरानी तिल्ली, मय बुखार के दूर हो जाती है।

अर्क लवण

मन्दार पत्राणि सुपीतकानि, ससैन्धवैर्वाकृतभस्मकानि।
प्रातश्च सायं रसरक्ति कानि, प्लीहोदरं घ्नन्ति समाक्षिकेण॥ (शरण)

अर्थ—आक के पीले पत्र १०० क्रमशः हांडी में बिछाता जाय और सेंधा नमक का प्रक्षेप करता जाय इस प्रकार १० तोला नमक बिछाकर सम्पुट कर गजपुट में फूंक भस्म बना ले शहद के साथ २-३ माशा चटाने से प्लीहा दूर होती है।

वृश्चिकदंशे

दशति मानवकं यदि वृश्चिकः, सलिलघृष्ट चतुर्मुखपुत्रकम्।
हरित दंशरुजं च विलेपतो भृशमिदं भिषजामुनमोदितम्॥ (शरण)

अर्थ—यदि किसी मनुष्य को बिच्छू ने मारा हो तो दंश स्थान पर संखिया को पानी में पीसकर गाढ़ा २ लेप करने से तत्काल पीड़ा शांत हो जाती है।

यकृत प्लीहा विघातक योग

क्षीरत्रयं स्फुटी पंचलवणं नवसादरः।
मर्कटीपर्पटीक्षारं त्वगं च चणकोद्भवम्॥ १॥
चूर्णकं चेति सकलं समभागं समाहरेत।
घटे निक्षिप्य तत्सर्वमन्यपात्रमधोमुखम्॥ २॥
निधायोपरि तन्मध्यं सन्दधीत मृदादिभिः।
निवेश्यनाडिकामूर्ध्वे जलद्रोण्यां समास्थिते॥
कांचपात्रे सुसंयोज्य चुल्यांयन्त्रं निधापयेत्।
मन्दाग्निना पचेत्सर्वं यावद्बाष्पभवोरसः॥ ४॥
कांचपात्रे समागच्छे नाडिकाद्वारतः सुखम्।
मध्येमध्ये तु पानीयमवश्यम्परिवर्त्तयेत्॥ ५॥

बिन्दुत्रयासमारभ्य यावत्स्यान्नवबिन्दुकम् ।
तावन्मात्रं ए दातव्यं यकृत्प्लीहोपशान्तये ॥ ६ ॥
तथोदरभवारोगा विनश्यत्यस्यन्त्यस्य सेवनात् ।
नानेन सदृशोलोके यकृत्प्लीहोदरार्त्तिहृत ॥ ७ ॥ (कोशल)

अर्थ—जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, फिटकरी, पंच लवण, नौसादर, अपामार्गखार, पपरियाखार. चने का खार, सूखा चूना इन सबको समान भाग लेवे, पुराने मिट्टी के घड़े में सबको रखकर एक दूसरे पात्र को नीचे मुखकर उसके ऊपर रखकर उसके मध्य भाग को चिकनी मिट्टी आदि से खूब जोड़ दे फिर ऊपर के पात्र में एक छेद कर एक नली लगाकर कुछ दूर में स्थित जल से भरे पात्र में स्थित एक शीशी में दूसरे छोर को ठीक मिलाकर यंत्र को चूल्हे पर रखदे, मन्द २ अग्नि से सब को पकावे जिससे भाप से निकला हुआ अर्क नली के द्वार से शीशी में ठीक २ आजावे, परन्तु बीच बीच में जल पात्र के अवश्य बदलता रहे, इस अर्क को तीन बिन्दु से ६ बिन्दु तक जल में मिला कर यकृत् प्लीहा की शान्ति के लिये देना चाहिए, उदर के अन्य रोग भी इसके सेवन से दूर हो जाते हैं, लोक में इसके समान औषधि यकृत, प्लीहा व उदर रोगों को नाश करने के लिये नहीं है ।

जलोदरनिवारकयोग:

कटं भरावै: दशशाणमाना ।
द्विप्रस्थनीरे मृदुपाचनीया ॥
ततोऽवशिष्टे च तदष्टमांशे ।
विगालनीय: पटमध्यतोपि ॥
सायं प्रातश्चमध्याह्ने स्वापकाले तथैव च ।
घोरं जलोदरं हन्ति पुराणमपि सेवनात् ॥ (शरण)

अर्थ—कुटकी २॥ तो० को कूटकर ३ सेर जल में पकाकर ऽ। पाव भर शेष रखे कपड़े से छानकर रखले प्रातः सायं मध्याह्न वा

सोते समय १-१ छटांक पिलावे प्रतिदिन नवीन क्वाथ बनाकर प्रयोग करना चाहिये ४० दिन में पुराना से पुराना जलोदर दूर होगा पथ्य में सिर्फ दूध देना चाहिये।

एलवादि गुटिका

एलवालुककंकुष्ट हिगुटंगनकं तथा।
ग्राह्यं समविभागेन शिवाबाभि विभावयेत्॥
सप्तवारं विभाव्याथ वटिकां रक्तिकान्मितान्।
कुर्य्याद्विरेचनान्येषं सुगमे भवन्तिहि॥ (शरण)

अर्थ—एलुवा, उसारारेवन्दु, भुनीहींग, सुहागाभुना, इनको समान भाग लेकर हर्रा के स्वरस में पीस २ कर सुखाना इस प्रकार सात बार भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियां बनाले १-१ गोली देने से सुगुमता से विरेचन हो जाता है:

राजयक्ष्माधिकार

राजयक्ष्मा रोग

एलोषणासत्वमथो गुडूच्या भल्लातकं वंशज रोचनाख्या
भागैःसमालैर्विहितश्चूर्णं वल्लार्धमात्रम् पयसोऽनुपानैः॥ १॥
आरभ्यतावत्त प्रसृतप्रमाणात् कर्षद्वयंचापि त्रिवर्द्धनीयम्।
पूर्णे तुप्रस्थेपयसाशुजीर्णे निःसंशयं शाम्यतिराज रोगः २ (मत)

अर्थ—इलायची, पिप्पली, गिलोयसत, शुद्धभिलाबा, बंशलोचन सबवस्तुओं को समान भाग लेकर खरल में बारीक चूर्ण करे शीशी में डाल कर रख छोड़े आधपाव दूध से आधीरत्ती मात्रा में खाने को दे प्रतिदिन आधी छटांक दूधबढ़ाता जावे जब १ सेर भर दूध हजम होने लगे तो समझे अवश्य राजयक्ष्मा रोग शांत होजायगा।

कासश्वासधिकार

आद्रकाद्यवलेह

षट्माषं मधुचाद्र कन्त्रिगुणितं माषद्वयं यष्टिकं।
यूषाकं च दद्यात यष्टिकमितं माषार्धमानां. कणाम्॥

सचूर्णयाद्रक वारिसारघयुतं सप्ताहमात्रं नरः।
लीढं हन्ति सुदारुणन्तु कसनं नो विद्यते संशयः॥

अर्थ—मधु ६ माशा, आद्रकरस १॥ तोला, मोरेठी, २ माशा, जूफा २ माशा, पीपल छोटी ४ रत्ती का चूर्ण मिला चाटे इस प्रकार एक सप्ताह में दारुण खांसी नष्ट होती है इसमें संशय नहीं।

कासंहारक वटी

हरीतकी नागरमुस्तकं च,
विभीतकं दाड़िमवल्कलं च।
समानमानै र्वटिका विधाय,
सेवते कासस्य विनाशनाय॥ १॥ (कोशल)

अर्थ—हर्रा, नागरमोथा, बहेड़ा, अनार की छाल, इन सबको समान भाग लेकर वटिका बनाकर खुश्क व तर खांसी के विनाश हेतु सेवन करे।

श्वासनासक कदली योग

विपकरम्भाफलमध्यभागे,
गुञ्जैकमानं हि मरीचचूर्णम्।
निधाय रात्रौ च ततः प्रभाते,
मन्दाग्निना तत्परिपाच्य सम्यक्॥ १॥
श्वासार्दितायाथ भिषकप्रदद्या,
द्रम्भाफलन्तत्परिभक्षणाय।
स्वल्पैर्दिनैरेव निहंति सवें॥
श्वासं सवेगं खलु चित्रमेतत्॥ २॥ (कोशल)

अर्थ—एक गुञ्जा (रत्ती) काली मिरच का चूर्ण पके केले के भीतर रात्रि में रखकर प्रातः मन्द अग्नि से ठीक पकाकर श्वास पीड़ित को वह केला खाने को वैद्य देवे थोड़े दिनों से ही वेग समेत श्वास रोग को यह योग नष्ट करता है यह आश्चर्यप्रद है।

शृङ्ग्यादि चूर्ण

शृङ्गी कटुत्रय फलत्रय कण्टकारी।
भार्गींच पुष्कर जटा लवणानि पंच॥
चूर्णं म्पिवदशिशिरेण जलेन हिक्का।
श्वासोर्ध्ववातकसनारुचिपीनसेषु ॥ १ ॥ (कौशल)

अर्थ—काकड़ासिंगी, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आंवला, छोटी कटेरी, भारंगी, पुष्करमूल, पांचों नमक, इन सबका चूर्ण कवोष्ण जल से सेवन करने से हिक्का, श्वास, ऊर्ध्ववा काश, अरुचि, प्रतिश्याय का विनाश होता है। मात्रा—१ मासा।

श्वासे।

कनकोत्तमपुष्पसुचूर्णयुतं, दलयोगविनिर्मितवर्तिवरम्।
पिबसप्तदिनंविधिनासहितम्, यदिमर्दितुमिच्छसि श्वासगदं॥

अर्थ—यदि श्वास रोग को नष्ट करने की इच्छा हो तो धतूरे के फूलों से बनाई हुई चुरट का सात दिन सेवन करो।

आकरकरभादि वटी

आकारकरभंत्वक्तं मरीचं कुष्टचन्दनं।
बब्बूलस्यतु निर्यासं कर्षमानं क्षिपेद्बुध:॥
विषाणीश्च लवङ्गश्च द्विद्विकर्षं तथैव च।
यष्टीसत्वं त्रिकर्षं स्याच्चतुः कर्षञ्च खादिरम्॥
बब्बूलस्यत्वच: प्रस्थं जलस्याष्टगुणेपचेत्।
चतुर्भागमितं नेयं वस्त्रपूतं पुन:पचेत्॥
सम्यग्घनत्वमापन्ने दत्वा चूर्णं च कुट्टयेत्।
वटीगुञ्जामिता कुर्य्यान्मुखेधृत्वारसं पिबेत्।
अत्युग्रकासेन निपीडितस्यतु जनस्यरात्रौ भजतोप्य निद्रतां।
कासंवटी वक्रगतोनिहन्तितं रक्षांसिचक्रंहि सुदर्शनं यथा॥

अर्थ—अकरकरा, बहेरा की बकली, मिर्च, कूठ, सफेद चन्दन बबूल का गोंद १-१ तो०, काकड़ासिंगी, लौंग २-२ तोला, मोरेठी

का सत्व असली ३ तो०, पापरीकत्था ४ तो०, का महीन चूर्ण करके रख ले फिर १ सेर बबूल की छाल को कूटकर ८ सेर जल में औटावे जब २ सेर पानी शेष रह जाय तो फिर उतार कर छान ले, और कड़ाही में पकाकर गाढ़ा करे अवलेह के समान होने पर ऊपर का चूर्ण मिला खूब कूट कर गोलियां १-१ रत्ती की बनाले। १-१ गोली मुख में डाल रस चूसने से कास नष्ट होती है।

अन्यच्च

टंगनं कण्टकारीश्च करञ्जं मरिचं कणा।
खदिराश्चैव प्रत्येकं सार्द्धमाषत्रयेण च॥
एवं खदिरसारश्च द्विमाषमहिफेनकं।
विचूर्ण्य सर्वद्रव्याणि मर्दये दार्द्रकाम्बुना॥
कुर्य्याद्वटी मकुष्ठाभां वक्त्रे दत्वा विचूषयेत्।
वटीद्वयं दिनेद्वयं रात्रिकाले तथैव च॥ (शरण)

अर्थ—सुहागा, कटेलीबीज, करञ्जागिरी, मिर्च, पीपल, कत्था-पापरी, प्रत्येक ३॥-३॥ मा०, अफीम २ मा०, आद्रक रस में पीस मटर बराबर गोलियां बना रस चूसना चाहिये दिन में २ और रात्रि में २ गोली देना चाहिये।

कनकादि वटी

धत्तूर बीजं विमलीकृतं विषं, शुद्धस्तमाखुः कलिकत्तदेशजः।
मासत्रयंग्राह्यमिदं समस्त, माफूकमेवं रसमाषकेण॥
द्रव्याणि सर्वाणि विचूर्ण्य सम्यक, तथापिवस्त्रेण विगालितानि।
कुर्य्याद्वटीमर्सभास सर्षपाभां, ताम्बूलपत्रेण च सेवनीयम्॥
एकावटी वा वटिकाद्वयं वा, वारत्रयं व दिवसे च रात्रौ।
श्वासंमहोग्रं सततं निहन्ति तमोयथाभास्कररश्मिराशिः॥
(शरण)

अर्थ—शुद्ध धत्तूरबीज, शुद्ध बत्सनाभ, कलकतिया तमाखू खाने की ३-३ मासा, अफीम ६ मासा, समस्त दवाइयों को कूट पीस कपड़े

से छानकर पानी में घोट सरसों के समान गोलियां बनालें एक या दो अवस्थानुसार पान पर रख अर्क चूसें दिन रात्रि में तीन बार तक आवश्यकतानुसार देने से श्वास रोग दूर होता है।

व्योषादिगुटी

व्योषाम्लिका चित्रक चव्यबोधि।
तालीसदीप्याद्य मिताश्च माषाः॥
त्वक्पत्र तुत्था प्रभृतिस्त्रि माषः।
गुडोऽत्रविंशः प्रमितः प्रदेयः॥ १॥
व्योषादिकेयं गुटिका प्रयोज्या।
सश्वासकासारुचि पीनसेषु॥
स्वर्यो प्रतिश्याय हरी प्रदिष्टा।
पञ्चानना रोगचय प्रणाशे॥ २॥ (राम)

अर्थ—सोंठ, मिरच काली, पीपल, इमली, चित्रक, चव्य, अमल बेत, तालीसपत्र, जीरा १-१ तोला लेवे और दालचिनी, इलायची, तेजपात ३-३ माशा, गुड़ ३० तो० लेकर उपरोक्त औषधियों का चूर्ण कर गुड़ में मिलाकर गोलियां बना लेवे यह व्योषादिवटी गरम पानी के साथ २-२ गोलियां सेवन करने से श्वास, खाँसी, अरुचि, पीनस, प्रतिश्याय (जुकाम) को दूर करती है और स्वर (आवाज) को लाभदायक हैं गले के बैठ जाने पर गोली मुंह में रखकर चूसना चाहिये और भी रोगों के समूह को सिंहनी के समान नाश करती है।

शुष्ककाससंहारक योग

वचांयवानीं च महाभरीं च समां समानाम्परिचूर्ण्य बह्वौ।
अपास्तवाजे कनके प्रपूर्य गोधूमपिष्टान्तरितंविपाच्यम्॥ १॥
शीतं समुद्धृत्य विहार्यापिष्टम् शिष्टं प्रपेष्यप्रणिधाय पात्रे।
सन्तनिकायामथनागवल्ल्यां गुञ्जद्वयं हन्ति सुशुष्ककासम्॥ २॥
(कोशल)

अर्थ—वच, अजवायन, कुलीञ्जन सबको समान भाग ले बारीक चूर्ण कर बीज निकाले हुये धत्तूर फल में भरकर गेहूँ के आटे के भीतर

कर अर्थात आटे में लपेट कर अग्नि में पकावे, स्वांग शीतल होने पर निकाल कर आटे को त्याग कर शेष सम्पूर्ण फल सहित औषधि को खूब पीसकर पात्र में रख कर मलाई या ताम्बूल पत्र पर रख दो रत्ती खाने से विनष्ट नष्ट होता है।

हिक्कायां

द्विगुञ्जं सैंधवं पिष्ट्वा चाष्टबिन्दु जलेषु च।

तन्नस्येन द्रुतं यान्ति पञ्चहिक्काश्च पञ्चताम्॥ १॥ (वृत्त)

अर्थ—सेंधा नमक २ रत्ती, आठ बूंद ताजे पानी में पीसकर हल हो जाने पर नाक में ४ बूंद टपकाने से पांचों प्रकार की हिचकी शीघ्र ही नष्ट होती हैं।

अपामार्गमूलयोग

अपामार्गस्यमूलन्तु कर्षमानं भवेत्तथा।

क्षिप्त्वातुसप्तगोलानि पाययेत्पेय्य रोगिणाम्॥

रवित: कुजपर्य्यन्तं सेवनं श्वासनाशनम्।

पथ्येपायसं दद्यात् दधिभक्तं च भोजने॥

अर्थ—अपामार्गमूल १ तो०, कालीमिर्च ७ नग इनको पीसकर रवि और मंगल को ३ दिन दवा खिलावे पथ्य में सिर्फ खीर, दही, भात खिलाना चाहिये अन्य समस्त वस्तुयें त्याज्य हैं।

कफनाशकीयोग:

स्वच्छन्तुमृत्तिकापात्रं यत्नादग्नौ प्रवेशयेत्।

यदाभवेत्तुरक्ताभं संदंशेन वहिर्नयेत्॥

गोमूत्र कुडवं भृष्टं स्फटीचूर्णं तु कर्षकम्।

क्षिप्त्वापेयन्तु निष्फेनं श्लेष्म कासप्रशुत्तये॥

अर्थ—एक शराबा (मिट्टी का बड़ा कूजा) लेकर अग्नि में तपा लालवर्ण का होने पर निकाल ले सड़सी से पकड़ कर उसमें गोमूत्र १ पाव और भुनी हुई फिटकरी का चूर्ण १ तो० डाल दे खूब उफान आवेंगे उफान बैठ जाने पर रोगी को पिलावे इससे कफ गलकर

पाखाने के मार्ग से निकल जाता है कफ नाश करने में यह अमोघ शस्त्र है।

कासश्वासावलेह

जलेचतुर्गुणेपाच्य वासामूल द्विप्रस्थकम्।
पदांशेचजलंपूतं कृत्वादद्यात् कटाहेके॥
अवलेह समंपाकं नीत्वादद्यात्सुभेषजम्।
मरीचं केसरं शुण्ठीं वचां मुस्तञ्च सैंधवम्॥
लघ्वेलां पत्रजं दद्यात् सार्द्धं तोलं पृथक् पृथक्।
मधु पंचपलं दत्वा कर्षं कर्षं लिहेन्नरः॥
एतस्याभ्यासतः सत्यं कासश्वासयुतोज्वरः।
अचिरेणैवकालेन नश्यतीह समूलकम्॥

अर्थ—वासा (अडूसा) मूल छाल २ सेर को ८ सेर पानी में काथ कर चतुर्थांश रहने पर उतार छानकर ५।१ सेर शक्कर मिला अवलेह की सी चासनी बना फिर, नागकेशर, सोंठ, बचमीठी, नागरमोंथा, सेंधा नमक, इलायचीबीज, पत्रज प्रत्येक १॥-१॥ तोला लेकर महीन पीस छानकर मिला दें और उतार लें ठंडा होने पर ५।- सवा पाव मधु मिला किसी पात्र में भरलें १- तो० प्रातः सायं देने से कासश्वास युक्त ज्वर बहुत शीघ्र नष्ट हो जाता है।

सितोपलादिचूर्णम्

सितोपलाषोडशस्यादष्टौ स्याद्वंशरोचना।
पिप्पलीस्याचतुः कर्षा स्यादेला च द्विकार्षिकी॥
एकः कर्षस्त्वचः कार्यश्चूर्णयेत्सर्वमेकतः।
सितोपलादिकं चूर्णं मधुना सह लेहनात्॥
ज्वरं श्वासं च कासं च मन्दाग्निरुवमरोचकम्।
जिह्वाप्रसेकंवमनं निहन्त्यात्र संशयः॥ (चन्द्र)

अर्थ—मिश्री १६ तो०, वंशलोचन ८ तो०, पीपल छोटी ४ तो०, छोटी इलायची २ तो० दालचीनी १ तो० का सूक्ष्म चूर्ण बना मधु

में देने से ज्वर, श्वास, कास, मंदाग्नि, अरोचक, वमन, जिह्वाप्रलेक दूर होते हैं मनुष्यों के लिये १॥ माशा और बच्चों के लिये २ रत्ती से ४ रत्ती तक बलानुसार देना।

श्वासहरयोगः

रक्तापामार्गमूलन्दिनकरदिवसे पुष्यभे सत्तिथावा।
नीत्वास्नात्वैककर्षं मरिचमपि तथैकान्यविंशप्रमाणम्॥
पिष्ट्वाप्रातः पिबेचेत्तदनु दधियुतं चौदनं भक्षयेद्वा।
श्वासः संशांतिमीयान्भवति विफलः श्वारोगी कदाचित्॥

अर्थ—पुष्यनक्षत्र सूर्यवार श्रेष्ठ तिथि में प्रायः लाल अपामार्ग के मूल को लाकर स्नान करके १ तो० प्रमाण से तथा २१ कालीमिर्च मिला पीसकर यदि पीवे व पीछे केवल दही भात व दही चिउरा खावे तो श्वास निश्चय शान्त हो श्वास रोगी इस योग से कदाचित विफल मनोरथ नहीं होता।

कर्णस्रावे

रसकपूरक मैसिडबोरिकं समविभागयुतं खलुसिन्दुरं।
भवति कार्यकरं घृतमिश्रितं हरितकर्ण रुजामपि विद्रुतम्॥
बिन्दुद्वयंभेषजस्य शुद्धकर्णे निपातयेत्।
घनीभूते घृते वह्नौ द्रवीकृत्वा निपातयेत॥

रसकपूर, बोरिकएसिड, सिन्दूर समभाग लेकर तीनों के समान घृत में मिलाकर पिचकारी से कर्ण साफ कर यह दवा डालें यदि घृत जम जाय तो अग्नि से गरम कर डाला करें इससे कान की पीड़ा व बहना शीघ्र बन्द होता है। मात्रा—२-३ बिन्दु है।

सुस्वादु ताम्बूलरञ्जनी वटिका

यष्टीसत्वं पंचभागं त्रुटिबीजं तु तत्समं।
पीपरमेंन्टस्य षण्माषंतु षण्माषं कर्पूरकम्॥ १॥
सेवन्त्यर्केण संपिष्ट्वा पञ्चकर्षमितेन च।
ज्ञीनप्रानेतिविख्याता वटीसर्षप सन्निभा॥ २॥

रुचिस्वरकरीख्याता मुखदुर्गन्ध नाशिनी।
जयेदाशुमनोग्लानि मुखशोष विशोषिणी ॥ ३ ॥

अर्थ—मुलेठा का सत्व पांच भाग, एलाबीज पांच भाग पिपरमेंट ६ माशा, कपूर ६ माशा, गुलाब जल ४ तो० में घोटकर गोली सरसों के बराबर बनाव। यह जीनतान इस नाम से विख्यात गोली रुचि और स्वर को करने वाला मुख की दुर्गन्धि का दूर करने वाली है, मन की ग्लानि को ठीक कर प्यास का दूर करती है।

अर्शोधिकार:

सर्वार्शोहरचूर्ण।

हारश्रृङ्गारजः कंदः कंकोलं मरिचन्तथा।
भंगा च खदिरश्चैव सर्वं तुल्यं समाहरेत्॥
चूर्णयित्वार्द्धकर्षं च कुडवार्धेन वारिणा।
प्रातः प्रातः पिबेदेतत्सर्वार्शोनाशनंपरम्।
पथ्ये कुण्डलीन्दद्यान्नदद्यादन्य भोजनम्।
वारिस्वेष्टम्पिबेदंते सद्योऽर्शोनाशमेष्यति ॥ ३ ॥ (कोशल)

अर्थ—हरश्रृङ्गार का कन्द, शीतलचीनी, कालीमिच, भांग, पपरिया कत्था सब समान भाग लेकर चूर्ण करके ६ माशा चूर्ण को आध पाव जल के साथ प्रातः पीवे, यह सब प्रकार के अर्श का परम विनाशक है। पथ्य में जलेबियां देवे अन्य भोजन न देवे। भोजनोपरांत यथेष्ट जल पीवे, तो शीघ्र सब प्रकार का अर्श नाश हो जावेगा।

रक्तार्शे

कारवेल्लकपत्राणां फलानां स्वरसोऽथवा।
द्विकर्षप्रमितान्नाह्यः सिताकर्षं तथा क्षिपेत्॥
सायंप्रातः पिबेदेवं शुचिः सप्तदिनावधि।
रक्तार्शःसंजयेच्छीघ्रं संदेहश्चात्र माकुरु॥ २ ॥ (दत्त)

अर्थ—करेले के पत्ते या फलों का रस २ तो० निकालकर १ तो० मिश्री ऊपर से डालकर सुबह शाम पवित्रता पूर्वक सात दिन पिये तो खूनी बवासीर शीघ्र दूर हो, इसमें सन्देह न करिये ।

भग्नरोगे ।

भल्लीकाफलपञ्चकं सुविमलं त्वाज्ये पले संपचेत् ।
धूमान्ते त्वपहायभर्जित फलं गोधूमचूर्णं पलम् ॥
तस्मिन्नेवघृते विभर्ज्य सकलं तुल्यं गुडंनिःक्षिपेत् ।
संवायं विधिनाविधाय भिषजो भग्नेददेयुः सदा ॥
भग्नास्थिसंधानकरः प्रयोगो नानाविधे भग्नगदे प्रशस्तः ।
सप्ताहतोयःपिडिकोद्गमश्चेत् तक्रंविलेप्यं महिषोद्भवंहि ॥

अर्थ—उत्तम पके हुये ५ भिलावों की टोपियां काट कर ४ तोला घृत में डालकर तबतक भूने कि धुवां निकलना बन्द हो जाय बाद को भिलावे निकाल डाले और उसी घृत में ४ तो० गेहूँ के आटे को भून लें और ४ तो० गुड़ डालकर हलवा पकाकर चोट लगे हुये मनुष्य को खिला दिया करें यह योग सब प्रकार की पीड़ा नाश करने में अत्यन्त प्रसिद्ध है । यदि निरन्तर किसी को (भारी चोट लगने वाले को) यह सात दिन खिलाया जाने पर छोटी २ फुन्सियां बदन पर निकल आवें तो भैंस का मट्ठा शरीर पर मलकर थोड़ी देर धूप में बैठे ऐसा करके से ३ दिन में समस्त फुन्सियां नष्ट होजाती हैं ।

वायुरोगाधिकार

वातपन्नग वटी

अर्द्धं प्रस्थंयवान्याः कनकफलमपि प्रस्थमात्रं गृहीत्वा ।
श्लक्ष्णं संचूर्ण्यपात्रे परित उपनिधायार्द्धं मेवं च शुण्ठ्याः ॥
अर्द्धप्रस्थं निदध्यात्तदुपरित विनिः क्षिप्यशेषं विपाच्यः ।
सप्तप्रस्थाम्भसाग्नौ तदनुकर्पूरपूर्णपेषयेत्स्वच्छखल्वे ॥
वारत्रयं शिग्रुरसेनभाव्यं गुञ्जैकमानावटिका विधेया ।
मन्दाग्निवातामयचामवाते दद्यात्कवाष्णेन जलेन बंधः ॥

अर्थ—अजवायन आधसेर धतूरे के फल एकसेर को कूट ले आधानीचे बिछादे ऊपर से आध सेर पानी डाल कर अग्निपर रख कर पकावे जब पानी जल जाय तब उतार कर केवल सोंठ के टुकड़े निकाल ले और खरल में पीसे इसमें तीन भावना सेजने की छाल के अर्क को देकर चने के प्रमाण गोली बनाले मन्दाग्नि वात रोग गठिया आदि रोगों में गरम जल से देना चाहिये।

वातपीड़ायाम् लेप:

कौशेयभस्माम्बुधिफेनलाक्षा कृतोपनाहः जयति क्षणेन।
नानाविधोत्थाश्च समीरपीड़ां यथैव रामा रमणास्वलज्जाम्॥

अर्थ—जिस प्रकार स्त्री अपने पति से लज्जा को छोड़ देती है उसी प्रकार रेशम की भस्म, समुद्रफेन और लाक्षा का बनाया हुआ और पानी में पीसकर किया हुआ गरमा गरम लेप करने से वात की पीड़ा हटजाती है।

अद्भुत तैल

हेमक्षीर्याश्च पञ्चाङ्ग त्रिंशत्कर्षमितं बुधः।
संचूर्ण्यपुष्टवस्त्रे तत्तद्योग्ये विकिरेत्ततः॥ १॥
दृढलौहशलाकाग्रे युक्त्या वस्त्रञ्च वेष्टयेत्।
कटुतैलान्वितं कृत्वा वह्नौप्रज्वालयेत्ततः॥ २॥
तैलंपतेदधः पात्रे चैवं युक्त्वा निधापयेत्।
बिन्दुशोहरितंतैलं ग्राह्यमद्भुत नामकम्॥ ३॥
मर्दनान्मांसपेशीषु स्फूर्तिसञ्जनयेत्पराम्।
सन्धिशूलादि कान्शूलान हन्ति दुर्व्रण सम्भवान्॥ ४॥
(वृत्त)

अर्थ—सत्यानाशी के पाँचों अंग लेकर कूटकर ३० तोला एक गज लम्बा एक बालिस्त चौड़ा मजबूत कपड़ा लेवे और उस पर चूर्ण फैला दिया जाय तदुपरांत उस कपड़े को मजबूत और लम्बी लोह की सलाई (कील) के अग्र भाग पर लपेट कर सरसोंके तेल में

डुबा देवे फिर निकाल कर आग जला दे और एक अच्छा प्याला नीचे रखदे कि बूंद २ होकर तैल उसमें टपकता रहे इस तैल का रंग हरियाली लिये हुये होगा इस तैल का नाम "अद्भुत तैल" है मर्दन करने से सुस्त मांसपेशियों में फुर्ती आती है, जोड़ों का दर्द तथा हर प्रकार के शूल में लाभदायक है, घाव अच्छा होजाने पर शेष दर्द को नष्ट करता है।

शूलहरोयोगः

मृत्पात्रेविनिधाय कुट्टितमृगंश्रङ्गन्ततस्त्र्यूषणं।
चूर्णंस्थापय सर्वतस्तदनु भोः कन्यारसम्पूरय॥
पात्रेणापहितंमुखं कुरुततो दग्धं महासंपुटे।
माषार्द्धन्तु घृतेन लीढ मचिराच्छूलं समूलं हरेत्॥

अर्थ—मिट्टी के पात्र में कूटे हुये हरिणश्रृंग को रख उस पर त्रिकुट चूर्ण रक्खो पुनः सब ओर से कुमारी रस भरदो। दूसरे पात्र से घड़े के मुख को ढक दो, फिर महासम्पुट में भस्म करदो। इसे घृत से आधा माशा खाने से यह बहुत शीघ्र शूल को समूल नाश करता है।

पक्षाघात नाशक योगः

शुद्धंतु शम्भु वीजं स्याज्जेपालं शुद्धमेव च।
अशुद्धं गन्धकं मल्लं तालं गोदन्ति संज्ञकम्॥ १॥
द्वितीयं पत्रतालं तु हिंगुलं रस चन्द्रकम्।
शिवकंठस्य श्रृगारं वीजं त्रुत्यद्भव पुनः॥ २॥
प्रशस्तां च तुगाक्षीरीं विडंगं चापि जीर्णकम्।
प्रथगेतानि सर्वाणि कर्षकर्षमितानि च॥ ३॥
गृहीत्वा चूर्णकं कृत्वा सार्द्धप्रस्थं तु नीरकम्।
पलाष्टकंप्रमाणं च भृङ्गराज रसं नवम्॥ ४॥
सर्वंकटाहे निक्षिप्य लोहजे निर्मले दृढे।
पश्चान्निवेशयेच्चुल्ल्यां वह्निं प्रज्वाल्य कोमलम्॥ ५॥

अवलेह समं पाकं कृत्वोत्तार्य्य च तत्पुनः ।
क्षिप्त्वा खल्वे दृढे कुर्यान्मर्दनं त्रिदिनंभिषक् ॥ ६ ॥
वटींमुद्गनिभां कृत्वा वारिणाद्वे प्रदापयेत् ।
सायं प्रातः सुमतिमान् कुशलो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७ ॥
गव्यं द्विघटिके पश्चात् घृतं द्वयञ्च मितंशुभम् ।
अनुपाने प्रयोक्तव्य मेषयोगवरो जयेत् ॥ ८ ॥
पक्षाघातं नवीनं च शीघ्रं फलप्रकाशक: ।
वातातंकानपि त्वन्यान्हन्यादेष न संशय: ॥ ६ ॥

अर्थ—शुद्धपारा, जमालगोटा शुद्ध, अशुद्ध गंधक आमलासार, अशुद्ध संखिया, अशुद्ध हरताल, अशुद्ध हरतालवर्की, अशुद्ध हिंगुल, अशुद्ध रसकपूर, अशुद्ध सिंगिया, इलायचीबीज, बंशलोचन, पुरानी वायबिडंग प्रत्येक १-१ तोला का महीन चूर्ण कर एक सेर जल आधा सेर भांगरे का रस एक कढ़ाई में डालकर पकावे जब कुछ गाढ़ा होने लगे उसी में उपर्युक्त दवायें डालकर उतारले और तीन दिन तक मर्दन कर मूंगके समान गोलियां बनालें। २-२ गोली प्रातः सायं जल से दे, १ घंटे बाद २ तोला गोघृत पिलादे इस योग से पक्षाघात और वायुरोग शीघ्र दूर होजाते हैं।

कास

कुंकुमाद्यवलेह

कुंकुमं जाति कोषं च पुष्पं शतदलोद्भवम् ।
लवंगं च पृथक्चैतॉ त्रीन्हि माषांश्च कारयेत् ॥ १ ॥
एलाबीजं च तुमोषं नागिन्या: पर्णकानि च ।
पक्वानि रसयुक्तानि त्रिंशदर्धमितानि च ॥ २ ॥
शालूकस्य फलं चैकं गृहीत्वेमानि वैद्यराट् ।
कुंकमेन बिना चैषां क्वाथं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ३ ॥
सपाद प्रस्थे नीरे तु द्वयञ्जलिंचावशेषयेत् ।
पश्चात्पटे तु संस्राव्य खंडां च कुडवोन्मिताम् ॥ ४ ॥

प्रक्षिप्यपूर्वजे क्वाथे कृशानौ तं निधापयेत्।
एकीभूतं च तं कृत्वा प्रोत्तार्य स्थापयेत्पृथक् ॥ ५ ॥
विलोड्य कुंकुमं सम्यक्सुमनार्के मनोहरम्।
संक्षिप्य क्वाथे तं क्वाथं कूपिकायां निधापयेत् ॥ ६ ॥
कासागमेषु कर्ष कं भिषग्दद्यात्पुनः पुनः।
पंच कासाक्षयेदेष शीघ्रप्रत्ययकारकः ॥ ७ ॥

अर्थ—केसर, जावित्री, गुलाबपुष्प, लौंग प्रत्येक ३-३ माशा, इलायचीबीज ४ माशा, पके हुये पान १५ नग, जायफल १ नग, केसर को छोड़ समस्त वस्तुओं को महीन पीस कर सवासेर पानीके साथ पकावे। चौथाई शेष रहने पर मलकर छानलें इसमें १ पाव मिश्री मिला शर्बत की चाशनी बनालें उसमें १ दिन तक जल के साथ घोटी हुई केशर को मिला शीशी में भरलें। खांसी आने पर १-१ तो० यह शर्बत पीने को देने से सब प्रकार की खांसी दूर होती है।

श्वित्रकुष्ट स्यानुपमोयोगः

पलानि पंच बाकुच्या नूतनां दाहकस्य च।
मूलत्वचं शुक्तिमानां द्वयोः कुर्यात्तु चोदकम् ॥
जातं श्वित्रहरं योगं कूपिकायां निधापयेत्।
भक्षणे तच्चतुर्माषं वारिणा सहदापयेत् ॥ २ ॥
उभयोः सन्ध्ययोर्नित्यं श्वित्रिणः शुभदं भिषक्।
तदेव सजलं चूर्णं खल्वे पाषाण के दृढे ॥ ३ ॥
कज्जलाभन्तु संमर्द्य प्रलिप्त्वा मंडलोपरि।
घर्मेवसेत्पुनः श्वित्रीयावद्रोगेषु चोष्णता ॥ ४ ॥
इत्थंश्वित्रहरंयोगं कुर्यान्नित्यमतंद्रितः।
बुधोगुणप्रकर्षाय पथ्यं शास्त्रोक्त माचरेत् ॥ ५ ॥ (शिव)

अर्थ—बाबची बीज २० तो०, नवीन चित्रक की जड़ की छाल २ तो० लेकर चूर्ण बनालें और उसे कांच की शीशी में भर कर रख दें। श्वित्रकुष्ट वाले को चार मासा सुबह और चार मासा शाम को जल

के साथ खाने को देवे और यही चूर्ण श्वित्रकुष्ठ के मंडलों पर जल के साथ अत्यन्त बारीक जितना हो सके उतना घोटकर लेप लगाकर सूर्य के घाम में जब तक मंडल वाले अंग गर्म न हो जांय, तब तक बैठे। इसी विधि को आलस्य रहित होकर नित्य करे तो इस योग के सेवन से सफेद कुष्ठ का नाश होता है। पथ्य आयुर्वेद शास्त्रानुसार करे। तैलादिक का सेवन न करे।

आघात पीड़ाहरो योगः

हरिद्राम्पलांडुं सुसूक्ष्मं विपेष्य कटुष्णं कटुस्नेहमिश्रं विधाय।
दुराघातसंजातपीड़ास्यसेकात्सशोथा सदुष्टास्रका शान्तिमेति॥

अर्थ—हल्दी, प्याज को सूक्ष्म पीसकर कडुवा तैल सहित कर, कुछ २ गरम करलें। इसके सेक से कठिन आघात से उत्पन्न पीड़ा, शोथ जो दूषित जमे रुधिर के सहित हो शांत हो जाता है।

पामाकुष्ठे

मनःशिला गंधक सिन्दुराणि, बीजंतु शम्भोः शितजीरकं च।
तथा हरिद्रां मरिचं च दार्वी, कृष्णश्च जीरः पृथगर्धकर्षं॥
चूर्णानि चत्वारि विहाय शेषं, कुर्वीत सूक्ष्मं खलु वस्त्रपूतम्।
ततो शिलादीन शनैः शनैश्च, विमर्दनीयं द्विपले घृते च॥
प्रातरेष प्रयोक्तव्यं पामापीड़ित रोगिणः।
अष्टचत्यन्तरं कुर्य्यात् स्नानंतत्र विचक्षणः॥
कोमलविरेचनं पूर्वं कार्य्यं रोगनिवृत्तये।
वातकारीणि वस्तूनि सकलानि परित्यजेत्॥

(शरण)

अर्थ—मनसल, गन्धक, सिंदुर, पारद, सफेद जीरा, हल्दी, मरिच, दारुहल्दी, कालाजीरा प्रत्येक ३-६ माशा। प्रथम की चारों वस्तुओं को छोड़, शेष वस्तुओं को महीन पीस छान ले। फिर पारा गन्धक की कज्जली बना क्रमशः मनशिल आदि डालते जांय और घोंटते जांय, बाद को आधा पाव घृत मिला घोंटे, प्रातःकाल खाज वाले

रोगी के शरीर पर मालिश करावे। बाद को ३ घन्टे बाद गरम जल से स्नान करावें। दवा सेवन से पूर्व जुलाब देना उत्तम होगा। वातकारक वस्तुओं से परहेज करें।

रक्तशोधकार्क:

भूनिम्बंचामृतेनंतामञ्जिष्ठा चोपचीनतः।
कायस्थापर्पटौ निम्बं शरपुंखा कुचन्दनं॥
सेवन्तिकमुशीरञ्च श्यामोन्नावपरुषकान्।
चतुष्पलन्तु प्रत्येकं त्रिफलातो द्वादशं पलम्॥
चत्वारिंशत्पलंमुण्डयः संक्षिप्य द्विगुणे जले।
त्रिदिनान्तेनयेदर्कं वारुणीयंत्रयोगतः॥
द्विद्विकर्षं ददेत् धीमान् दत्वाकर्षं च माक्षिकम्।
रक्तदोषहरं प्रोक्तं सेव्यं कृत्वा विरेचनम्॥

अर्थ—चिरायता, गिलोय, जवासा मूल, मजीठ, चोपचीनी, हर्रा, पित्तपापरा, नीबपञ्चांग, शरफोंखा, रक्तचन्दन, गुलाब के फूल, खस, अनन्तमूल, (उधवा) उन्नाव, फालसा छाल, प्रत्येक पाव २ भर त्रिफला ३ पाव, मुण्डी ८२॥ सेर, को कूटकर दवाइयों से दुगुने पानी में भिगोकर तीन दिन भीगने दे, बाद को वारुणी यन्त्र द्वारा अर्क निकाल लें, यह अर्क सब प्रकार के बिगड़े हुये रक्त को साफ करता है। इसकी मात्रा २–२ तोला है, इसमें १–१ तोला उत्तम शहद मिलाकर प्रातः सायं पीना। अर्क पीने से प्रथम जुलाब लेना अत्युत्तम है।

शीतपित्तापहारी योगः

गुडंघृतञ्चञ्च सुकर्षमानं निधाय कांसस्य सुभाजनेवै।
विपाच्य शय्यामधिरुह्य भुक्त्वाशयीत वस्त्रावृत सर्वगात्रः॥
प्रस्वेदपूर्वः खलु शीतपित्तरोगः शमेत प्रबलोऽपिवास्यात्।
वाताम्बुनात्मानमभिप्ररक्षेत्सद्यः सुखी दृष्टफलप्रभावः॥

अर्थ—गुड़ ५ तो०, घृत ५ तो०, कांसे के स्वच्छ पात्र में रख अग्नि में पकाकर बिस्तरे पर बैठ, खाकर, कपड़े से सब शरीर को

ढककर सो जावे पहिले पसीना आकर प्रबल भी शीतपित्तरोग शांत हो जाता है शीघ्र इस फल प्रभाव को देखा सुखी होता है अपने आप को वायु जल से बचाता रहे ।

उपदंशरोगाधिकारः

तालं मल्लमये सखे कुरुसमं शुद्धञ्च सम्भावय ।
वृश्चीरार्कसहासुवर्णपयसीजातै रसैर्माषकम् ॥
सप्ताहं तरुणीरसैस्तदपिहो मद्यैस्तथामाषकम् ।
धृत्वादीपमधस्ततश्च डमरूयन्त्रोत्थसत्वं नयेत् ।
वल्लाष्टमाशांपरिकल्प्यमात्रां ददीतसंयावसुनावनीतैः ।
सप्ताहतो याति फिरङ्गरोगो दृष्ट्वा यथावैनकुलंभुजंगः ॥
भुक्त्वाभेषजकं पिबेदनुघृतं कोष्णं द्विकर्षोन्मितम् ।
शोथघ्नीपिचुमर्दभांडकवराकूष्मांडच्छिन्नोद्भवा ॥
जिह्वाशल्य करञ्जपाचितजलं पानेप्रयोज्यंसदा ।
पेयं कूपजलं परन्तुलवणं तैलं तथाम्लं त्यजेत् ॥

अर्थ—शुद्धवर्की हरताल, शुद्ध सफेद संखिया, समभाग लेकर पुनर्नवा, आक, कुमारी, सत्यानासी, के रस में १–१ मास खरल करना इसके बाद सात दिन दन्तीमूलरस की और एक मास नं० १ की शराब में घोट डमरूयन्त्र द्वारा नीचे दीपाग्नि जला सत्व उड़ालें । हलवा या नवनीत में लपेटकर इस औषधि को निगल जाया करें इसकी मात्रा $\frac{1}{8}$ रत्ती है यानी एक रत्तीका आठवां हिस्सा । ७ दिन में इस प्रयोग से आतशक दूर होती है । दवा खाने के बाद २ तोला गरम घृत पाना भोजन के समय सिर्फ कूप का पानी दें बाद को पुनर्नवा, नीमछाल, मजीठ, त्रिफला; कूष्मांड, गुर्च, खदिर; करञ्ज का क्वाथ पिलाना तैल खटाई लवण से परहेज करना ।

उपदंशे

खठबाजिबाजं खतमीसुगंधे कर्षैकमानेन च काकमाचीम् ।
सेवन्तिकंदं द्विगुणञ्च द्राक्षां प्रस्थाम्भिते वारिणि पाचयेत्तत् ॥

कृत्वाकषायं पिवतः प्रभाते देहांत संस्थं मलमेति शुद्धिम् ।
एवं हि सेव्यं नववासराणि तथाश्ववर्म्मा दिवसानि पञ्च ॥
निकुम्भ बीजं त्रिफलाश्च तालं दैत्यारिवयोषे विषपारदौ च ।
दत्वैलवालु दिवसे विमर्द्य भृङ्गाम्बुना वै वटिका विधेयाः ॥
गुञ्जोपमां शर्करया समेताम् कल्ये प्रभुञ्जीत कवोष्णवारि ।
मल्लं विशुद्धं वटकप्रमाणं तद्भागयुग्मं खदिरं ददीत ॥
ताम्बूलवल्लीशतपर्ण तोयैः संमर्द्यवतिश्च सुसर्षपाभां ।
सायं प्रभाते वटिकाः प्रदेयाः सप्ताहमात्रं खलुशीततोयैः ॥

अर्थ—उपदंश रोगमें प्रथम नौ दिनतक मुञ्जिस पिलाना। मुञ्जिस का योग्य यह है—खब्बाजोबीज, खतमीबीज, सोंफ, मकोयबीज १–१ तो०, दाख २ तो०, सेवतीकंद २ तो०, एक सेर पानीमें रात्रि को कूट कर भिगो दे सुबह काढ़ा करे जब आधा पानी जल जाव तब उतार छानकर पीले इसी प्रकार ९ दिन पीने से समस्त शरीर का दूषित मल शुद्ध हो जाता है। फिर वाजिवर्मा रसकी ५ दिन १–१ वटी गरम जल से प्रातःकाल खाना १ तो० शक्कर के साथ। योग बाजिवर्मा का यह है—शुद्ध जमालगोटा, हर्रा, बहेरा, आमला, शुद्ध हरतालबर्की, शुद्ध आमलासारगंधक, सोंठ, मिर्च, पीपल, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध पारद, एलुवा प्रत्येक १–१ तोला को महीन पीस घमरे के रस में १–१ गुञ्जा के समान वटी बना काम में लाना बाद को ७ दिन सोमल वटी की १–१ गोली ठंडे पानी से प्रातः सायं दोनों समय सेवन करे इस प्रकार २१ दिन में उपदंश निश्चय दूर होता है। सोमलवटी का योग यह है शुद्ध संखिया १ तो०, पापरीकत्था २ तो०, को १०० बंगलापान के रस में खरल कर सरसों के समान वटी बना काम में लाना।

उपदंश हरोयोग:

गवादनीनां तु बृहत् फलेभ्यः रसं समाकृष्य च शोषणीयम्।
प्रातः प्रदत्तः कुरुते विरेकं वमिं ततो हन्ति फिरङ्गरोगम ॥

सेव्यः सप्ताह पर्य्यन्तमाषकस्य प्रमाणतः।
अनुष्णीकृत दुग्धेन पथ्ये च घृतरोटिकाः॥ (शारण)

अर्थ—इन्द्रायण के फलों का रस निकाल कर धूप में सुखा ले। १-१ माशा की मात्रा से प्रातःकाल कच्चे दुग्ध से दे। दस्त, वमन खूब होंगे। १ सप्ताह देने से रोग दूर होगा। पथ्य में रोटी घृत से खावें नमक नहीं खाना।

त्रिमाषं रसकर्पूरं मरिचं सप्तमाषकम्।
दशमाषं चणकानि लवङ्गान्येकविंशतिः॥
विचूर्ण्य सर्व द्रव्याणि वट्यः कुर्य्याद्द्वादश।
सायं प्रातश्च सेव्याहि वट्येका वारिणा सह॥
उपदंशं निहन्त्युग्रं न कार्य्यात्र विचारणा। (शारण)

अर्थ—रसकपूर ३ मा०, मिर्च ७ मा०, भुने हुये चनोंकी दिवली १० मा०, लौंग २१ नग, इनको पीसकर १२ गोलियां बना ले। १-१ गोली प्रातः सायं जल से निगल जावे इस प्रकार २६ दिन में उपदंश दूर होता है। मुर्दासंग, रसकपूर, कत्था ६-६ माशे का चूर्ण बना घावों पर बुरक देना चाहिये।

उपदंशनाशन योगः

स्वर्णक्षीर्या स्तुपञ्चांगस्वरसः कर्षसम्मितः।
कुडवं गोपयोयुक्तः पीतः पक्षम्प्रगे प्रगे॥
मरिचं सप्त तन्मूलत्वङ्माषप्रमिताथवा।
उभौसम्पेष्य भुक्त्वान्ते गोपयः प्रपिबेन्नरः॥
वमनं रेचनं स्यातामुपदंशोविनश्यति।
आमवातोऽपिनष्टः स्यात्पथ्यन्दुग्धौदनं स्मृतम्॥

अर्थ—सत्यानाशी के पञ्चांग का १ तो० स्वरस पाव भर गो दुग्ध से १५ दिन तक प्रातः २ पीने से उपदंश नष्ट होता है। अथवा ७ काली मिर्च व सत्यानाशी की जड़ की छाल १ माशा दोनों को

बारीक पीसकर खाकर बाद गोदुग्ध पीवे। इससे खूब वमन व विरेचन होंगे व उपदंश नष्ट होगा। तथा इससे आमवात गठिया भी नष्ट होता है। पथ्य—दूध चावल है, नमक, खटाई त्यागे।

उपदंशे

म्लेच्छः सूतश्चन्द्रसंज्ञश्चगौरी पाषाणं स्युर्दारुस्निग्धं विषञ्च।
एतत्सर्वं शोधयित्वापरस्तात्तावन्मर्द्यं शुष्कतामेतुयावत्॥
शुद्धेनैवंकुब्जकार्केण सम्यक् पश्चान्मर्द्यं मेलयेद् ब्रांडि संज्ञं।
तस्मिन्मर्द्ये शुष्कभावं प्रयाते चक्री कृत्वायन्त्रमध्ये विपाच्यम्॥
वह्निर्देयोऽङ्गुष्ठमात्रोह्यधस्ताच्चुल्ह्याः पश्चात् स्वांगशीतश्चग्राह्यम्।
ऊर्ध्वंलग्नं सावधानेनसत्वं कूप्यां क्षिप्त्वा तस्य मात्रां वदामि॥
प्राणाचार्यो योजयेच्चोपदंशे दुःसाध्येचैतण्डुलार्द्ध प्रमाणम्।
गोस्तन्यन्तर्भाग आधाय सत्वं रुग्णो दन्तैरस्पृशन्नेव खादेत॥
उपद्रवाणां शान्त्यर्थं वक्ष्यमाणं हिमम्पिवेत।

अर्थ—शिगरफ, सुंवलखार, रसकाफूर, दारचिकना ये समान भाग शुद्ध करके लेवे, पश्चात् अतिसाफ अव्वल गुलाब के अर्क में मर्दन करे, सूखने पर उत्तम सुरा Brandy की १ बोतल से मर्दन करे सूखने पर टिकियां बना धूप में सुखावे। तदनन्तर डमरूयन्त्र में चूल्ही पर चढ़ावे, चूल्हे के नीचे अंगूठे के बराबर अग्नि जलावे ४ पहर पर्य्यंत स्वतः शीत होने पर यंत्र को उतार ले, और हल्के हाथ से ऊपर लगे सत्व को सावधानी से ग्रहण कर कूपी में भरकर डाट लगा देवे। प्रयोग विधिज्ञ प्राणाचार्य इसकी मात्रा १ चावल भर असाध्य उपदंश (गरमी) वाले को मुनक्के में रखकर इस प्रकार खिलावे कि औषधि दांतों से न लगने पावे अर्थात् उसे निगल जावे, और साथ ही निम्ननिर्दिष्ट औषधियों का हिम बनाकर प्रातः पिये। इससे तज्जन्य उपद्रव तुरन्त शान्त हो जाते हैं।

मुण्डीं ध्रुवजटां पथ्यां धात्रीं वैरंगपत्रिकाम् ।
पिचुमन्दस्यकुसुमं चूर्णं शिशपसम्भवम् ॥ १ ॥
समांशंपारगृह्यतद्धिमं निर्माय शास्त्रवित् ।
शास्त्रायेणैवविधिना योग्यां मात्रां तु पाययेत् ॥ २ ॥ (मन)

अर्थ—गोरखमुण्डी, उश्वा, हर, आंवला, मेंहदी, नीम के फूल, शीशमछाल चूर्ण ये सम भाग लेकर शास्त्र विधि से हिम बना लेवे और रोगावस्था बलाबल विचार पूर्वक देवे ।

शुद्धंगन्धंटकणञ्चापिशुद्धं तद्वत् सूतं त्रिवृताञ्चापि वैद्यः ।
दन्तीबीजं पाणिपत्रस्यबीजं कृष्णायुक्तं सर्वमादाय शुद्धम् ॥ १ ॥
स्यादेलायुक् पथ्ययायुक् च कार्यं खल्वेक्षिप्त्वापेषयेत्तच्चसम्यक् ।
तोलार्धंस्याद्द्रव्यमाद्यत्रयंतु कृष्णान्तश्चत्रिवृताद्यं द्वितोलम् ॥२॥
एलाप्रोक्ताटंक मात्रातथैव कर्षोस्यातामभृतायाः प्रमाणम् ।
उक्तं द्रव्यं सर्वमापेष्यतावद्यावच्चस्यान्मोदकार्हं समीक्ष्य ॥ ३ ॥
कार्य्यावटीतस्य चणप्रमाणा योग्याथवातस्य भिषग्वरेण ।
दुष्टोपदंशाकुलिताय दद्यात् प्रातश्चशीताम्बुततः प्रयच्छेत् ॥ ४ ॥
विरेचयेच्चापिवटी प्रयुक्ता पथ्यञ्च शाल्यन्नमयं निराज्यम् ।
यदा विरेकोन भवेत्तदैव विरेचयेत्कछत्रजलेन वैद्यः ॥ ५ ॥
विरेकान्तेत्वहोभिः स्यात्त्रिभीरोगातुरः पुमान् ।
श्यामाककृषरान्नादीन् पूर्वं रेकात्क्रियां शृणुः ॥ ६ ॥
त्र्यहंप्रागौषधादानाल्लघ्वन्नप्रतिभोजितः ।
कृत्वादिवान्तरारोगीनिषेवेतौषधं किल ॥ ७ ॥
गोजिह्वापञ्चमाषास्या द्रशाखतम्यर्धं कर्षिका ।
सिताचतुर्गुणाग्राह्या सर्वमेकत्रकारयेत् ॥ ८ ॥
संचूर्ण्यं खल्वयेद्यावत् वारिणा मृदुतां लभेत ।
नीरं चतुर्गुणंकल्कात् सिद्धं तस्यानुपाययेत ॥६॥
एवं समाहतो रोगी रोगादस्मात् प्रमुच्यते । (मन)

अर्थ—शुद्ध गन्धक, सुहागा पारा इनको आधा २ तोला लेवे । त्रिवृता (निशोथ) दन्ती बीज, एरण्डबीज, और पिप्पली ये

दवायें १–२ तोला लेवे परन्तु शुद्ध कर लेवे। इलायची के बीज टंक (४ मा०) प्रमाण गिलोय २ तो० इन सब द्रव्यों को इकट्ठा करके तब तक पीसे जब तक गोला बनने योग्य न हो (पीसना जलादि द्रव पदार्थों से होना चाहिये) अनन्तर चने के प्रमाण बटी कर लेवे अथवा वैद्य को योग्य मात्रानुसार बना लेनी चाहिये।

इस बटी को प्रातः खाकर ऊपर से ठंडा जल पिये इससे उपदंश (आतशक चांदी) रोगी को दस्त भी साफ आता है इस पर पथ्य शालिचावलों का देवे और घृतयुक्त द्रव्य सेवन करे।

जिस दिन दस्त न आवे उस दिन सौंफके अर्क से जुलाब दिलावे दस्त लेने के २ दिन बाद रोगी को औषधि देवे। पथ्य–श्यामाक (समा) बना आदि देवे। औषधि देने से ३ दिन पहिले जुलाब लेने से हलका भोजन रोगी को खिलावे।

औषधि सेवन में १ दिन बीच में देकर खावे और यह अनुपान रोगी को औषधि के साथ देवे।

गाजवां ५ मा०, रेशा खतमी आधा तो०, खाड़ चौगुनी सबको कूटकर चटनी पर्यन्त पानी से खरल करे और पानी कल्क से चौगुना लेना १ सप्ताह सेवन से उक्त रोग से सर्वदा के लिये मुक्त हो जाता है।

दद्रुपामाधिकारः

दद्रुहरयोगः

सौभाग्यरालापुरगंधकानाम् जम्बम्भसाया गुडिका कृताहि।
लेपाज्जलेनस्यति दद्रुबिम्बो राहोः प्रवेशादिव चंद्रबिम्बः॥

अर्थ—सुहागा, राल, गूगल, आमलासार गन्धक, इन चारों पदार्थों की नीबू के रस में गोलियाँ बना सुखा ले इन गोलियों को पानी में पीस दद्रु मण्डल पर लेप करने से इस प्रकार दाद मण्डल नष्ट होता है जैसे राहु के प्रवेश से चंद्रमण्डल नष्ट होता है।

कण्डूतिनाशक योगः

नृसारं रसं बाकुचीन्तुत्थकञ्च भ्रगध्नं मरीचं समं गन्धकञ्च ।
शताधौतगव्यं घृतं मेलयित्वा प्रलेप्यातपं सेवयित्वा निमज्जेत् ॥
पथ्यं घृतं स्याच्चणकोद्भवञ्च प्रातः पिबेद्गव्यघृतं मरीचं ।
स्तोकैः रहोभिः परिशुद्धगात्रः कण्डूतिरुग्राऽपशांतिमेति ॥

अर्थ—नवसादर, पारद, बाकुची, नीलाथोथा, मुरदासंग, मिर्च स्याह, गन्धक समभाग लेकर शतधौत गौ घृत में मिला लेप करे, और पसीना आने तक धूप में बैठे रहें, बाद में नीम साबुन लगा गर्म जल से स्नान कर डालें । पथ्य—बेसनी रोटी व घृत । प्रातःकाल ११ कालीमिर्च को पीस, गौ घृत में पान करें । इससे खुजली दूर होगी ।

दद्रु मलहर

स्यादेसिड् क्राइसोफेनिकसार्द्धकर्षं प्रमाणतः ।
तथा पामेडवेस्लिन्याःसार्द्धकर्षंद्वयोन्मितम् ॥
वेस्लिन्यलो च कुडव स्त्रीण्येतानि विघर्षयेत् ।
प्रलेप्योपरि दद्रूणां करेणोन्मर्दयेद्भृशम् ॥
मलघ्नीवटिकाभिश्च मार्जयेत्करपल्लवौ ॥
प्रथमाह्वेव जायन्ते दद्रु कण्डूतयः शमम् ।
सप्ताहान्नवदद्रुश्च त्रिसप्ताहा त्पुरातनः ।
प्रत्यहः सेवमानस्य विनश्यत्येव न मृषा ॥ ४ ॥ (कोशल)

अर्थ—एसिडक्रायसोफेनिक (Acid Crysophanic) १॥ तो०, पामेड वेस्लीन (Pomade Vasaline) ३॥ तो०, वेस्लीन यलो (Vasalin Yellow) १ पाव, इन तीनों को खूब खरल में घोंटे, तथा दाद पर लेप कर हाथ से खूब मसले । पीछे हाथों को साबुन से धो डाले इससे पहिले ही दिन दाद की खाज शांत हो जाती है । नये दाद सात दिन में, पुराने २१ दिन में प्रतिदिन सेवन करने वाले पुरुष के मूल से ही नष्ट हो जाते हैं, यह बात मिथ्या नहीं है ।

दद्रुहर लेपः

बारिणा टंकणः पिष्टः पञ्चवारं प्रलेपयेत् ।
त्रिदिनान्नाशयेद्दद्रु दारुणं प्रतिवासरे ॥ १ ॥ (राम)

अर्थ—कच्चा सुहागा पानी में पीसकर प्रतिदिन पांच बार लेप करने से तीन दिन में भयंकर दाद भी अवश्य नष्ट हो जाती है।

वर्षाजन्य दद्रौ

पूर्वं जले पेषय सोमसारम् कुर्य्यात्प्रलेपं दिवसे त्रिवारम् ।
शुष्के च शस्तस्तिलतैललेपः सिद्धोऽस्ति दद्रुहर योगराजः ॥
(राम)

अर्थ—आवश्यकतानुसार पपरिया कत्था को पानी में पीसकर दाद के ऊपर १ अंगुल मोटा लेप दिन में ३ बार करे। एक लेप के सूखने पर दूसरा लेप करना चाहिये।" लेप सूखने पर तिल का तैल लगा देवे तो दाद इस सिद्ध योग से अवश्य नष्ट हो।

दद्रु मात्रे

तुत्थं गन्धं शोरकञ्चापि तुल्यं ग्राह्यं वैद्यैष्टङ्कणन्तन्मितञ्च ।
पिष्ट्वासूक्ष्मं सर्वमेतत्ततस्तु घृष्ट्वाकिंचित्प्रस्तरेचातिस्निग्धे ॥१॥
लेपःकार्य्योदद्रु देशेऽस्यसम्यक्द्वित्रिर्वास्याद्दद्रुकुष्ठात्प्रमुक्तः । (मन)

अर्थ—तूतिया, गन्धक, शोरा, सुहागा ये समान भाग लेकर कूट पीसकर बहुत चिकने पत्थर पर बारीक खरल कर ले, दाद के स्थान पर लेप २ या ३ बार करने से दाद से छूट जाता है।

अन्यच्च

गन्धस्फटी टङ्कणकश्चरालं कर्षोन्मितं माषमितञ्चतालम् ।
कर्पूरकं माषमितं सुवैद्यः सम्पेषयेत्तैलमथो गृहाण ॥ १ ॥
मृत् सम्भवंतत् परिमथ्यपाणिना प्रलेपयेद्दद्रु भुवं प्रदेशम् ।
विमर्दयेद् द्वादशवर्षजातं दद्रुघ्नलेपस्तु कियद्दिनेन ॥ २ ॥ (मन)

अर्थ—गंधक, फिटकरी, सुहागा रालमग़रबी ये सब तोला २ भर लेवे हरताल तबकिया १ मा० कपूर १ मा० इनको पीस डाले, बाद में

मिट्टी का तेल लेकर उसमें मिलाकर हाथ से फेंटे अनन्तर दाद के स्थान पर इस मरहम को लगावे। इसके कुछ अरसा लगाने से १२ साल का दाद भी समूल नष्ट होजाता है।

दद्रुरोगे

चुल्हिका लवणं गंधं रालं तुत्थं तथा सिताम्।
समानेतांस्तुसंगृह्यद्रावणंचाद्वि भागकम् ॥ १ ॥
स्फटिकांच तुरीयांशां सुवर्चीमर्धभागिकाम्।
मर्दयेन्निम्बुद्रावेण वटिकाः कारयेद्भिषक् ॥ २ ॥
दद्रुस्थानेतु प्रथमं पानीय पट्टिकांन्यसेत्।
कण्डूयनार्हे सञ्जातेपट्टिकामवतारयेत् ॥ ३ ॥
ततोऽपि द्विगुणांकण्डूं जनयेत् खर्परेण च।
उत्तरंलितायां लसीकायां घृतयुक्तं प्रदेहयेत् ॥ ४ ॥
एवंद्विस्त्रिर्नरः कुर्य्यान्नून मस्मात्सुखीभवेत्।
सहस्रशोऽनुभूतोऽयं दद्रुमात्र प्रशामकः ॥ ५ ॥
धेनुवद्ध नपूर्वेण सिंहेनायं विनिर्मितः।

अर्थ—नौशादर, नमक सेंधा, गन्धक, रालमराखी, तूतिया और चीनी इनको समान भाग लेवे, और सुहागा कच्चा २ भाग तथा फिटकरी चतुर्थांश, शोरा अर्द्ध भाग। इन द्रव्यों को कूटकर निम्बु के रस में मर्दन कर गोलियां बना डाले। प्रथम दाद के स्थान पर पानी की पट्टी चढ़ा दो, पश्चात् खुजलाने पर उस पट्टी को उतार डालो और फिर ठिकड़े से उसे दूना खुजावे, जब उसमें सफेद पानी सा उठ आवे तो उक्त मरहम को निम्बु के रस के योग से उस पर लेप कर देय। इस प्रकार दो तीन बार ऐसा करने से निश्चय इससे आराम हो जाता है।

यह योग मेरा सहस्रों वार का आजमाया हुआ है कैसा भी दाद हो, शर्तिया अच्छा हो जाता है। (श्री गोबर्धनसिंह)

दद्रु मात्रे

रसस्यगन्धस्य च तुत्थकस्य रालस्य चुल्हीलवणस्यचापि ।
भागान्समांष्टङ्कणकस्य वैद्यः सम्मेलयसारस्य च खादिरस्य ॥ १ ॥
सञ्चूर्ण्यसूक्ष्मं खलुनिम्बुनाम्बुना स्निग्धायसेपूततमे सुखल्वे ।
विमर्दितां पारदभागकाम् सितांसम्मेल्य स्याद्दद्रुहरः प्रलेपः ॥ २ ॥

(मत)

अर्थ—पारा, गन्धक, तूतिया, राल, नौसादर, सुहागा, कत्था, इन सबको बारीक चूर्ण करके निम्बु के अर्क या रस से साफ़ चिकने खरल में मर्दन करे, पश्चात् पारे के समान भाग मिश्री डालकर लेप तैयार करे। इसे 'दद्रु हर' प्रलेप कहते हैं।

मूत्रकृच्छ्रे

कमलं कोकिलाक्षञ्च कुशं कासं च वीरणम् ।
बलां यवासमिक्षुं च मुञ्जं वैशंखपुष्पिकाम् ॥ १ ॥
कृत्वा चूर्णं समं तेषा मापोध्य सलिले भिषक ।
नयेदर्कन्तु यंत्रेण द्वितोलं सितयासह ॥ २ ॥
नरस्य पिवतोयान्ति मूत्राघातादयः क्षयम् ।

अर्थ—कमल, तालमखाना, कुश, कास, खस, बरियारा, जवासा ईख, मूंज, शंखाहूली इनकी समान भाग मूलों का चूर्ण कर चौगुने जलमें भिगोकर अर्क उतारले २-२ तोला यह अर्क मिश्री मिलापीने से मूत्राघातादि नष्ट होते हैं।

अन्यच्च—

कबाबचीनीरसरक्तिकाभिः स्थूला च भद्रा कलमीयसोरा ।
त्रिमासकैश्चापि विमर्दनीयं भङ्गासमं वेदपलेजलेच ॥
पटयुक्ताविधातव्या वर्तिः कर्पूरमिश्रिता ।
मेढ्रछिद्रे प्रयोक्तव्या कुर्यान्मूत्रं न संशयः ॥ २ ॥ (शरण)

अर्थ—कबाबचीनी -) भर इलायचीदाना -) भर कलमीसोरा ३ माशा को ऽ। भर पानी में भांग की तरह पीसकर पिलादे और कपूर १

को महीन पीस महीन कपड़े के योग से वर्ती बना लिंगेन्द्रिय में प्रवेश करने से शीघ्र मूत्र उतरता है।

मूत्रप्रवर्त्तकयोगौ

पलाशपुष्पं द्विगुणं सूर्यभागा तसमाहरेत्।
अम्बुपिष्टस्य संलेपो वस्त्यां मूत्रप्रवर्त्तनः ॥ १ ॥
मूत्राधारप्रणाल्यां चेत्किञ्चित्कर्पूरमुत्सृजेत्।
मूत्रावरोधनंहन्यात्सद्यो मूत्रम्प्रवर्त्तयेत् ॥ २ ॥

अर्थ—कलमीशोरा १ भाग, पलाशपुष्प २ भाग लेवे जल से पीसकर वस्तिस्थान में किया लेप मूत्र प्रवर्त्तन करता है।

मूत्राधार नाली के छिद्र में थोड़ा कपूर छोड़ देवे यह मूत्रावरोध को नाश करता है तथा शीघ्र मूत्र को प्रवृत्त करता है।

विरेचनाधिकार:

जीर्णधान्यं कर्षमितं तथैव तापसप्रिया।
त्रिमाषंशुद्ध जैपालं घृतभृष्टं तथैव च ॥ १ ॥
कुर्य्यात् मधुनावटिका संमर्द्य चणकोन्मिता।
विरेकाय ततोदद्यात् वीदयमात्रां यथोचिताम् ॥२॥
तृषायां तु प्रदातव्यं छत्राकं वा सिताम्बुवा। (चन्द्र)

अर्थ—पुराना धनियां १ तो०, सौंफ १ तो० जमालगोटा घी में भुना हुआ ३ मा० इनको पीस शहद में चने प्रमाण गोलियां बनालें। जुलाब के लिये बलाबल देख १ से ४ गोली तक दे इनसे जलन आदि नहीं होती। प्यास लगने पर शकर का शर्बत या सौंफ का अर्क देना।

विरेचक चूर्णम्

अश्ममानं क्षिपेदत्र कृष्णबीजं सुवर्चलम्।
द्विमाषं हैमपत्रीञ्चत्वैन्द्रीं संबन्तिपुष्पकम् ॥
वयस्थांपञ्चमाषञ्च कृत्वाक्षौद्रं प्रयोजयेत्।
विरेकाय प्रसिद्धो हि योगोऽयं क्रूर कोष्ठिनाम् ॥ २ ॥

अर्थ—भुना हुआ काला दाना १ तो०, कालानमक १ तो०, सनाय पत्ती २ मा०, बड़ी इलायची के बीज २ मा०, गुलाब के फूल २ मा०, हर्रा कावुली की बकली ५ मा० इनका किया हुआ चूर्ण उष्ण जल से ६ मा० मात्रा फांक कर सो रहने से प्रातः साफ दस्त होता है यह योग क्रूर कोठे वालों के लिये उत्तम रहा है।

विरेचन चूर्णम्

स्वर्णपत्र्याश्चपेद्भागं तावदेव सुवर्चलम्।
तयाद्विगुणितायोज्या कृष्णपथ्याभिषग्वरैः ॥ १ ॥
अर्द्धं तोलं विभावर्यां कोष्णवारा निषेवते।
कल्ये सञ्जायते शुद्धि मृदुकोष्ठस्य निश्चिता ॥ २ ॥

अर्थ—सनाय १ तो०, काला नमक १ तो०, काली हरीतकी ४ तो० का किया हुआ चूर्ण उष्ण जल से सोते समय ६ मा० प्रमाण खाने से मृदुकोष्ट मनुष्यों के पेट को शुद्ध करता है।

मृदुविरेचन योगः

शोधितन्दन्तिबीजंस्या न्निम्बूकाम्बुविमर्दितम्।
गुञ्जकेनापि दत्तञ्चेद्भेषजेन विरेचयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—शुद्ध जमालगोटे का निम्बू के रस से मर्दन कर जिस किसी औषधि के साथ एक रत्ती देवे तो विरेचन करावे।

रेचनयोगः

पथ्यात्वक्सम्भवंचूर्णं तन्मानं विश्वभेषजम्।
शतपुष्पाभवंचूर्णं लवणं तावदेव हि ॥ १ ॥
हेमपर्णीभवं चूर्णं वाससा गालयेद्भिषक्।
सुश्लक्ष्णं गालितं कृत्वा कूप्यां चैव निधापयेत् ॥ २ ॥
देशकालोचितात्तस्य कार्य्यामात्रा भिषग्वरः।
द्विकर्षादर्धकर्षान्तां ज्येष्ठां मात्रां विदुर्बुधः ॥ ३ ॥
दीपयेत पाचयेच्चापि भेदयेदतिसारयेत्।
प्रातरेवेति सत्यंभो गुणांश्चास्य वदामिते ॥ ४ ॥

तस्यरोगाविनश्यन्ति कालेनाल्पीयसा किल ।
अजीर्णप्रभवारोगा वातपित्तकफोद्भवाः ॥ ५ ॥
अर्शोरोगा नेत्ररोगा शिरो रोगास्तथैव च ।
अंत्रादि संश्रितो दोषो बलादाकृष्य निस्सरेत् ॥ ६ ॥
अन्यान्येषाञ्च योगानां बद्ध विट्कापहारिणाम् ।
बरीयानेषमे योगः सर्व्वावस्थासु दीयताम् ॥ (मन)

अर्थ—हर्र का चूर्ण, सोंठ, सौंफ, नमकसेंधा, और उसारेरेवंद इन सबका चूर्ण बहुत बारीक कपड़छान कर शीशी में रख लेवे। फिर उसकी देशकाल रोगी का बलाबल देख बैद्य उचित मात्रा से आधा तोला से २ तोला तक देवे यह खाने से अग्नि को दीपन तथा पाचन करती है और रात को खाकर सोजाय तो सुबह खुलकर दस्तलाती है इसमें संशय नहीं है। इसके गुण तुझे सुनाता हूँ–इसके सेवन से थोड़े ही समय में निम्न लिखित रोग निश्चय दूर होते हैं, यथा–अजीर्ण से उत्पन्न रोग, बात, पित्त, कफ से उत्पन्न रोग अर्श (बवासीर) के रोग, नेत्ररोग, शिर दर्द आदि आंतों में चिपटे हुये मलादि को बलात्कार से खींचकर निकालती है विशेष क्या कहैं जितने मल भेदक (कब्जकुशा) योग है उन सबों में यह योग अत्युत्तम है और सब हालत में यानी बालगर्भवती को भी उचित मात्रा से देवे।

बिष्टब्धहरी वटी

हिंगु समादाय तथार्कमूलीरसं समीकृत्य कुमारिकारसम् ।
सुपष्टयेद्वारण कोलमात्रां बटी बिधायाथनिधाय कूप्याम् ॥ १ ॥
स्नायुस्थितं गाढमलं विभद्य सुरेचयेदुष्ण जलेनपीता ।
अस्मात्परं नान्नतमं वरेण्यं प्रभेदकानां भिषजो बदन्ति ॥ २ ॥
आध्मानानाह बर्तेषु गुल्मेषु समेषु च ।
उदरेष्वपि सर्वेषु योषापस्मार के तथा ॥ ३ ॥
बालानां मलबन्धे च बिशेषण प्रयुज्यते ।
रोगिभ्यो देशकालादीन बिचार्य्यैव प्रदीयते ॥ ४ ॥

श्रीमताहरिपूर्वेण शरणेनतु धीमता ।
एष आकलितोयोगो बद्धावट्कप्रभेदनः ॥ ५ ॥
विष्ठम्भहारी मलभेदकारी समस्त वातामय दोषहारी ।
बलासगुल्मक्षयंहारियोगः स्त्रीणामपस्मार विनाशकारी ॥ ६ ॥

(मन)

अर्थ—हींग (घीमें भुनी हुई) उसारेरेबन्द और मुसब्बर समान भाग लेकर पानीमें खलकर बेर के बराबर गोली बना लेव और शीशी में रख छोड़े । यह गर्म जल से सेवन करने से आंतों में मल जो कि वायु से कड़ा होगया हो तोड़ कर भली प्रकार से दस्त लाती है । इससे ज्यादा कब्जकुशा दवाइयों में और कोई नहीं है । इसके सेवन करने से आध्मान (पेट वायु से फूलना) आनाह (मरोड़ वा हबड़बाना) और उदावर्त जो कि वायु विकार से विष्ठामूत्र रुक ऊर्द्ध गमन करता है और गुल्मरोग और सब पेटकी बीमारियां और स्त्रियों का अपस्मार (जिसमें वेहोश होकर रोती पीटती प्रलाप करती हैं) नाश होता है, और ज्यादा करके बालकों के पेट में कब्ज रहने पर प्रयोग करते हैं । इसकी मात्रा वैद्य को स्वमति अनुसार देश काल प्रकृति रोगावस्था आदि विचार कर कल्पना करनी चाहिये ।

विष्टम्भहारीत्यादि—यह वटी विष्टम्भ (कब्ज) दूरकर मलको तोड़ देती है समस्त वायु दोषों को दूर कर वायुका अनुलोमन करती है । कफदोष गुल्म (वायु गोला) का क्षय करती है और स्त्रियों का अपतन्त्र (Hysteria) नाम रोग हटाती है ।

वटिकाविष्कर्त्ता—स्वा० हरिशरणानंद वैद्य

व्रणहर लेप

भागैकन्तुत्थकं कुर्याच्चतुर्भागं च रालकम् ।
उभौसम्मर्द्य सम्पेष्य तिल तैले विनिः क्षिपेत् ॥

स्निग्धं सूक्ष्मं विधायादौ पानीयं बहु पातयेत् ।
ततो निर्मथ्य यत्नेन यावत्पुष्प विनिर्गमः ॥
अन्यपात्रे च संस्थाप्य वारिणाप्लावयेद्भृशम् ।
सर्वव्रणेऽस्य संलेपा त्स्वथः स्याद्व्रण संचयः ॥ (कोशल)

अर्थ—नीलाथोथा १ भाग, सफेद राल ४ भाग, दोनों को खूब रगड़ पीसकर तिल तैल में डाल दे चिकना महीन बनाकर फिर बहुत जल उसमें में डाल देवे। यत्न पूर्वक फूलसा उठने तक खूब मथकर दूसरे बर्तन में धरकर पानी से भरदे इस मलहरके व्रणपर लेप करने से शीघ्र सब घाव क्षय हो जाते हैं।

नोट—मलहर को लगाकर ऊपर से कपड़े का टुकड़ा लगा कर बार २ पानी से तर रक्खे ।

क्षतारि घृतम्

कङ्कुष्ठं स्यात्तोलमानं प्रग्राह्य सिन्दूरञ्च चन्द्रसंज्ञं द्वितोलम् ।
खाँदका मात्रा बाणभागाभिपत्रिभरश्वेतंसत्वं खादरं वेदभागम् ॥१॥
सर्पिर्ग्राह्यं शेटकार्धप्रमाणं तत्संसिद्धौ श्रूयतां मे विधानम् ।
शताधिकं क्षाल्यमथो मुहुर्मु हुर्घृतं कराभ्यां परिमद्य सम्यक् ॥२॥
सुवस्त्रपूतंतु निरुक्तचूर्णं संकुट्य तस्मिंश्च क्षिपेद् विधिज्ञः ।
ततोऽम्बुना क्षालय वारमेकंनिध यकूप्यामथ काचमय्याम् ॥ ३ ॥
निवापयेत्कूपमगाम्बुनि भिषक् तुषारशीतेऽत् भवेत् स्थाढम् ।
ततोघनीभूतमिदं घृतंस्यात्त्रि दोषजस्यापित्रणस्यभाञ्ज ॥ ४ ॥
नाड़ीव्रणागन्तुज सम्प्ररोहि झटित्यथो दाह विशान्तिकृतस्यात् ।
(मन)

अर्थ—मुर्दाशंख १ तोला, सिन्दूर और कापूर २-२ तो० खड़िया ५ तो०, कत्था ४ तो०, घी आधसेर ।

बनाने की विधि—प्रथम घी को १०८ बार पानी डालकर धोडाले पश्चात् ऊपर कही औषधियों को कूट कपड़छान कर लेवे और उस धुले हुये घी में इस चूर्ण को डाल कर हाथ से खूब फेंटे जिससे चूर्ण घी में मिलकर एक जीव हो जाय। बाद में उसे एकबार और

पानी से धो डाले और कांचकूपी या अन्य चिकने बासनमें रखकर बर्फ जैसे ठंडेपानी में रखदे ताकि मरहम कड़ी हो जाव। यह मरहम वात से पित्त से कफ से व त्रिदोष से उत्पन्न हुये जख्म को साफकर भर लाता है और विशेषतः अग्नि-दग्ध व्रण का प्रदाह अथवा नाड़ी-व्रण (नासूर) को भी लगाने से भरता है।

व्रणहरं घृतम्

ग्राह्यं मधूच्छिष्टमतीवशुद्धं पलप्रमाणं शिखिवर्ण कञ्च।
कर्षार्धमादाय तथोपधातुभुजंगजं सार्धपलप्रमाणम्॥ १॥
समाददीतत्वथ शल्लकीरसं सिक्थप्रमाणं कुरुतरयसिद्धिम्।
निम्बाम्बु वा तद्विसु तंविशुद्धं द्विपादमानञ्च विनिः क्षिपेत्॥ २॥
तैलेतुपादप्रमितेऽतिशुद्धेमंदाग्निना तत सुपचेद्धि वैद्यः।
अर्द्धावशेषे खलु निम्बनीरे त्यजेत्ततः सिक्थकमेव सर्वम्॥ ३॥
द्रुतेऽपितस्मिन् परिक्षिप्यचूर्णं सुगालितं चीनपटेन सर्वम्।
निम्बाम्बुनिः शेषमुपागतं यदातदाह्यधस्तादवतारयेत्॥ ४॥
पूर्वोक्तरीत्यैव प्रयोजनीयं दुष्टेषु सर्वेष्वपिमर्मगेषु।
व्रणेषुनाडयामधिसंश्रितेषु सहस्रशोऽयं किलमेऽनुभूतः॥ ५॥

विशेषप्रशस्तिः

अनेक भैषज्यचिकित्सितेषु ह्यनेक दोषोन्मिश्रितेषु वैद्यः।
असाध्ययुक्तेषुगलत्सुयोज्यो योगोऽयमुक्तोघृतराट्भिषग्भिः॥ ६॥

(मन)

अर्थ—बहुत साफ सहत बाला मोम ४ तो० तूतिया आधा तो० सिन्दूर ६ तो० राल ४ तो० इनको कूट कपड़छान कर लेवे। अनन्तर नीम के पत्तों का रस वा अर्क ऽ॥ लेकर बहुत साफ ऽ। भर तैल में डालकर मन्दग्नि से अच्छी तरह पकावे आधा रस सूखने के बाद मोम डाल दे। जब वह भी पिघल जाय तब बारीक कपड़े से छानाहुआ शेष चूर्ण भी उसीमें डालदें। जब नीम का पानी सूख जाय और तैल मात्र रहजाय तब नीचे उतार लेवे और पूर्वोक्त मरहम की विधि

ग प्रयोग में लावे। इससे सब प्रकार के दुष्ट ममंगत तथा बहते हुये सड़े गले अनेक दोषयुक्त नाड़ी व्रण (नासूर) में यह प्रयोग करने से सहस्रों बार लाभ हुआ देखा गया है। यह मरहम राज मेरा अनेकबार का अनुभव किया है।

स्वर्णक्षीरी स्वरस तैल

कटुतैलं प्रस्थमितं चुल्ल्योपरि प्रपाचयेत्।
तीक्ष्णं भवेद्यदातैलं क्षिपेत्तुत्थस्य चूर्णकम् ॥ १ ॥
मुहुर्मुहुः क्षिपेत्तत् दर्व्याञ्चपरिचालयन्।
भस्मीभूतं ततो ज्ञात्वा कटाहं त्ववतारयेत्।
स्वांगशीतं तथा कृत्वा स्वर्णक्षीर्या रसंक्षिपेत् ॥
प्रस्थमानं तथा तैले पाकं कृत्वा तथा विधिः ॥ ३ ॥
मृदुपाके भवेदस्मिन् बाहुल्येन गुणोच्चयम्।
शस्त्रादिना स्रुतेरक्ते पीड़ावे बातजां तथा ॥ ४ ॥
नानाविधि समुत्पन्नाव्रणाद्या दूषिताश्चये।
ते सर्वे प्रलयं यान्ति तैलादस्मान्न संशयः ॥ ५ ॥

अर्थ—१ सेर कड़वे तैल को कड़ाही में डालकर गरम करो, जब तेल खूब गरम हो जाय तो उसमें एक तोला नीलाथोथा के चूर्ण की धीरे २ चुटकी देकर जला दो। बाद को तेल को उतार कर ठण्डा करो। और उसमें १ सेर सत्यानाशी का स्वरस डालकर पकाओ। इस तेल का मृदुपाक करना चाहिये। किसी भी प्रकार के शस्त्रादि के लगने से रक्त बहता हो तो इसकी पट्टी लगा देने से रक्त बन्द होता है। किसी भी प्रकार से पैदा हुये दूषित व्रण इससे नष्ट होते हैं।

वमन हर प्रयोग

अश्वत्थत्वग्भवं भस्म ग्राह्यमाणक मात्रकम्।
कषद्वये जलेत्क्षेप्यं चोपरिस्थञ्च पाययेत् ॥
जलंतेन चतुर्वारं छर्दि नश्यत्य संशयम्। (दत्त)

अर्थ—पीपल की राख की छाल एक आना भर, २ तो० पानी में डाल देवे। ठहरा जावे तब ऊपर का पानी तीन चार बार दिन में पिलाने से वमन अवश्य नष्ट हो जाता है।

शुक्रतारल्य

मदन मञ्जरी

चत्वारो व्योमभागास्तदनु निगदितं भागयुग्मं च वंगं।
भागेकं शंभुबीजं त्रितयमपिमृतं तत्समासिद्धमूली॥
चातुर्जातं सजातीफल मरिचकणा नागरं देवपुष्पं।
जातीपत्रं भागद्वितयमथ पृथक् सर्वमेकत्र चूर्ण्यम्॥
सर्वैद्वय शाक्षिता स्याद्घृतमधुसहिता मोदकीकृत्यचैतत्।
खादेदग्नि समीक्ष्य प्रसभमभिनवानन्दसंवर्द्धनाय॥
योगो वाजीकराख्योऽस्मिह निगदितो भैरवानन्दनाम्ना।
निःशेषव्याधिहन्ता दलित बहुबधूदामकंदर्पदर्पः॥

अर्थ—अभ्रक भस्म ४ तो०, बङ्गभस्म २ तो०, चन्द्रोदय षड्गुण बलिजारित १ तो०, शुद्धभांग ७ तो०, चतुर्जात (दालचीनी, पत्रज, इला॰ यची बीज, नागकेसर) २ तो०, जायफल, जावित्री, सोंठ, मिर्च, पीपल, लौंग प्रत्येक २-२ तो० का चूर्ण करके कपड़ छन करलें। फिर उपर्युक्त तीनों भस्मों को मिला, २ दिन घोंटकर ५॥ तो० मिश्री मिला, घृत और शहद डालकर जंगली बेर के समान गोलियां बनाकर प्रातः सायंकाल बल देख १-१ या २-२ गोली गरम दूध से सेवन करनेसे थोड़े समय में ही बल-वीर्य को बढ़ाने में यह प्रसिद्ध है।

धातु रोग नाशक चूर्ण

लघ्वेलोशीरमुस्तामवति रर्वामितामाषका वंशजा च।
दुस्पर्शा तालमूली क्षुरिकसुरजनी गोक्षुरो जातिकोषम्॥
कर्षं लज्जावतीजं त्रिफलयुतमथो तादरी ब्राह्मणो च।
बीजं स्नग्धबीजत्वगथ शतपदा वृद्धदारकगन्धा॥ १॥

संम्मेल्य षट्कषामतां सितां च,
कर्षप्रमाणां वरमस्तकीं च।
सञ्चूर्ण्य वस्त्रेण विशोध्य सर्वं,
सेवेत शुक्राद्भवरुग्गृहीतः ॥
प्रातर्नरैर्गोः पयसा तु शाणं,
सायं वराद्भिः परिसेवनीयम्।
यावद्दिनानां खलु विंशतिः स्या,
त्ततोऽद्विगुण्यान्यथवा दिनानाम् ॥
व्यायामं निशि जागरं गुड भवं रक्तं मरीचं गुडं।
तैलं तैलविनिर्मितं च सुरतं स्वप्नं दिने श्लेश्मकम् ॥
अम्लं चाम्लभवं सदारतिकथाश्चिन्तां कुसङ्गादिकं।
क्रोधं वेगनिरोधशोकमलसं मेहीत्यजेद्दूरतः ॥

अर्थ—छोटी इलायची, खस, नागरमोंथा, वंशलोचन प्रत्येक ६ मा०, कोंच के बीज, सफेद मूसली, तालमखाना, हल्दी, छोटी गोखरू, जायफल, लज्जावन्ती के बीज, त्रिफला, तोदरी सफेद, बहमन सफेद प्रत्येक १ तो०, ईसबगोल की भुसी, शतावरी, विधारा, असगंध प्रत्येक १॥ तो० और ६ तो० मिश्री व १ तो० रूमी मस्तगी को मिलाकर चूर्ण कर वस्त्र से छानकर धातुरोग प्रसित प्राणी सेवन करे। मनुष्यों को प्रातः ४ मा० चूर्ण गोदुग्ध के साथ व सायं स्वच्छ ताजा जल के साथ २० दिन तक अथवा ४० दिन तक सेवन करना चाहिये।

पथ्यापथ्य—व्यायाम, रात्रिजागरण, गुड़ की चीजें, लालमिरच, गुड़, तैल, तैल से बनी चीजें, स्त्री संभोग, दिन में सोना, कफकारक खटाई से बनी चीजें आदि, सम्भोग की चर्चा चिन्ता कुसङ्गति आदिक क्रोध, वेगरोकना, शोक, आलस्य आदि को प्रमेह रोगी दूर से ही त्याग देवे।

प्रमेहघ्नचूर्णम्

बब्बूलगुन्द्रफलिका च तथास्य सत्त्वम्।
दिव्या पलाशकलिका त्रुरकञ्च शुभ्रा।

मञ्जाम्लिका च मुशलीद्वयमेवग्राह्यम् ।
सालिम शकाकुलसिता वह्मनद्वयञ्च ॥ १ ॥
ग्राह्यास्थिरायुमुशली सुरबालिबीजम् ।
बाटयालबीज सिततोदरिकादयश्च ॥
प्रत्येक कषमित मौषधकञ्च खण्डम् ।
अष्टादशाक्षमितकं किलचूर्णयेच ॥ २ ॥
बंगभस्मतदा देयम् पञ्चमाषमितं बुधः ।
धारोष्णेन च दुग्धेन सखण्डेनोष्णकेन वा ॥ ३ ॥
मात्राकर्षमितादेया सायं प्रातः दिने दिने ।
प्रमेहत्रिंशतिंहन्यात् दोषान्शुक्रसमुद्भवान् ॥ ४ ॥
उपद्रवाञ्जयेत्तू एं सर्वान् रेतः क्षयोद्भवान् ।
चत्वारिंशद्दिने खादेत् पथ्यं युक्तया च पालयेत् ॥ ५ ॥
तैलाम्लमरिचं तीक्ष्णं गुडंरूक्षं विवर्जयेत् ।
ब्रह्मचर्य्यं सदारक्ष्यम् चायुषामभिलाषिणाम् ॥६॥(राम)

अर्थ—बबूर का गोंद और बबूर की फली, बबूर का सत, शतावर, ढांक की कली, तालमखाना, कौंच के बीजों की गिरी, इमली के बीजों की गिरी, काली मूसली, सफेद मूसली, सालब मिश्री, शकाकुल मिश्री, वहमन सफेद तथा लाल, सेमर की मूसली, सुरवाली के बीज, बीजबन्द गुजराती, सफेद तादरी इसमें प्रत्येक औषधि को एक २ तो० लेवे और शुद्ध देशी कच्ची खांड को १८ तो० लेवे इन सबको कूटकर बारीक कपड़े में छान लेवे पुनः बङ्गभस्म ५ मा० डालकर खूब मर्दन करे एक १ तो० सुबह और शाम धारोष्ण दूध अथवा आधसेर गाय का दूध तीन उफान आने पर ५ तो० खांड डालकर ऐसे दूध के साथ प्रति दिन सेवन करे तो बीसों प्रकार के प्रमेह तथा वीर्य के सम्पूर्ण रोग, वीर्य के क्षय होने के कारण उत्पन्न रोग तथा उपद्रवों को शीघ्र ही नष्ट करता है। चालीस दिन परहेज पूर्वक औषधि सेवन करे। तैल, खटाई, मिर्च तीक्ष्ण चीजें गुड़,

रूखे पदार्थ न खाय। उमर कायम रखने की इच्छा वालों को ब्रह्मचर्य पालन अवश्य करना चाहिये।

वीर्यवन्धु चूर्णम्

शुभ्रैलेश्वरगोलचुकुवरदा कंकोल सत्त्वामृता।
ब्राह्मीदारुहरीतामलातु त्रफला निर्यासपर्णाच्छुरा ॥
पिच्छा गावजुवां शिलाजमुसली धात्रीसिता शालिमा।
वाट्या बीज मुकुन्दश्वतवहमनम् मस्ताङ्गका तोदरी।
नामानि भेषजानीह सर्वाण्येकत्र कारयेत्।
अर्धकर्षप्रमाणेन प्रत्येकं चूर्णयेत् पृथक् ॥
कर्षद्वयं तदाक्षेप्यो योगस्तारदलस्य च।
सिद्धयोगं प्रवक्ष्याम योऽत्र प्रोच्यते बुधैः ॥ ३ ॥
अर्धाशं तारपत्रं स्यात् शुक्तिकहरुवा पृथक्।
विद्रुमस्य ततोमूलं शाखाधवेद माषकम् ॥ ४ ॥
कृष्णाकेतकयोरकः पृथक् कर्षत्रयं क्षिपेत्।
कृष्णखल्वे दृढं मर्द्य शुष्कं स्यादञ्जनोपमम् ॥ ५ ॥
अस्मात्कर्ष द्वयंक्षेप्यं वीर्यबन्धौ सुबुद्धिभिः।
अपकाच ततः क्षेप्या द्वादशाश्वमिता सिता ॥ ६ ॥
ततोऽर्धाश्वमितांमात्रां खाय प्रातः सुयुक्तितः।
जलेनरयसावाथ पथ्यपूर्वञ्च भक्षयेत् ॥ ७ ॥
भोजनं सात्विकं कुर्यात् स्निग्धोष्णञ्च विशेषतः।
तैलाम्ल मरिचं त्याज्यं तीक्ष्णं रूक्षं गुडं तथा ॥ ८ ॥
ब्रह्मचर्यं सदापूर्णं पालनीयं प्रयत्नतः।
वीर्यवन्धुकनामेदंश्चूर्णं प्रोक्तं भिषग्वरैः ॥
शुक्ररोगानिहन्त्याशु दोषान् वीर्य क्षयद्भवान्।
नास्यप्रतिहता शक्तिदृष्टमेतन्न संशयः ॥ १० ॥

अर्थ—वंशलोचन, छोटी इलायची, इसबगोल की भूसी, इमली के चिया की मिगी, विदारीकंद, शीतलचीनी, गिलोय का सत, ब्राह्मी,

तालमखाना, बाज खरटा, समर का गोंद, ढाक का गोंद, तालमखाना, मोचरस, गावजुबाँ, सत शिलाजीत, काली मुसली, आमला, सालम, मिश्री पंजाकी, बाजबन्द गुजराती, सत बहरोजा, बहमन सफेद, रूमी मस्तगी, तोदरी सफेद, इन सब औषधियों को ६-६ मा० लेकर बारीक चूर्ण कर लेवे। और रजतयोग (अक्सीर नुकरा) २ तो० मिला लेवे। इस सिद्ध योग की औषधियां इस प्रकार हैं। यथा—चांदी के वर्क ६ मा०, शुक्ति भस्म ४॥ मा०, कहरुवा ४॥ मा०, मूंगा की शाख तथा जड़ की भस्म ४॥ मा०, इन पांचों चीजों को ३ तो० अर्क केवड़ा और ३ तोला अर्क गुलाब डालकर काले खरल (संगमूसा) में खूब मर्दन करे।

घोंटते२ जब सूखकर सुरमा के समान बारीक हो जाय तब शीशी में भर लेवे इसी में से २ तो० औषध वीर्यबन्धु चूर्ण में पड़ती है, फिर शुद्ध देशी कच्ची खांड १२ तो० पीसकर उसमें डाल दे। ९-६ माशा की मात्रा से सुबह तथा शाम दूध चाहे किसी का भी हो। उसके साथ तथा न मिलने पर ठंडे पानी के साथ सेवन करें। और पथ्य से रहें। पथ्य में सात्विक भोजन, स्निग्ध उष्ण (तर गरम) भोजन, फल आदि हितकारी चीजें खावें। और तेल, खटाई, मिर्च, मिठाई, तीक्ष्ण रूक्ष पदार्थ आदि हानिकारक चीजें न खायें। अष्टांग ब्रह्मचर्य का पालन पूर्णतया करें। यह वीर्यबन्धु नाम का चूर्ण वैद्यों ने कहा है। यह वीर्य के सम्पूर्ण रोग तथा वीर्य के क्षय से उत्पन्न सब रोग नष्ट करता है। इस चूर्ण की शक्ति कहीं भी नहीं रुकती यह देखा जा चुका है। इसमें कोई सन्देह नहीं करना चाहिये।

धातुपुष्टिकरो योगः।

शतावरीगोक्षुरवाजिगन्धालज्जावतीबीजफलत्रयञ्च।
एलात्मगुप्तारजनीसुजीर्णाः कर्षौसमेषांमुसलीसुगन्धे॥
विचूर्ण्यसम्मेल्य तथाधकर्षं सुवर्णवंगञ्च सुवंशनेत्रम्।
सिता समाना सकलेनियुज्य समुद्गमाषप्रमिता प्रखादेत॥

सेवेत पथ्येन हि साद्ध मासं प्रमेह धात्वामयहारि नूनम्।
जातश्च यातुध्वजभंगरोगो निम्नोक्त लेपौ च सहैव लेप्यौ ॥
जातीफलं गोः पयसा विघृष्य प्रातः कदुष्णम्परिलेप्य लिंगे।
ताम्बूलपत्रञ्च विवेष्ट्य नित्यं सायं कवोष्णेन जलेनशोध्यम्॥
तथा हरिद्रां गजपिप्पलीं च व्याघ्रस्य मेदो घृतमश्वगन्धाम्।
पिष्ट्वा प्रलेप्याथ विमर्द्य लिंगं शयीत रात्रौ छदनं निबद्धम् ॥
प्रातः समुत्थाय कवोष्णधारा शेफोविशुद्धिं शततं विदध्यात्।
पार्द्धनमासेन करोति लिंगं पुष्टं दृढाग्रं मुशलप्रमाणम्॥

अर्थ—शतावर, गोखरू, असगंध, लज्जावन्ती के बीज, त्रिफला, छोटी इलायची के बीज, कौंच के बीज, हल्दी, खिरारा कालीमूसली, तालमखाना प्रत्येक दो दो तोला इन सबको अत्यन्त चूर्ण कर कपड़ छानकर फिर स्वर्ण बङ्ग ६ मा०, बंशलोचन ६ मा०, पीसकर मिलाये तथा सबके बराबर उत्तम पिसी मिश्री मिलाकर प्रातः सायं चार २ माशा औटे गरम २ दूध के साथ खाये अथवा (प्रातः शुद्ध छने ठण्डे जल से व सायं उपर्युक्त दूध से ःलेवे) इस प्रकार मैथुन, खटाई लालमिर्च, तैल, गुड़, दिन का सोना, रात्रि को जागना, आदि अपथ्यों को त्यागते हुये पथ्य के साथ डेढ़ मास तक सेवन करे। यह अवश्य प्रमेह आदि धातु रोगों को निश्चित विनाश करता है।

साथ ही यदि ध्वजभंग रोग हो तो नीचे लिखे दोनों लेपों को भी साथ ही लेप करते रहना चाहिये।

जायफल को गोदुग्ध से घिसकर गुनगुना करके प्रातः लिंग पर अच्छी तरह लेप करके ऊपर से नित्य ताम्बूलपत्र को लपेट कर बांध दे सायंकाल गुनगुने जल से धो डाले। इसी प्रकार हल्दी, गजपीपल, असगंध को चूर्ण कर कपड़छन करके घी व बाघ की चर्बी अच्छी तरह मिलाकर पीसकर लेप करे और लिंग का मर्दन कर पत्ता बांध रात्रि को सो जाय सबेरे उठकर गुनगुने जल से नित्य लिंग को धो डाले इस प्रकार २१ दिन तक लगाते रहने से लिंग पुष्ट अग्रभाग से दृढ़ मोटा मूसल के समान हो जाता है।

स्वप्नदोषघ्नयोगः

तालमूली सप्तकर्षा नवकर्षा सिता तथा ।
तुगाक्षीर्यश्वगन्धैला: कर्षमात्रा: पृथक्पृथक् ॥
बब्बूलस्य च निर्यासो द्विकर्षप्रमितस्तथा ।
कतीरस्यापि निर्यासः षण्माषप्रमितोभवेत् ॥
बलाबीजं सार्द्धसप्तकर्षं वंग रसोन्मितम् ।
मावं संचूर्ण्यं सर्वेषां कर्षमाना वटी कृताम् ॥
प्रातः सायं प्रयुञ्जीत ततश्चोष्णपयः पिवेत् ।
स्वप्नदोषादयो धातुरोगा नश्यन्त्यसंशयम् ॥

अर्थ—सफेद मूसली ७ तो०, मिश्री ६ तो०, वंशलोचन, असगंध छोटी इलायची प्रत्येक पृथक २ एक-एक तोला बबूल का गोंद २ तो०, गोंद कतीरा ६ मा०, बीजबन्द ७॥ तो०, कुश्ता रांगा ६ मा० समस्त दवाओं का चूर्ण कर कपड़ छन करके एक तोले की बटी बनावे प्रातः सायं एक २ गोली खाकर गर्म दूध पीवे इससे स्वप्नदोष आदि धातु रोग १५ दिन में निस्संदेह नष्ट हो जाते हैं ।

स्वप्नदोषे

किं बहुलत्र वक्तव्यं भैषज्य विषये मया ।
पूर्वन्त्वामयावीस्याद् ब्रह्मचर्य्य विधौ रतः ॥
संयम्यचेन्द्रियग्रामं प्राणानायम्य स्वभ्यसेत् ।
विष्णुभक्ति परश्चैव ततः कुर्य्यादिमां क्रियाम् ॥
सुपक्वामलकीयं तु चूर्णं त्रिःसप्त भावितम् ।
आमलकी रसेनैव छायां शुष्कमथोकुरु ॥
सङ्कुट्यायसेखल्वे वस्त्रेणाथ विगालितम् ।
मधुनातनगो लिह्यात् कोलमात्रं विधानतः ॥
गुडूचीरसयुक्तं चैव सन्ध्ययोरुभयोरपि ।
आम्लाम्रमभिष्यन्दञ्च पाकं रात्र्यन्धतां तथा ॥

अल्पहकूतं पद्मशातं शुक्ल कृष्णागतान् गदान् ।
अनुक्रमश्गादकं रोगं सर्वोतेण निवर्हयेत् ॥ ७ ॥
मयऽतुनूनशारा: प्रशामंत्स्यम स्तमेर्वातिद हि योगराट ।
साध्वेष्वसाध्येष्वपि यांऽप्यतामयं रसायनोहि किलसर्व देहिनाम ॥

(मन)

अर्थ—दवाइयों के विषय में बहुत क्या कहें पहिले रोगी को ब्रह्मचर्य्य रखना चाहिये यह नहीं कि इधर खाया उधर ढरकाया इससे दवाइयां क्या गुण करें। सब इन्द्रियों को विषयों से बचाकर प्रणायाम का अभ्यास करे और विष्णु भक्ति परायण रहे तब इस क्रिया को कर देखें किस भांति दवा गुण नहीं दिखाती है। अच्छे पक्के आंवलों के चूर्ण को २१ बार आंवलों के रस की भावना दे। स्मरण रहे कि भावना देते हुये जब पूर्व रस मर्दन करते २ निःशेष हो जाय तब दुबारा रस डाले। अनन्तर छांह में सुखाले, जब अच्छी तरह सूख जाय तब उन्हें हिमामदस्ते में कूट कपड़छान कर बाद शीशी में भरले। उसकी ४ माशे मात्रा शहद और गुर्चरस मिला कर दोनों वक्त चाटे तो ये रोग निश्चय नष्ट हों —

यथा—आंख में से खुश्की की वजह से या अन्य किसी कारण वश पानी झरता हो आखें चिपटी रहें या पक आयी हों, रतौंधी कम दीखना, राल झरना अथवा और जो सब आंखों में व्याप्तरोग जो यहां विस्तार भय से नहीं लिखे जैसे सफेद, काला, बिन्दू, अर्म्म मांस, चतुर्थ पटलगत, नाखूना, परवाल इत्यादि सफेद तथा कृष्ण (कनीनिका) स्थानगत जो अन्यान्य एक दोषज, द्विदोषज, त्रिदोषज अक्षिरोग हैं उन सबको यह योग नाश करने में अव्यर्थ है विशेषत: स्वप्नदोष को नाश करके शीघ्र ही मनुष्य को लावण्य युक्त बना देता है। यह मेरा शतशोऽनुभूत है।

अन्यच्च

सेव्यंगोक्षुर वृद्धदारुत्रिफला जातीफलं लज्जिका ।
मुस्तैलाकपिकच्छु भीरतुरगोत्थकक्षीरभागंसमम् ॥

चैतच्चूर्णं समानकं शुभसिता तत्रानुगव्यं पिबेत् ।
मासाद्दूरतरं प्रयाति त्वखिलं स्वप्नेषु रेतश्च्युतिः ॥

अर्थ—उशीर (खश) गुग्गुल, शुद्ध विधारा बीज, त्रिफला, जायफल, लज्जवन्तीबीज, नागरमोथा, कौंचबीज, इलायची छोटी के दाने शतावर, असगँध, वंशलोचन ये समान भाग ले चूर्ण करे समस्त चूर्ण के समान मिश्री मिला ६-६ माशा प्रातः सायं गोदुग्ध से सेवन करने से स्वप्नदोष दूर होता है ।

देवकुसुमफलं हन्ति स्वप्नदोषं चिरंतनम् ।
किम्पुनस्तत्रवक्तव्यं सिताचन्द्रसमन्वितम् ॥

अकेला कबाबचीनी (शीतलचीनी) का चूर्ण ही स्वप्नदोष नष्ट कर देता है यदि उसके साथ कपूर और शक्कर मिला दे तो क्या कहना है । एक मात्रा में १ माशा शीतलचीनी १ रत्ती शुद्ध कपूर १ १ तो० शक्कर मिलाकर सोते समय जल के साथ सेवन करना ४० दिन तक । पेट की सफाई इस रोग में रखना बहुत अच्छा है ।

शीतचीनी भवंच्चूर्णं नकं संसेवितं किल ।
पयसासंहरेद्दोषं स्वप्नजातमसंशयम ॥

जातिमुखं नागराख्यं त्रिकण्टंशतमूलोश्च वानराह्वस्य बीजम् ।
लज्जालुश्च बालकं बंशसारं वृद्धदारु प्रक्षालयेत् कषमानम् ॥ २ ॥
सकुट्यथचूर्णयित्वा च सम्यग् वस्त्रपूतं कारयेच्चापिविद्वान् ।
त्रिफलाचूर्णं कषमानं गृहीत्वा तुल्यंखण्डं सर्वचूर्णे प्रकल्प्यम् ॥३॥
सम्मेल्यं स्यादुक्तचूर्णं तयस्तुप्रातः सायं सेवयेद्धः दुग्धम् ।
ससेवतोह्यस्य चूर्णस्यशक्त्या प्रबलोऽलत्यं स्वप्नदोषश्च नश्यते ॥४॥

(सन)

अर्थ—मदं चीनी के (अनुमान माफिक चूर्ण को रात सोते वक्त दूध के साथ सेवन करे तो स्वप्न दोष निश्चय नाश हो ।

दूसरा योग—जायफल, नागरमोथा, त्रिकण्टक, (गोखरू) सतावर कौंच के बीज, लज्जवन्ती के बीज, तगर, वंशलोचन, विधारा, त्रिफला

का चूर्ण, इन सब को तोला भर लेकर कपड़ छन कर लवे। इसे प्रातः सायं आधा तोला लेकर योग्यानुपान से सेवन करे तो इस चूर्ण के प्रभाव से स्वप्नदोष तथा शीघ्र स्खलित होना, यह बीमारी जाती है।

अश्वाभरीहा छगलाथभीरुः—इसब्यगोलं खलु साद्ध कर्षम्।
वराजटाबीज त्रिकण्टकानि सितम्भवद्धामन सञ्चकञ्च॥१॥
कुञ्जालुबीजानि च तोदरीति जातीफल तालमखान्न संज्ञम्।
स्यान्मस्तकी चाप्यथ तालमूली पृथक् समस्तप्रतिकर्षमानम्॥
वंशोद्भवा सागर गामिनी च बलाहकं वीरतरं प्रशस्तम्।
इत्यर्ध कर्ष प्रमितांश्च भागान् सितोपलायास्तु षडेवकर्षाः॥
माषोन्मिता पारदजा विभूतिः स्वर्णाख्य वंगञ्च समानरूपम्।
सुसूक्ष्म पिष्टं वसनेनपूतम् शाणोन्मितं सेवितमम्बुनेदम्॥
स्वप्नोत्थदोषं हरतेप्रसह्य शुक्रस्यतारल्य मथापि पातम्।
बलप्रदञ्च वृष्यं मुनिभिः प्रदिष्टं रसायनं कांतिविवर्द्धनञ्च॥
क्षाराम्ल तीक्ष्णोष्ण विधिविवर्ज्य सुशीलयेदेन मथापि नित्यम्।

(मन)।

अर्थ—असगन्ध, विधारा, शतावर, ईसबगोल ये वस्तु पृथक् १॥ तो०, हड़, बहेड़ा, आमला, कौंचबीज, गोखरू सफेद बहमन, लजवन्ती के बीज, तोदरी, जायफल, तालमखाना, मस्तगी, तालमूली ये प्रत्येक १-१ तो०, बंशलोचन, छोटी इलायची, नागरमोथा, खस प्रत्येक आधा २ तो०, मिश्री ६ तो०, रससिंदूर १ मा०, स्वर्णवंग १ मा० बारीक पीसकर सब को मिलाये। कपड़छन कर जल के साथ ४ मा० सेवन करने से स्वप्नदोष, शुक्रदोष, धातुतारल्यादि दोष दूर होते है। बल देने वाला वाजीकरण कांति बढ़ाने वाला रसायनयोग है। इसमें क्षार, तीक्ष्ण, उष्ण, अम्ल पदार्थों का त्याग करना चाहिये।

स्त्रीरोगाधिकारः

रजःप्रवर्त्तकपेया

प्रस्थद्वये वारिणि बाणवर्ष बीजस्पचेद्गाजरजन्तकस्य ।
अर्धशृते प्रस्थमितस्पयोगो दुग्धावशेषं विधिनाप्रपाच्य ॥
गुडादिदामिष्टेन विमिश्रताद्धंम्पानाय दद्याद्रजसः प्रवृत्त्यै ।
प्रवर्तिते शेषमपि प्रयच्छेदनेन नूनं रजसोऽवतारः ॥२॥

अर्थ—२ सेर जल में ४ तो० गाजर बीज को पकायें, आधा औटने पर १ सेर गोदुग्ध को और मिलाकर दुग्धमात्र रहने तक फिर बिधि से पकाकर गुड़ आदि मीठा मिलाकर रजःप्रवृत्ति के लिये आधा पीने को दे, रजःप्रवृत्ति होने पर शेष आधे को फिर दे दें। इससे निश्चय रजः प्रादुर्भाव होगा।

हिमांशु रस

यत्राधंतोलन्तु विशुद्धनागं सितोपलां तद्द्विगुणां प्रयोज्य ।
तावद्भिमर्द्य खरलोह खल्वे चूर्णीतुरूपम्हि भजेद्धि नागः ॥
वस्त्रपूतं तथा कृत्वा शैत्यं नन्दतुरम् ।
कर्षार्द्धन्तु क्षिपेदत्र पाषाण दुर्हावन्दनम् ॥
कर्षैकं दुग्धपाषाणं पीरमेंटन्तु माषकं ।
लताकस्तूरिकाबीजैर्द्विसारं च विभावयेत् ॥
एकीकृत्य क्षिपेत्तत्र पात्रे काचमये शुभे ।
अस्मिन्कालानकेनाथ निम्बुनीरैः सुयोजनम् ॥
एकैकमाषमात्रेण उत्रावेगम् हरेद्ध्रुवम् ।
वामिदाह तृषामोहान् वृत्तमिन्द्राशनियथा ॥

अर्थ—शुद्ध सीसा ॥ तोला, ४ तोला मिश्री के साथ जहां तक घोटें कि सीसा मिश्री में मिल जाय, तब कपड़ छन चूर्ण कर रख ले। फिर बालछड़ खस, इलायची दाने प्रत्येक ६-६ माशा का चूर्ण बना, रखले। संगजराहत १ तो०, जहरमोहरा १ तो० का अर्क पुदमुश्क में

खूब पीस सुरमा के समान करके उपर्युक्त समस्त वस्तुयें मिला और १ मासा पिपरमेंट भी मिला शीशी में भरले। १-१ मासा की मात्रा से अर्क बेदमुश्क, इमली के पत्ते वा नीबू के रस के साथ देने से ज्वर का उत्ताप वमन, दाह, मोह, तृषा बहुत जल्द शांत होता है। रक्तपित्त जनित रोगों में उत्तम काम करता है। ज्वर की बिशेष तेजी को शीघ्र कम करता है। दिन में ३-४ मात्रा तक दी जा सकती हैं। रक्त प्रदर आदि बीमारियों और मूर्च्छादि में भी देना।

प्रदरे

धान्यकं बंगभूतिश्च स्फुटिकां गैरिकं तथा।
शुक्तिसामुद्रजंभस्म शुद्धश्चैव शिलाजतु॥
कुमार्याः स्वरसेनैव तण्डुलीय रसेन च।
कर्णाभरण पुष्पेण त्रित्रिवारं विभावयेत्॥
माषमानन्ततो युञ्ज्या दजादुग्धानुपानतः।
श्वेतन्तु प्रदरं हन्ति सप्ताहान्नैव संशयम्॥
असृग्दरे विशेषेण बब्बूल त्वग्मयोरसः।
मध्यान्हे पाययेत्तन्तु हिमक्वाथेन साधितम्॥ ३८॥

अर्थ—धनियां, बंगभस्म, शुद्ध फिटकरी, शुद्ध गेरू, समुद्र सीप भस्म, शुद्ध शिलाजीत समभाग लेकर खरल में खूब पीस लें। फिर क्रम से कुमारी रस चौराई मूल रस गेंदा फूल के रस से ३-३ भावना देकर रख लें। १-१ मासा धारोष्ण बकरी के दूध के साथ प्रातः सायं देने से श्वेत और रक्त प्रदर को सात दिन में दूर करता है। यदि रक्त प्रदर में देना पड़े तो दोपहर के समय बबूल छाल का स्वरस बना पांच तोले बना देना। उसकी बांध यह है-४ तो० छाल को २४ तो० जल में कूट कर रात्रि में भिगो दे, यही देते समय छानकर ५ तो० दें।

अन्यच्च

बब्बूलनिर्यासरसांजनौ च पचंपचायाः खलु कर्षमानम्।
लाक्षाभरालागिरिधातुरुक्म सुचन्द्रिकाभस्म्वथकर्षमर्द्धम्॥

बलार्द्धमानेनसितां प्रयोज्यं सूक्ष्मरजो वै विधिना विधेयम् ।
त्रिमाषमानं खलुहैमवारा भवेद्दलन्तु प्रदरापनुत्यै ॥

अर्थ—बबूल का गोंद १ तोला, शुद्ध रसोत १ तो०, दारुहल्दी १ तो०, लाखा पीपल ६ मा०, नागरमोथा ६ मा०, शुद्ध गेरू ६ मा०, इनको महीन पीस छानकर २ तो० मिश्री मिला, ३-३ मा० प्रातः सायं शीतल जल से देने पर ५ दिन में प्रदर रोग नष्ट होता है।

अन्यच्च

कतीरगोकंटकजिह्वशल्यान्, कर्षैकमानं कठिनीरजश्च ।
द्विटंकमानं पयसात्वजायाः असृग्दराब्धौ बड़वानलोऽयम् ॥

अर्थ—कतीरा, गोंद, गोखरू, सफेदकत्था, सेलखड़ी (संगजराहत) का समान भाग बनाया हुआ चूर्ण ८-८ मासा बकरी के दूध से देने से प्रदर नष्ट होता है। यह असृग्दर समुद्र को शोषण करने के लिये बड़वानल रूप है। परीक्षा करने वाले सज्जन का कथन है कि प्रातः बबूलगोंद वाला प्रयोग और सायं यह कतीरा वाला प्रयोग देकर मैंने तीन वर्ष का पुराना प्रदर नष्ट किया है।

रक्तरोधकम्

गैरिकं शैलखरियाया समं भागं सुचूर्णयेत् ।
माषैकं वारिणाखादेत् रक्तार्शोदरवारणम् ॥ १ ॥ (राम)

अर्थ—सोना गेरू, शैलखरी दोनों को समभाग लेकर चूर्ण करे। और १-१ मासे की मात्रा जल के साथ सुबह शाम तथा रात को खाने से रक्तार्श "खूनी बवासीर" रक्त प्रदर शीघ्र नष्ट होते हैं।

रक्त प्रदरे

युग्माषोन्मितां स्फटीञ्च गिरिजं सार्धैकमाषोन्मितम् ।
संगृह्यार्थविचूर्णयेत्तनुतरं स्वच्छेऽम्बरे गालयेत् ॥ १ ॥
माषं चार्द्धमितं द्विसन्ध्यमथवा क्षीरेणखादेत्सदा ।
रुन्ध्यादाशु कुलांगनासृग्दरं रक्तंह्यतीवोल्वणम् ॥ २ ॥ (राम)

अर्थ—शुद्ध फिटकरी श्वेत २॥ तो०, गेरूलाल १॥ मा० लेकर पीसकर साफ कपड़े में छान लें १ मा० तथा १॥ मा० की मात्रा से बकरी के दूध के साथ सुबह शाम सेवन करने से धारा प्रवाह से बहता हुआ रक्त प्रदर का रक्त तत्काल बन्द हो जाता है।

प्रदरे

कर्षोन्मिता स्फटी ग्राह्या जात्याः पत्रं त्रिमाषकम्।
पिष्ट्वार्धमाषकीं मात्रां शर्करा बुद्बुदेन च ॥ १ ॥
भक्ष्योपरिपिबेद्दुग्धं प्रातः सायं दिनत्रयम्।
प्रदरं श्वेत रक्ताख्यं द्रुतं हन्ति च योषिताम् ॥ २ ॥ (राम)

अर्थ—शुद्ध फिटकरी सफेद १ तो०, चमेली के पत्ता ३ माशा को बारीक पीसकर ४-४ रत्ती की मात्रा से बतासे में रखकर सेवन करे ऊपर से दूध पीना चाहिये इसी प्रकार सुबह और शाम दोनों समय तीन दिन तक खाने से स्त्रियों का सफेद तथा रक्त प्रदर अवश्य दूर होता है।

लघुफलघृतम्

भिण्टीद्वयं टुण्टुक याष्टिके च पुनर्नवाच्छिन्नरुहाथ रास्ना।
मेदाशताह्वा च निशाद्वयञ्च चोरस्यनीरस्य च षोडशांशः।
मन्देहुताशे घृतपाकरीत्या सर्वं सुसिद्धं भिषजा प्रयोज्यम् ।२।
शूलेनयुक्ता चलिता विवृत्ताभ्रष्टा तथा मैथुन पीडिता च।
षण्ढाऽथवा पित्तनिपीडिता च योनीस्स दोषः समुपैतिशान्तिम्।
सुतं प्रसूतेऽस्यघृतस्य योगात् दीर्घायुषं रूपगुणान्वितञ्च।
(मन)

अर्थ—गुलाबांस दोनों (लाल और पीला) स्योनाक मुलैठी, पुनर्नवा, गिलोय, रास्ना, मेदा, शतावर, हल्दी, दारुहल्दी, हरड़, बहेड़ा, आमला इन सब वस्तुओं का कल्क कर, एक सेर, गो घृत ४ सेर गो दुग्ध, ८ सेर जल, सबको एक पात्र में डाल मन्द २ अग्नि से सिद्ध करके इस घृत को सब रोगों में प्रयोग करे। इसके सेवन से योनिशूल

योनि पीड़ा व चलित होना, भ्रष्ट होना, षण्डयोनि, पित्तदोष आदि २ सब स्त्री रोग शान्त होकर दीर्घायु रूप गुणयुक्त पुत्र उत्पन्न होता है।

चन्दनादि चूर्णम्

रक्तचन्दनलोध्राम्बुजवीरणानि सिताविषाबालककेसराणि।
रसाञ्जनंमुस्त मथाम्रबीजं धवस्यपुष्पाणि तथोत्पलानि ॥
बिल्वत्वचा नीरजकेसराणि शुण्ठीसमङ्गा कुटजं तथैला।
स्याद्दाडिमं वेतसजंच बीजं पाठा तथा भद्रयवा समानैः ॥
तदंशभागैः परितो गृहीतं सुचूर्णितं वा समगालितञ्च।
माषोन्मितं शालिजलानुपानं सायं प्रभाते मधुनावलीढं ॥
सितारुणं नीलमथापि पीतं दरारूय रोगं ज्वरदोष युक्तम्।
इत्यादिशेषं मुनिभिः प्रदिष्टं चूर्णं वरेण्यं किलचन्दनादि ॥ (मन)

अर्थ—रक्तचन्दन, लोध्र, कमल, खस, मिश्री, अतीस, नेत्रबाला नागकेशर, रसोत मोथा, आम की गुठली, धवपुष्प, नीलोफर, बेल, की छाल, कमलकेसर, सोठ, जामुनकी गुठली, समङ्गा (छुईमुई), कुड़ा, इलायची, अनारदाना, वेतसबीज, पाठा, इन्द्रजौ सब वस्तु समान भाग लेकर चूर्ण करके वस्त्र में छाने इसकी मात्रा १ माशा तण्डुल जल से मधु में मिला कर सायं प्रातः चाटे।

इसके सेवन से श्वेत, अरुण, नीला, पीला, सब प्रकार का प्रदर रोग दूर होता है।

गर्भश्रावे पातेवा

पाठासिताकन्द समान भागाः भागंभवेत्तत्र च माक्षिकस्य।
सुकेसरं स्यात्करवीरकस्य तुल्यं समस्तं च तदष्टमाषम् ॥ १ ॥
पिवेत्प्रयोगं दिनपञ्चकञ्च नारीप्रवृत्ते द्रुत गर्भपाते।
स्रावेऽथवा स्वास्थ्यमुपैति सत्वं निस्संशयं वैद्यवरैः प्रयुक्तम् ॥२

(मन

अर्थ—पाठा, मिश्री, मधु, सफेद कनेर का केसर सब वस्तुओं को समान भाग अर्थात् ६ मा० भर पीने से गर्भपात व स्राव का उपद्रव शान्त होता है।

अन्यच्च

लोध्रत्वचावै सकटंकटेरी पृथग् भवेत् पञ्चकलास्वरूपा।
पथ्याक्षधात्र्यास्तु पृथक् त्रिभागा भागद्वयं नागरजं रजश्च॥
शतपत्रपुष्पं त्रिसमञ्चभागैः सिता चतुर्विंशति भागतुल्या।
सप्ताहसेवत् शृतजञ्चतारम् सुसेवित स्यात् प्रदरस्यशान्त्यै॥

(मन)

अर्थ—लोध्र, दालचीनी, दारुहल्दी ये वस्तु ५-५ मा० हरीतकी बहेड़ा, आमला, ३-३ मा० सोंठ २ मा०, गुलाब के फूल ३ माशा, मिश्री २ तोला क्वाथ करके एक सप्ताह पीने से प्रदर रोग शांत होता है।

सौभाग्यसुण्ठी

फलत्रयं व्योषमथो द्विजीरौ त्वचापकुष्ठी तजपत्रकेशराः।
शालू भृङ्गारकभद्रमुस्ता धान्यंशन ह्वाद्वतयं यमान्याः॥ १॥
पट्टूरूशाकं जगतिप्रसिद्धं लवङ्गपुष्पाणि कपोतकाङ्‌ (?)रिः।
शतावरी मूषलिका सुभिन्ना पियालबीजं गजपिप्पली च। २॥
लोध्रागुडूची घनसार चन्दनं कुचन्दनं चाप्यथ कषयुग्मम्।
पृथग्गृहीत्वा च पुरादिताना महौषधीनाञ्च चतुःशराबान्॥ ३॥
एकंघृतात्पञ्च सितोपलायाः पयः शराबाष्ट मितं प्रयोज्यम्।
पाकक्रमज्ञानविधानदक्षस्ततः पचेत्तान्भिषजां वरेण्यः॥ ४॥
स्निग्धेतभांडे विनिक्षिप्य सर्वं ददीत मात्रा मथवाजदुग्धे।
कासं च श्वासं सहपीनसेन पित्तंसरक्तं क्षयमामवातम्॥ ५॥
योनेश्चदोषान् रजसोविकारान् शिरोगताञ्जाठरजांश्च रोगान्।
सौभाग्यशुण्ठीसमयत्यवश्यं शतशोऽनुभूता मुनिभिःप्रदिष्टा॥६॥

(मन)

अर्थ—त्रिफला, त्रिकुटा, जीरा सफेद, जीरा काला, दालचीनी, इलायची छोटी, तज, पत्रज नागकेसर, जायफल, लौंग, नागरमोंथा, धनियां, सोंफ, अजवाइन देशी, अजवायन खुरासानी, सिंघाड़ा, लवङ्गपुष्प, कसेरू, शतावरी मूसली, धाय के फूल, प्याज के बाज, गजपिप्पली, लोध्र, गिलोय, कपूर, चन्दन, रक्तचन्दन, सब वस्तु दो दो तोला सोंठ का चूर्ण १२८ तो०, घृत ३२ तो०, मिश्री १६० तो०, दूध २५८ तो० सब वस्तुओं को पाक की रीति से घिसकर बकरी के दूध से सेवन करावे। इसके प्रभाव से कास, श्वास, जुकाम, रक्तपित्त, क्षयरोग, आमवात, योनिदोष, रजोदोष, प्रसूतरोग, शिरोरोग उदररोग, स्त्रियों के अवश्य शांत होते हैं सकड़ोंबार अनुभूत की गई है।

शुष्कायाम्

द्राक्षाफलानां दशकंगृहीत्वा वातादबीजानि तथोन्मितानि।
पिस्तारूयद्रव्यं गणितन्त्रिवारं सप्ताङ्कसंख्या सहितं नवीनम्॥
तावन्तबीजान्यपि पङ्कजस्य तुषैर्विहीनानि गतांकुराणि।
मखान्नपुष्पाणि तथा दशैत पञ्चापकुल्यया नियतंगृहाण॥
चतुष्पले गोपयसीह पेष्यं षष्ठ्यन्नमत्राप्सु विमर्दनीयम्।
सिताभवेदत्र पलप्रमाणा गोसर्पिषश्चापि पलैकमानम्॥
तन्मन्दवह्नौ क्रमशः सुसिद्धं कर्षद्वयं केतकि जातमर्कम्।
प्रक्षिप्यशीतं च तदेव पेयात् योनौविशुष्कापि बलेनहीना॥
धातुक्षयातः पुरुषोपिपीत्वा हृष्टश्चपुष्टोबलवानुदीर्णः। (मन)

अर्थ—मुनक्का १० दाना, बादाम की गिरी १० दाना, पिस्ता २१ दाना, कमलबीज बीच की हरियाली निकालकर २१ दाना, मखाना २१ दाना, इलायची ५ दाना, इन सबको पीसकर पावभर गौ के दुग्ध में कपड़े से छाने। फिर साठीचावल पावभर पानी में पीसकर छाने दोनों को मिलाकर १ छटांक मिश्री डाले एक छटांक गोघृत कड़ाई में गर्म करके सबको उसमें डालकर मन्द अग्नि से पकावे कुछ गाढ़ा होने पर और ठंडा करके २ तो० केवड़े का अर्क डाल पान करे तो

पिलावें। इससे शुष्का योनि वाली वा बलहीन स्त्री निरोग होती है। धातु क्षय वाला पुरुष भी यदि इसे पान करे तो हृष्ट पुष्ट और बलवान हो जाता है।

बाधक प्रदरे

कारवी स्याच्चतुर्माषाः मरिचंस्याद्द्विमाषकम्।
संचूर्ण्याशु त्रिसप्ताहं खादेद्दूषितवारिणा॥ १॥
गर्भाशयगतं मेदश्चानातवात्समुद्भवम्।
सर्वं दोषद्रुतं हन्ति रक्तशुद्धिश्चजायते ॥ २॥

(दत्त)

अर्थ—काला जीरा ४ मा०, काली मिर्च २ मा०, इन दोनों को कूट छान ले, और योग्य मात्रानुसार दोनों समय बासी पानी के साथ २१ दिन पर्यन्त सेवन करे। मासिकधर्म न होने तथा गर्भ न रहने से बढ़ा हुआ गर्भाशय गत मेद दूर होता है और मासिकधर्म होकर शीघ्र ही गर्भाशय के दोष दूर होते हैं और रक्त शुद्ध होता है।

प्रदराद्यवलेह

रम्भाफलानि चत्वारि त्वक्च सार्धैक तोलकम्।
लोध्रत्वग्धातकीपुष्पतुल्याद्धाद्धाश्चामताः पृथक्॥ १॥
शुण्ठीमायाफलं माषत्रयंसिता घृतंपलम्।
चत्वारिंशान्मितानीह दत्वातारदलानि च॥
संचूर्ण्यमेलयेत्सर्वान सुमात्रां चार्धकार्षिकीम्।
सायं प्रातः पिबेन्नीरैर्द्विघट्यन्ते पिबेत्पयः॥ ३॥
प्रदरान्दुस्वरान् हन्ति सर्वान्शीघ्रमसंशयम्। (दत्त)

अर्थ—केला की पकी हुई फली ४ नग, दालचीनी १॥ तोला, लोध की छाल ६ मासा, धाय के फूल ६ मासा, इलायची छोटी ६ मासा, सोंठ ३ मासा, माजूफल ३ मासा, मिश्री ४ तोला, गाय का घी ४ तोला, चांदी के वर्क ४० नग इन सब औषधियों का चूर्ण कर पीछे से चांदी के वर्क मिलाये और ६ मासा सुबह और ६ मासा शाम

पानी के साथ सेवन कर दो घड़ी बाद गौ का दूध पाव भर मीठा डालकर पीवे तो सब प्रकार के प्रदर अवश्य नष्ट होवें। यदि चांदी के वर्कों को कपड़े में छानकर मिलाया जाये तो अधिक सुविधा रहती है। शीघ्र ही अच्छी तरह से मिल भी जाते हैं।

रक्तप्रदरहरोयोगः

कर्षं बब्बूलपत्रं वरमसृणतरं वारिणा पेषयित्वा।
वारापूर्णे नवीनं कलशमुपानिवायास्य बाह्ये विलेप्य॥
रात्रौधृत्वा प्रभाते सकलमभिहरेल्लेपमद्य सिताढ्यं।
धाराभ चापिरक्तप्रदरमबानरुन्ध्यान्नास्ति मिथ्या वचो मे॥

(कोशल)

अर्थ—एक तोला बबूल के पत्तों को जल से अति चिकना पीस कर जल से भरे हुये नये मिट्टी के घड़े के बाहर लेप करके रात्रि में धर देवे, सवेरे उस सब लेप को निकाले व १ तोला मिश्री मिलाकर खाजाय यह धारा के समान रक्तप्रदर को भी रोक देता है। मेरी बात मिथ्या नहीं है।

वन्ध्यत्वहरोयोगः

यव निकासैन्धवमद्धकर्षं विधायताम्पोट्टलिकां निधाय।
सूत्रेणबद्ध्वा निदधीत गर्भाशयान्तिकं स्यात्तजलप्रवाहः॥
निरस्यताम्पोट्टिकमेव भुक्त्वा शृङ्गारयुक्ता पतिसंगता च।
दधातिगर्भं रमणीसुशीला वन्ध्यत्वमुक्त्यै फलितप्रभावः॥

(कोशल)

अर्थ—अजवायन सेंधानमक, ६ मासा लेकर पीस कर रख पोटली बनाये उसे एक लम्बे सूत में बांधकर गर्भाशय के पास रख देवे तो थोड़ी देर में जल का प्रवाह शुरू होगा। फिर पानी बहना बन्द होने पर डोरे को खींच पोटली को बाहर करदे अत्यन्त पौष्टिक भोजन कर, शृंगार करके, पति से समागम करे। सुशीला रमणी निश्चय गर्भ धारण करती है। यह बन्ध्यत्व दोष दूर करने को फलित प्रभाव युक्त है।

पुष्यानुग चूर्णम्

पाठा जम्ब्वाम्रयोर्मध्यं शिलाभेदं रसाञ्जनम् ।
अम्बष्ठकी मोचरसः समङ्गा पद्म केशरम् ॥
वाह्लीकाति विषा मुस्तं बिल्वं लोध्रं सगैरिकम् ।
कट्फलं मरिचं सुंठी मृद्वीका रक्त चन्दनम् ॥
कट्वङ्ग वत्सकानन्ता धातकी मधुकार्जुनम् ।
पुष्येणोद्धृत्य तुल्यानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ॥
तानि क्षौद्रेण संयोज्य पाययेत्तण्डुलाम्बुना ।
अर्शः सुवातिसारेषु रक्तं यश्चोप वेश्यते ॥
दोषागन्तु कृताये च बालानां तांश्च नाशयेत् ।
योनिदोषं रजोदोषं श्वेतं नीलं सपीतकम् ॥
स्त्रीणां श्यावारुणं यच्च तत्प्रसह्य निवर्त्तयेत् ।
चूर्णं पुष्यानुगंनाम हितमात्रेय पूजितम् ॥
अम्बष्ठा दाक्षणे ख्याता गृहणन्त्यन्ये तु लक्ष्मणाम् ।

अर्थ—पाठा, जामुन, आमकी गुठली, पाषाणभेद (हजरत बेर) रसोत, अम्बष्ठा, मोचरस, लज्जावन्ती, कमल केसर, हींग, अतीस, (अतईच) नागरमोथा, बेलगिरी, लोध, गेरू, कायफल, स्याहमिर्च, सोंठ, दाख, लाल चन्दन, कुटकी, कुड़ा छाल, घमासा, धाय के फूल, मोरेठी, अर्जुन छाल, इन सबको अच्छे मुहूर्त (पुष्यनक्षत्र) में लावें और उसका चूर्ण बनालें। शहद मिलाकर चावलों के जल के साथ पीने से बवासीर, रक्तातिसार, बालिकाओं के आगन्तुक दोष कृत योनि दोष, रजोदोष, सफेद, नीला, पीला लाल प्रदर आदि को नाश करता है। यह पुष्यानुग चूर्ण आत्रेय ऋषि ने वर्णन किया है। इससे यह रोग निश्चय नाश को प्राप्त होते हैं। यह मेरा बारम्बार का अनुभूत है। अम्बष्ठा औषधि दक्षिण में प्रसिद्ध है। हम तो लक्ष्मणाबूटी डालते हैं।

फलघृत

त्रिफला मधुकं कुष्ठं द्वे निशे कटुरोहिणी ।
विडंगं पिप्पलीं मुस्तां विशालां कट्फलं वचां ॥
द्वे मेदे द्वे च काकोल्यो सारिवे द्वे प्रियंगुका ।
शतपुष्पां हिंगु रास्नां चन्दनम् रक्त चन्दनम् ॥
जातीपुष्पं तुगाक्षीरीं कमलं शर्करां तथा ।
अजमोदां च दन्ती च कल्कैरेतैश्च कार्षिकैः ॥
जीवद्वत्सैक वर्णायाः घृतं प्रस्थं च गौः क्षिपेत् ।
चतुर्गुणेन पयसा पचेदारण्य गोमयैः ॥
सुतिथौ पुष्यनक्षत्रे मृद्भाण्डे ताम्रजे तथा ।
ततः पिबेच्छुभदिने नारी वा पुरुषोऽथवा ॥
एतत्सर्पिर्नरः पीत्वा स्त्रीषु नित्यं वृषायते ।
पुत्रानुत्पादयेद्धीमान्वन्ध्यापि लभते सुतम् ॥
अनायुषं या जनयेद्या च सूता पुनः स्थिता ।
पुत्रं प्राप्नोति सा नारी बुद्धिमन्तं शतायुषम् ॥
एतत्फल घृतं नाम भारद्वाजेन भाषितम् ।
अनुक्तं लक्ष्मणामूलं क्षिपेदत्र चिकित्सकः ॥

अर्थ—हर्र, बहेड़ा, आंवला, मुलैठी, मीठाकूट, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, वायविडङ्ग छोटी पीपर, नागरमोथा, इन सबकी जड़, कायफल, वच, मेदा, महामेदा, (अभावे मुलैठी) काकोली, क्षीरकाकोली (अभावे अश्वगंध) सालसा, काली सारिवा (कपूरी) फूलप्रियंगु (तुलसी की मञ्जरी) सोंफ, भुनी हींग, चन्दन, लालचन्दन जातीफल (चमेली पुष्प) बंशलोचन, कमल पुष्प, खांड, अजमोदा, दन्तीबीज की जड़ की छाल, इन तीस औषधियों को एक-एक तोला लेवे। सबका कल्क करके बछड़े वाली एक वर्ण की गौ का घृत १ प्रस्थ लेवे और उस कल्क को मिलावे और उस कल्क का उत्तम पाक होने के हेतु घी से चौगुना गौदुग्ध डाले। फिर सबको एक कङ्कदार

तांबे के डेग में (पात्र में) भर शुभ नक्षत्र (पुष्य नक्षत्र) में आरने उपलों की मन्द २ आंच से पकावे। घृत शेष रहने पर उतार छान लेवे इसे फल घृत कहते हैं। जिसे कि भारद्वाज ऋषि ने कहा है। इसको उत्तम दिन में पुरुषों को अथवा स्त्रियों को खाने को देवे। पुरुषों को देने से उनका काम बढ़ता है। स्त्री के साथ रमण करने से पुत्र बुद्धिमान तथा आयुष्यमान होता है। बांझ स्त्री को भी यह लड़का देने वाला है। तथा जिस स्त्री के बालक होकर मर जाते हों ऐसी स्त्री के सेवन करने से बालक दीर्घायु होता है।

यहां लक्ष्मणा का पाठ न होने पर भी वैद्यजन लक्ष्मणा को डालते हैं।

मात्रा—६ माशे से तोले भर तक मिश्री तथा गोदुग्ध के साथ

सुपारीपाक

दक्षिणाशाभवं पूगफलं द्विकुडवं द्वयहं।
प्रस्थाप्य सलिले खंडान्कृत्वा घर्मे विशोषयेत् ॥१॥
संकुट्यतां वस्त्रपूतं सूक्ष्मचूर्णं प्रकल्पयेत्।
अजले गोभवेदुग्धे क्षिप्त्वा कुर्य्यात्किलाटकम् ॥२॥
स्यात्किलाटा दष्टगुणा खंडातांस्तु पृथक्सुधीः।
पाचयेत्पाक विद्वैद्यः पक्कांतां प्रणयेर्त्क्षितिम् ॥३॥
दत्वा पूर्वं किलाटं तु चूर्णमेषा मपिक्षिपेत्।
त्रुटी बला लवंगं च शुण्ठी नाग बलावरी ॥४॥
पत्री जातीफलं पत्रं द्राक्षाक्षीर विदारिका।
हयप्रिया च मुशली स्वदंष्ट्रा कपिकच्छुरा ॥५॥
जटी सालममिश्री च शुष्कंश्रृङ्गाटकं तथा।
काश्मीरजन्म कर्पूरं श्रीखंडं वंशरोचना ॥६॥
कृष्णाजाजी जीरकं च सर्वं चेति पृथक्पृथक्।
कर्षैकमानं पश्चात् कुर्यात्तस्य तु मोदकान् ॥७॥

हितोलक मतंभुक्त्वा पिबेद्धारोष्ण गोपयः ।
एवं यदि नरोसेवेच्छीतकाले च सवके ॥८॥
धातुक्षयात् स्वप्नदोषाद् धातुमांद्यात्तथैव च ।
निर्बलादि विकारेभ्यो मुच्यते बलयुक्भवेत् ॥९॥ (शिव)

अर्थ—दचिणी सुपारी आधसेर लेकर ३ दिन तक जल में भिगोकर कतर कर टुकड़े करे बाद धूप में सुखाकर चूर्ण कर जल रहित गोदुग्ध में डालकर खोवा बनावे। खोवा से अठगुनी शक्कर लेकर उसकी अलग चासनी लड्डू की बनाकर धरती पर उतारे फिर उसमें सुपारी मिला खोवा मिलाकर आगे लिखी औषधियों के चूर्ण डाले—इलायची, खरेटी के बीज, लौंग, सोंठ, गंगेरन, शतावरी, जायपत्री, जायफल, तेजपात, दाख, विदारीकंद, असगंध, धोली, मुसली, गोखरू, कोंचबीज, जटामांसी सालममिश्री, सूखे सिंघाड़े, केसर, कपूर, चंदनचूरा, बंशलोचन, भुनाजीरा, यह सब औषधियां एक २ तोला पृथक् लेकर चूर्णकर मिलावे और सबके मोदक बना डाले। दो तोला प्रमाण नित्य खाकर ऊपर से धारोष्ण गोदुग्ध पान करे। इस पाक को यदि सम्पूर्ण शीतकाल में सेवन करे तो धातुक्षय, स्वप्नदोष से धातुमांद्य और भी निर्बलता इत्यादि जो विकार हैं उनसे छूटकर अर्थात् ये सब विकार दूर होते हैं और बलवान स्त्री व पुरुष होता है।

लोमनाशकतैल

बेरियं सल्फाईटक मांगलभाषासु विश्रुतम् ।
तस्यैकम्पल मादायत्रिपलेऽम्बुनि निक्षिपेत् ॥
यावत्पीतम्पचेद्वन्हौ तैलरूपं विलोक्य च ।
तैलसन्धार्य पात्रेषु लोमस्थाने विलेपयेत ॥
तत्क्षणाल्लोमनाशः स्यात्लेपयचैव कूर्चतः ।
तथास्य लेपतोनूनं दद्रुरोगोऽपि नश्यति ॥ (कोशात)

अर्थ—बेरियम् सल्फाइड (Berium Sulphide) जो कि अंग्रेजी भाषा में विख्यात है उसका १ पल लेकरके ३ पल जलमें डाल दे तथा पीले होने तक अग्नि में पकावे फिर जब यह तैल रूप हो जावे तो शीशी में रखकर फाहे से बालों के स्थान में लेपन करे। लेपन करते ही करते थोड़ी देर में बाल गिर जावेंगे तथा इसके लेप से दाद रोग भी निश्चय नाश हो जाता है।

अर्द्धावभेदहरोयोगः

जलेन पिष्ट्वा जयपालबीजं शुद्धं विलेप्यं शिरसोऽर्द्धभेदे।
पीडावसाने त्वरितं बिमृज्यघृतस्य लेपो विदधात्ववश्यम् ॥ १॥
अव्यर्थयोगोऽयमिहार्द्धभेदे तथालिदंशादि बिषाक्तदंशे।
प्रलेपमात्रे बिहिते तदानीम्पीड़ाप्रणाशो भवति क्षणेन ॥ २॥
(कौशल)

अर्थ—शिर में आधाशीशी पीड़ा होने पर शुद्ध जमालगोटा को जल से पीस पीड़ा स्थान पर लेप कर देवे पीड़ा शान्त होने पर शीघ्र ही लेप को धोकर घृतका लेप अवश्य लगा देवे। जिससे छाला न पड़े। यह आधाशीशी पर तो अव्यर्थ है ही परन्तु बिच्छू, बर्र, मक्खी आदि विषैले जीवों के दंश पर भी उसी समय इसके लगा देने मात्र से ही क्षण भर में पीड़ा नष्ट हो जाती है।

शिरसिमलोत्पत्तिः

उत्तमांगेमलोत्पत्तिः निर्बलत्वंहि कारणम्।
मर्दयेत् श्रीफलोद्भूतं तैलं कर्पूरसंयुतम् ॥ १ ॥ (दत्त)

अर्थ—शिर में मल (फियास) जमना निर्बलता का कारण होता है उसके दूर करने के लिये कपूर मिला हुआ नारियल का तैल मर्दन करना चाहिये।

शिरोरोगे

सिक्थकार्द्धमितं ग्राह्यं तिल तैलं तथा पलम्।
क्वथेकथा ततोबह्रौ शीते सौगन्धिकं क्षिपेत् ॥ १ ॥

कर्णिकासत्वजं तैलं ज्ञेयं वरलीन संज्ञनम् ।
पिपरमेन्ट कपूरौ पृथक् कर्षाधसम्मितौ ॥ २ ॥
यदाचिन्मौ तदाज्ञेयो मेन्थल नाम को बुधैः ॥
शिरार्ति रूक्षतां हन्ति दृष्टमेतन्न संशयः ॥ ३ ॥ (दत्त)

अर्थ—सफेद मोम १ तोला, सफेद तिल का तेल ४ तोला, दोनों को अग्नि पर गरम करके हल करे एक दिल होने पर उतार लेवे ठंडा होने पर सुगन्धि के लिये अच्छा इत्र गुलाब डाल दे। बस वेसलीन तैयार हो गई। पिपरमेन्ट ६ माशा, कपूर ६ माशा, को मिलावे हल होने पर वेसलीन मिला देने से मेन्थल बन जाता है इसके लगाने से शिरदर्द तथा रूखापन दूर होता है।

अर्धावभेदे

गुञ्जैक मात्रं किलसैन्धवञ्च,
पिष्ट्वा जले पञ्चमिते च माषे।
शीर्षामये व्यत्यय नस्य युक्त्या,
बिन्दुत्रयं घ्राणपुटे च देयम् ॥ १ ॥
बिन्दुद्वयं फेनिल वारिजातं,
शूलं त्वणान्नश्यति चार्ध भेदम्।
सुलप्सिका कुण्डलिनी घृताढ्या,
पथ्ये प्रयोज्या शिरसाञ्च बल्यम् ॥ २ ॥
शूले शान्ते सदा देयं श्रद्धया दान मर्थिनाम्।
प्राप्तुं पीयूषपाणित्वं गृह्णीयान्न कदाचन ॥ ३ ॥ (राम)

अर्थ—एक रत्ती सफेद नमक को ५ मासे जल में घिसकर जिधर दर्द हो उससे दूसरी तरफ की नाका के छिद्र में तीन २ बूंद डाले। यदि दोनों तरफ हो तो दोनों नथुनों में तीन २ बूंद डाले। तथाच रीठा का छिलका पानी में घिसकर उपर्युक्त विधान से दो २ बूंद डाले तो आधाशीशी का दर्द फौरन नष्ट होता है। दोनों औषधियों में हलवा, जलेबी आदि मस्तिष्क को ताकत देने वाली

चीजें सेवन करें। श्रद्धापूर्वक दृढ़ शांति होने पर गरीबों को दान दे। और अपने को यशस्वी तथा सिद्ध हस्त बनाने वाला वैद्य किसी से कुछ भी न लेवे।

शिरःशूले

कपर्दस्य कृतंभस्म कन्यास्वरसयोगतः।
शिरःशूल विनाशाय किलाटैरुपयोजितम् ॥

अर्थ—कुमारी रस में रखकर की हुई कौड़ियों की भस्म को १ मासा लेकर गौदुग्ध से बनाये हुये १ तो० खोया में रख प्रातः सायं खाने से शिरशूल सब प्रकार के नष्ट हो जाते हैं।

मुखरोगाधिकारः

दन्तवज्र चूर्ण

विश्वाभया कौलकदेवपुष्पे यज्ञाङ्ग जैवातृक वारिवाहाः।
त्वक्चैव वाताद गुवाकभस्म तुल्यांशमेषां खटिका नियोज्या ॥
विधाय चूर्णं खलुवस्त्रपूतं दन्तावलीषु प्रतिघर्षणाद्वै।
वज्रोपमं मौक्तिक कान्तितुल्यं भवन्तिदन्ताः स्थिरताम्प्रयाताः ॥

अर्थ—सोंठ, हरेंस्याह, मिर्च, लौंग, खैर, कपूर, नागरमोथा, दालचीनी, बादाम के छिलके की राख, सुपारी की राख प्रत्येक सम भाग लें। और सबके बराबर खड़िया मिट्टी मिला चूर्ण बना लें। इसके मलने से दांतों का हिलना दूर हो, दांत मोती के समान साफ रहते हैं।

नोट—हमारे यहां चूर्ण में दालचीनी का तैल और अर्क पिपरमेंट मिला दिया जाता है इससे और भी गुणकारी होजाता है।

कृमिदन्ते

करपीडन जातकरञ्जरसं श्रुतिगह्वरगालितसूक्ष्मकणाः।
अपहन्तिरुजं दशनोत्थभवं कुतुकं विदधाति प्रयोगवरः ॥

अथ—पान की तमाखू के पत्तों का निकाला हुआ स्वरस जिस तरफ की दाढ़ में पीड़ा होती हो उसी तरफ के कान में ५-६ बूंद डालने से तत्क्षण पीड़ा शांत होती है यह कौतूहलवर्द्धक योग है।

दन्तोद्भवे

शिरीषबीजोद्भवकण्ठहारो दन्तोद्गमोद्भूत रुजापहारी।

शिरष के बीजों से बनी हुई माला बालकों के दांत निकलने वाले रोगों को दूर करने वाली होती है।

नेत्ररोगाधिकार

नेत्ररोगे

सेवन्तिकार्के त्वहिफेनरक्त संमिश्रणं नेत्ररुजापहारि।

अथ—गुलाब के अर्क १ तोला में अफीम २॥ मा०, काश्मीरी केशर ३॥ मा० को पीसकर छान लें और शीशी में रख २-२ बूंद २-३ बार दिन में प्रयोग करने से नेत्रों की पीड़ा व लालिमा दूर होती है।

अन्यच्च

नवसादर तुत्थसुराष्ट्रभवम् परिचूर्ण्य समं पटपूतरजः।
विनिधाय सुनिंबुक गर्भगतं प्रातश्चतु षष्ठिमिता घटिका॥
करसम्पुटपीडनजातरसम् द्वयतोलकमानमितेत्वमले।
शतपत्र प्रसूनभवे स्वरसे अवलोड्य करोत्वमले पिठरे॥
अपहान्तरुजं सततं सकलम् प्रसभोदय प्रदेयं नेत्रगदे।
उपपात भयानक सर्पकुल मवलम्बत भति मयूरइव॥

अथ—नवसादर, तूतिया, फिटकरी का समभाग किया हुआ चूर्ण एक कागजी नीबू में भरकर २४ घंटे रक्खा रहने दो। बाद को २ तोला अर्क गुलाब में नीबू का रस मिला शीशी में भरकर नेत्र रोगों में प्रयोग करें। मात्रा—२-३ बिन्दु, मोतियाबिंद को छोड़कर समस्त नेत्र रोगों में अकसीर है।

नेत्रार्तिहरपोटली

चक्षुर्भागौ कुमार्य्योस्तदनु निगदितः खाखसस्यैकभागः।
रङ्गांगाभस्ममाष द्वितयमपि तथा माषमेकं च शस्यः॥ १॥
तादृग्चन्द्रं तथैक पटुतरगुडिके स्वच्छवस्त्रेण बद्ध्वा।
पानीये प्रस्थमाने खखसफलरजो नेत्रकर्णे निधाय॥ २॥
क्वाथेत्वर्द्धावशेषे विमल गुडिकया नेत्रसेको विधेयः।
मन्दोष्णेनैव कार्य्यो मुहुरपि च सदा नेत्ररोगापहन्त्री॥ ३॥
स्रवंशूनारुणत्वं परिहरति रुजं नेत्रयोर्योऽपमाना।
पीडांनानाविधोत्थां दिनकरोध्वान्त राशितथाहि॥ ४॥

अर्थ—घी कुमारी का गूदा २ तो०, अफीम के बोंड़ १ तो० भुनी हुई फिटकरी २ मासा, आमाहल्दी १ मासा, शुद्ध रसोत १ मासा, शुद्ध कपूर डेला १ मासा इन सबको पीस साफ कपड़े में बांध कर दो पोटलियां बना लेना फिर १ सेर पानी में २ तोला अफीम के बोंड़ों को कूटकर डालकर औटाये जब आधा सेर पानी रह जाय तब उतार ले। थोड़ा गरम रहने पर उसी पानी में पोटलियां डालकर आंखों को सेकना चाहिये। इससे आंखों की लालिमा, आंसू बहना, दर्द आदि सब प्रकार के रोग सूर्य किरणों से जिस प्रकार अंधकार दूर होता है, उसी प्रकार दूर होते हैं।

नेत्रामयहरयोग

कर्पूरं कर्षमात्रं स्यात्षट्कर्षं स्फुटिकारुणा।
ताभ्यांद्विकर्षमधिकं स्वच्छं युक्त्वा रसाञ्जनम्॥ १॥
सम्मर्द्यपलमात्रेण शतपत्रकमिश्रितम्।
अक्ष्णोर्बिन्दुनिपातेन नश्यन्त्यक्षिभवारुजः॥ २॥ (कोशल)

अर्थ—भीमसेनी कपूर १ तो०, लाल फिटकरी ६ तोला, स्वच्छ रसोत ८ तोला इन सबको कूट घोटकर १ छटाक असली नम्बर १ के गुलाब के अर्क को मिलाकर शीशी में रख लेवे। इसको आंखों में २-२

बूंद करके दिन में ३ बार डाल दिया करे तो नेत्र के सब रोग नाश होते हैं। परहेज तैल, खटाई, मिर्च, चावल बादी चीजें त्याग करे।

नेत्ररक्षक वटी

रसाञ्जनं कर्षमात्रमहिफेनस्तु माषकः।
सौभाग्यंस्फुटिका चैव प्रत्यंकन्त्वर्ध कर्षकम्॥
पंचकर्ष प्रमाणेन तिन्तिडी पत्रजोरसः।
शतपत्र्यर्कसंमिश्रं सर्वं मृद्वग्निना पचेत्॥
द्विगुञ्जमानावटिकाः कृत्वा कांसस्यभाजने।
घर्षयेत्तेनाञ्जयेद्दृग्णो नेत्रपीड़ा विनाशिनी॥ ३॥

(कौशल)

अर्थ—रसौत १ तो० अफीम १ मासा, सुहागा की खील ६ मा०, फिटकरी की खील ६ मासा, इमली के पत्तों का अर्क ५ तोला सबको गुलाब के अर्क में मिलाकर मृदु अग्नि से पकावे। २ गुञ्जा की वटिका बनाकर कांस्यपात्र में घिसकर आंखों में अञ्जन करे तो सब प्रकार की नेत्र पीड़ा नाश हो।

आंखों की सुर्खी

तिन्तिडीकस्यपत्राणि कर्णमात्राणि पेषयेत्।
टङ्कमानां च सम्भृष्टां तुवरीं तत्र मेलयेत्॥ १॥
पेंटलीगन्तु तद्द्रावं चक्षुष्याश्च्यो तयेत्तदा।
चक्षुः समन्ततश्चैव त्रिदिनं कुर्याच्चभ्रामणम्॥ २॥
चक्षुरोगान्निहन्त्याशु साध्या साध्यान्न संशयम्।
यत्पक्षो योऽक्षिरोगःस्यात्तत पादांगुष्ठ मूलके॥ ३॥
निम्नोद्दृष्टामथ युञ्ज्या दुबुध्यासम्यक्तया क्रियाम्।
कुमारिकारसं वेदकषमानं तथा निशाम्॥ ४॥
अग्निकाख्या द्विमाषां वेकदुष्णांतत्र विन्यसेत्।
आयदेन पलाशेन पुनस्तं बन्धयेन्नरः॥ ५॥

स्निग्धशीतंतु पथ्यं स्याच्छृणुबोध न्ग्थवथो शृणु।
माषदालीं मुद्गदालीं निस्तुषीकृत्य सम्पचेत्॥ ६ ॥
यवमयीं रोटिकामद्यात् सुरुक्षां नेत्र रोगवान्।
शाकवर्गेतु पालक्याः पटोलस्यापि सेवनम्॥ ७॥
पथ्यं वा तण्डुलस्यापि ससर्पिष्कस्य निर्दिशेत्। (मन)

अर्थ—इमली के पत्तों को तोलाभर लेकर पीस डाले और ३ मा० उसमें फिटकरी मिलाकर पोटली बांधकर उसका रस दुखती आंखों में निचोड़ दे। और आंख के बाहर भी पोटली लगाता रहे। इस प्रकार ३ दिन करते रहने से उक्त नेत्र रोग साध्य तथा असाध्य सब निःशेष हो जाते हैं। और साथ में जिस तरफ को आंख दुखती हो (दोनों दुखती हों तो दोनों तरफ) उस तरफ के पैर के अंगूठे में नीचे लिखी पुल्टिस भी यदि बांध दे तो शीघ्र आराम पावे। घीकुमार का रस ४ तो० अम्बियाहल्दी २ मा० कूटकर मिला देवे और कुछ सुहाता २ रख दे। ऊपर से पलास का किंवा एरण्ड का पत्ता बांध दे। चिकना और ठण्डा अन्न (जैसे चावल, जौ की रोटी) खाना खावे अन्नों में उड़द या मूंग की दाल छिलका उतार कर देवे तथा जौ की अच्छी पकी रोटी। शाकों में पालक, परवल आदि।

नेत्र बिन्दु अर्क

शतपत्रांकजंनीर मनिपूतं पलान्मितम्।
सत्वं कर्पूरजं कर्षमात्रं सार्द्धं पलोन्मितम्॥ १ ॥
सत्वं खदिरसम्भूतं तन्मानां स्फटिकां तथा।
रसाञ्जनं च तन्मानं सममामिश्र्य वैद्यराट्॥ २ ॥
पूर्वोक्तवारिणालोड्य काचकूप्यां निधापयेत्।
द्विस्त्रिर्वा दृशोःसिच्यात् प्रत्यहं कुशलो भिषक्॥ ३ ॥
नेत्रामयाविनो बिन्दुद्वयीं तेनाप्नुयात्सुखम्।
नेत्राभिष्यन्दस्त्रवणकमन्धता तथा रुग्णत्वं क्लिन्नाशमीयात॥ ४ ॥
उल्लिख्य दोषानखिलान् दृगुद्भवान् विकाशयेबन्द्रवदीक्षणम्।
(मन)

अर्थ—गुलाब अव्वल नम्बर का अर्क ४ तोला प्रमाण, भीमसेनी कपूर या शुद्ध कपूर १ तो० भर, कत्था सुर्ख १॥ पल (६ तो०) तथा फिटकरी, रसौत शुद्ध ये भी १॥ पल सबको मिलाकर पूर्वोक्त अर्क में हलकर शीशी में भर दे। वैद्य इसे दिन में २ या ३ बार रोगी के नेत्रों में २-३ बिन्दु डाल फौरन आराम होगा।

गुण—नेत्र बहना, रतौंधी, आंखकी सुर्खी तथा नेत्र के दोषों को उखाड़ कर चन्द्रमा की ज्योत्स्ना जैसे नेत्र कर देता है।

नयनामृत योगः

आदाय भूतिं यशदस्य कर्षं स्फटीं सुभृष्टां भिषजांवरेण्यः।
कर्पूरपिष्टिं कुरुमाषमात्रां कर्षार्धं मात्रापि च शीतचीनी॥
प्रयोजयेत्सर्वं मथैक पात्रे विमर्द्यता मञ्जनवत् सुखल्वे।
योगोऽयमद्यञ्जनवत् प्रयोज्यः सर्वाक्षिरोगेष्वति दारुणेषु॥

(मन)

अर्थ—जस्तभस्म १ तो०, खील की हुई फिटकरी १ मा०, शीतल चीनी ६ मा०, सबको खूब बारीक सुरमे की तरह लगाये, इससे आंखों की गई ज्योति फिर वापिस आती है। अनुभूत है।

नेत्ररोगे

बब्बूल दलानः क्वाथो लेहीभूतस्तदञ्जनात्।
नेत्रस्रावं जयत्येष मधुयुक्तो न संशयः॥

अर्थ—बबूलपत्र ५ तो० को १ सेर पानी में क्वाथ कर चतुर्थांश शेष रहने पर उतार मलकर छान लो। फिर उस जल को कड़ाहीमें चढ़ा कर औटाओ जब लेहके समान होने लगे तो उतार लो और ठण्डा होने पर चौथाई हिस्सा मधु मिला डिब्बी में रख लो इसके लगाने से आँखों से सब प्रकार का पानी बहना बन्द होता है।

नेत्रपीड़ा हर पोटली

अर्धकर्षन्तु प्रत्येकं मधूकः स्फटिकासितं।
त्रिमाषमेलाञ्चाफूकं सार्द्धमाषमितं तथा॥

शुक्लवस्त्रवृता चैषा कांस्यपात्रे जलप्लुता ।
द्वि कर्षोह्यर्के गेऽस्य द्वित्रिबिन्दूनि चक्षुष ॥
भूयो भूयो प्रयोऽयं वै द्वित्रिवारं दिनेषु वै ।
नेत्र पीड़ाहरा चैषा पोटली तु प्रकीर्तिता ॥

अर्थ—महुआ के फूल ६ मा०, फिटकरी ६ मा०, मिश्री ६ मा०, इलायची के बीज ३ मा०, अफीम १॥ मा०, इन सबको कूट महीन पीसकर सफेद कपड़े पर रख पोटली बनाकर कांसे के पात्र में २ तो० जल डालकर कुछ देर तक रक्खा रहने दे। बाद को मलकर अर्क निचोड़ ले। यह अर्क २-३ बार आंख में डालने से उसी दिन आंख साफ हो जाती है।

नोट—आई हुई आंख में भुनी फिटकरी डाले और आने वाली में कच्ची डाले।

शीताञ्जन योगः

ज्योतिष्कैला च कङ्कोलं बीजं कृष्णशिरीषजम् ।
स्फुटिका वंशिकापुष्पं धवलं मरिचन्तथा ॥
दशाहं कदलीगर्भस्थितं सौवीरकं समम् ।
सपादकर्षं मादद्यात्कर्पूरन्दशमाषकम् ॥
पीपर्मेन्टाश्च मषं स्यात्सूर्यक्षारश्च तुल्यकम् ।
कर्षमात्रं समं चूर्णाञ्जन प्रकुर्यं विघर्षयेत् ॥
अस्य शीताञ्जनस्याक्ष्णो ञ्जनादक्ष्णिदिशा ।
नेत्र रोगाः पलायन्ते मेघा इव शरद्दतौ ॥

अर्थ—रतनजोत, छोटी इलायची के बीज, शीतलचीनी, काले सिरस के बीज, भुनी फिटकरी, चमेली के फूल, सफेद मिर्च १० दिन तक केले के छिद्र में रक्खा हुआ काला सुरमा प्रत्येक १। तोला, कपूर भीमसेनी १० मा०, पिपरमेंट ३ माशा, कलमी शोरा १ तो०, भुना नौसादर १ तो०, इन सबको बारीक चूर्ण कर कपड़छन करले। फिर

कपूर पिपरमेंट मिलाकर अञ्जन के समान धारण करे। शीताञ्जन सुर्मा को दिन में दो बार आंखों में आंजने से शरद ऋतु में मेघों के समान नेत्र रोग भाग जाते हैं।

बालरोगाधिकारः

बालामृत वटी

आफूकंहिंगुसौभाग्यं भृष्टं माषत्रयोन्मितम्।
द्विगुणं खदिरं चैलाबीजन्तु द्विगुणौषधम्॥
वस्त्रपूतंसमंचूर्णं वारिणा परिमर्द्दयेत्।
द्विगुञ्जाभावटी कार्या बालेभ्यः पयसा ददेत्॥
बालामृतवटी नाम बालरोगविनाशिनी।
अतिसारान्निहन्त्याशु बालत्राणकरी परा॥

अर्थ—अफीम, हींग भुनी, सुहागा, ३-३ मा० प्रत्येक, पपरिया कत्था, छोटी इलायची के बीज ६ मा०, सोंठ १ तोला सबको बारीक चूर्ण कर कपड़े से छानकर अफीम, हींग मिला, पानी से खूब मर्दन करे। २ रत्ती की वटी बनाकर बालकों के दूध के साथ प्रातः सायं देवे। यह बालामृत नामक वटी बाल रोगों को नाश करने वाली है। सब प्रकार के बालकों के हरे पीले आम संयुक्त दस्तों को तो शीघ्र नाश करती है। यह परम बालरक्षाकारिणी है।

आनाह शूलहर योगः

एलाशुण्ठीसैन्धवं हिंगुभार्गीश्चतेषां सर्वं चूर्णयित्वासमानम्।
शार्ङ्गोष्णेनाज्येनवाचेत्प्रपीतशूलानाहान्निहन्त्याच्छुशूनाम्॥

अर्थ—इलायची बीज, सोंठ, सेंधा नमक, भुनी हींग, भारंगी इनको समान भाग लेकर चूर्ण करके रखले उष्ण जल या घृत के साथ अवस्थानुसार देने से बालकों का पेट फूलना, पेट दर्द दूर होता है।

आनन्दभैरव वटी

दरद वत्सनाभं च मरिच टंकणं कणा ।
चूर्णयेत्समभागेन रसोह्यानन्द भैरवः ॥ १ ॥
आर्द्रकस्वरसेनैव वटिकामुद्गसन्निभाः ।
मापेके वत्सकेचूर्णेपेष्यैकानन्द भैरवी ॥ २ ॥
दिनेद्विवारकं दद्यात् मधुनासह योजिताम् ।
हन्ति ज्वरातिसारौ च शिशूनां छर्दनं तथा ॥ ३ ॥

अर्थ—शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वत्सनाभ, मिरच स्याह, शुद्ध सुहागा, पीपल छोटी समान भाग लेकर पीस छान आर्द्रक रस से मुद्ग बग बर गोलियां बनाकर रख ले। बालकों के ज्वर, अतिसार और वमन, हरे पीले दस्तों में एक गोली को १ मा० इन्द्रजो चूर्ण के साथ पीस कर दिन में आधी आधी मात्रा से दो बार में शहद के साथ चटादे। यह गोली बड़े मनुष्यों को भी दी जाती है। अतिसार में एक या दो गोली १ मा० इन्द्र जौ के चूर्ण के साथ देने से लाभ होता है। कोई २ वैद्य इसके ऊपर रात्रि के समय शुद्ध भांग की फंकी सम भाग शक्कर मिला १ मासा की दिलाते हैं। बड़ों को दो या तीन बार यह वटी दी जाती है और दही भात पथ्य देने से अच्छा गुण करती हुई देखी गई है।

वालामृत

त्रिवृत्पथ्यात्वचौकर्षे पौदीना चार्धकार्षिकः ।
प्राह्या विषाख्यो माषाः सर्वमेकत्र चूर्णयेत् ॥ १ ॥
खादेत्स्तन्येन पत्रेण सुरसायास्तथैव च ।
अर्भकेषु कृपां कृत्वा विद्वद्भिश्च प्रकाशितः ॥
वालामृतोऽयं कथितास्य मात्रा,
गुञ्जामिता नश्यति तेन क्षिप्रम् ।
ज्वरोऽतिसारः कसनश्चश्वासः,
प्रवाहिका वै पयसामपाकः ॥ ४ ॥ (राम)

अर्थ—नशोत स्वेत १ तोला, बड़ी हरड़ का छिलका १ तोला, पोदीना खुश्क ६ मा०, अतीस ३ मा०, इन सबको कूटकर चूर्ण बना ले। इसको १ रत्ती की मात्रा से माता के दूध तथा तुलसी पत्र रस के साथ खिलावें तो यह बालामृत ज्वर, दस्त, कास, श्वास, प्रवाहिका और दूध का न पचना आदि रोगों को दूर करता है। विद्वानों ने इसे बालकों पर कृपाकर प्रकाशित किया है।

बाल शोषे

आदाय षण्माषं तु विषमोहहरं द्वयम्।
कोलाभ प्रस्तरश्चैवतावन्मानंसमाहरेत् ॥ १ ॥
सामुद्रं नारिकेलञ्च तन्माना च शिवास्मृता।
पद्मबीजत्वक्षीरं बीजमेलाभवं तथा ॥ २ ॥
उक्तमानं समाहृत्य "जवद" रस माषकम्।
संकुट्य गालयेत्तच्च वाससाखल्वयेत्ततः ॥ ३ ॥
मुक्तापि ष्ठञ्च षड्गुञ्जा तस्मिन्नेव निक्षिपेद्बुधः।
शतपत्री रसेनाथ मुद्गाभां कारयेद् वटीम् ॥ ४ ॥
प्रातरेकांवटीं खादेच्छतपत्रानुपानतः।
मातुः स्तन्येनवा बालोबालरोगहरीं वटीम् ॥ ५ ॥
दन्तोद्भेदजारोगाज्वरश्चातिसार संज्ञकाः।
अनेक रोगसांकर्य्यं बालानां शोषकारकम् ॥ ६ ॥
एतद्भयसतोहन्याद्दुष्टस्तन्यभवं तथा।
असाध्येष्वपि रोगेषु बालानां योज्यतामियम् ॥ ७ ॥

(मन)

अर्थ—जहरमोहरा ६ मा०, बेरपत्थर ६ मा०, समुद्री नारियल ६ मा०, हर्राजंगी ६ मा०, पद्माख ६ मा०, बंशलोचन ६ मा०, सफेद इलायची के बीज ३ मा०, गुलाबपुष्प केशर ६ मा०, इन सबको एकत्र कूट कपड़छन कर खरल करे और मोतियों की पिट्ठी ६ रत्ती उसमें डाल कर गुलाबअर्क नं० १ से खरल करे। अनन्तर मूंग के बराबर गोलियां

बना ले। प्रातः १ गोली गुलाब अर्क के अनुपान से या माता के दूध से बालक को खिलाये। इसका नाम 'बालरोगहरावटी' है।

दांत पैदा होते समय के जो वमन अतिसार आदि उपद्रव हैं और जो अनेक रोगों का समूह है जो कि बालकों को सुखाने वाले हैं और निदानादि से निर्णीत नहीं होते और जो पारिणामिक रोग (जो कि माता के दूध से उत्पन्न होते हैं) इत्यादि अवस्थाओं में भी इसे देना चाहिये।

चूर्णजलम्

पलप्रमाणां सितशर्करांतु ग्रीवा विभूतिं च तदर्धमानाम्।
पयः समादाय पलैर्दशैश्च खल्वेऽखिलं साधुविमर्दनीयम्॥ १॥
तन्नीलवर्णं किल काचकुम्भे प्रक्षिप्य कुर्याद् सुखमुद्रणं वै।
यामेऽथयातेऽप्रतिलोडनीयं यामद्वयेस्वच्छजलं ग्रहाण॥
हृच्छूलवान्ति व ग्रहदोषपीड़ा जीर्णातिसारक्षत नाशनञ्च।
सदान्त्रवृद्धि हरणेसमर्थो बालोचितं चूर्णजलं प्रसिद्धम्॥

अर्थ—खांड १ पल, कलाचूना आधा पल, जल दश पल, सबको एकत्र कर खरल में घोटे फिर नीले रंग की शीशी में डाल काग लगा बन्द करदे एक प्रहर (३ घंटे) बीतने पर शीशी को हिलादे, दोपहर बीतने पर साफ जल को निकाल कर रख छोड़े यह चूर्ण जल (चूने का पानी) कहलाता है। इसकी १५ बूंद बच्चों के हृच्छूल, वमन, पीड़ा, अजीर्ण, अतिसार, चोट, तिल्ली अन्त्रवृद्धि आदि रोगों में रामबाण सा असर करती हैं।

बङ्गभस्म

वंगं विशुद्धं विधिना विधाय द्रुतप्रदद्यात्समेव सूतम्।
सूतावसोर्रात्रिगुणं विमर्द्य यावद्भवत्सूक्ष्मरजः समेषाम्॥
कृत्वाजिरेनद्दृढबन्धिलेपम् पाच्यंपुटेनैव तु कुक्कुटेन।
एतत्सुरम्यं हिमकुन्दगौरम् सर्वत्रयोज्यन्तु यथानुपानैः॥

अर्थ—प्रथम विधि पूर्वक बङ्ग को शुद्ध करके गलाले उसमें बंग के बराबर शुद्ध पारा डाल पिट्ठी बनाकर खरल में डालकर पीसे

साथ में पारद से तिगुना कलमीसोरा डालकर महीन चूर्ण करले और एक बड़े कूजे में भरके कुक्कुटपुट में फूंक ले यह श्वेत रंग की उत्तम बंगभस्म होगी जो सर्वत्र योग्य अनुपान से दें।

नोट—इस भस्म में क्षार मिला रहता है इससे ५-७ बार धोकर पानी निकाल देना जिससे क्षार रहित हो जावे।

स्वर्ण बङ्ग

हिंगुलसंभवंसूतं बंगं च नृषारकम्।
एतत्सर्वं समं शुद्धं दशांशं सोरकं क्षिपेत्॥
वह्नौ द्रुतं बंगे सूतं सम्मेल्य यत्नतः।
विधाय पिष्टकं पश्चात् दत्वा लवणं विमर्दयेत्॥
सैंधवाम्लुतताग्येन तावन्मर्द्यं यथाविधिः।
यावद्वै निर्गमेच्छुद्धं तोयं श्वेतं र्वानिमतम्॥
घर्मेसंशुष्य वेयुक्त्या गंधंदत्वा विमर्दयेत्।
पश्चान्नृषारकं दद्यात् सोरकं वै तथापुनः॥
स्तवकमृदालिप्तं काचकूप्यां निधाय वै।
दत्सर्वं सिकतायंत्रे पचेद्याम चतुष्टयम्॥
कूपीकंठगतंक्षार युक्त्या निष्काषयेद्बुधः।
धूमनाशे पुनः पाच्य यामद्वन्तु हठाग्निना।
स्वांगशीते ततोग्राह्य स्वर्ण वर्ण्णं वङ्गकम्॥
बल्यमेहहर ... न्तिमेधावीर्याग्निवर्द्धनम्।
सिन्दूर श्वासकासघ्न क्षारं जाठरजं रुजम्॥
चूर्णं क्षारसमं कृत्वा कूप्यां समर्पेत्य दीयते।
अस्माद्भयात्पलायन्ते मदमूर्छा शिरोरुजः॥

अर्थ—हिंगुल से निकाला पारा, शुद्ध रांगा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध नवसादर समान भाग ले और पारद का दशमांश कलमीसोरा ले प्रथम रांगे को अग्नि पर तपाकर पिघलाले उसमें पारा मिलादे बाद का ठंडा करके सेंधा नमक मिले जल से इस पिट्ठी को यहां तक धोवे कि

कालिमा निकलकर सफेद पानी आने लगे तब सुखा ले। और गन्धक डालकर मर्दन करता जाय। बाद को नवसादर और सोरा मिलाकर घोटे और सम कपरौटी की हुई आतिशी शीशी में भरकर बालुकायन्त्र में चार पहर पकावे। पकाते समय क्षार उड़कर शीशी के कण्ठ भाग पर जमे॥ उसे सलाका द्वारा खींच खींच कर बाहर फेंकता जाय। क्षार से बन्द हो जाने पर शीशी टूट जाती है। जब धुआं निकलना बन्द हो जाय तब डाट लगा १॥ घण्टे की तेज आग दे। बस तैयार हो गया समझे। शीतल होने पर शीशी को तोड़कर तलस्थ स्वर्ण के समान चमकदार स्वर्ण बंग को निकाल ले। यह स्वर्ण बंग प्रमेह हर और बल कान्ति, अग्नि, मेधा को बढ़ाने वाला होता है। कुछ क्षार मिले वह उदर रोग नशनार्थ काम में लावे। रस सिन्दूर कास, श्वास के लिये उत्तम दवा है। क्षार में सम भाग कली चूना मिलाकर शीशी में भर नस्य देने से मूर्च्छा आदि हरती हैं और शिर दर्द शीघ्र दूर होजाता है, चूना लगा बुझा नहीं चाहिये यह विच्छू, बर, विषैले जानवरों के डङ्क पर भी लाभ करता है।

रौप्यभस्म

तालस्यचक्रिणो कृत्वा तन्मध्येतुल्यतारकम्।
धृत्वासम्पुटकेरुध्यं दशवस्थोपलेष्वथ॥
मृत्तं कोभं भवेद्भस्म एतेनैकेन निश्चितम्।
प्रयोगेतु सदारुयम् नवनीतेन रक्तिकम्॥

अर्थ—शुद्धि वर्की हरताल १ तोला को पानी में घोटकर दो टिकड़ी बनाकर हरताल के समान शुद्ध चांदी के पत्र बीच में रख ऊपर नीचे हरताल की टिकड़ी लगाकर शराव सम्पुट में बन्द कर १० सेर उपलों की आग दे तो मटयाले रंग की भस्म एक पुट में होगी। यह भस्म १—१ रत्ती मलाई या मक्खन में देने से शुक्रज रोग नष्टकर कान्ति पैदा करती है।

मल्लयोग नं० १

मल्लंविशुद्धं सुभगं सुशुक्तिम्, सोरंसमं तद्विगुणं नृसारम् ।
संमर्दसर्वं रविदुग्ध दिग्धम्, पाक्यंपुटेनैवतु कुक्कुटेन ॥
वल्लार्द्धतः समारभ्य गुञ्जाद्वद्वं प्रमाणतः ।
योग्यानुपानतो दद्यात् सर्वरोगेषु वैद्यराट् ॥

अर्थ—शुद्ध मल्ल, शुद्ध सुहागा, सुक्तिभस्म, कलमीशोरा, समान भाग, नौसादर सबसे दूना इनको अर्क दुग्ध में पीस गोला बना सुखाकर सप्त कपर मिट्टी करके कुक्कुट पुट में फूक दे। मात्रा—आधी रत्ती से २ रत्ती तक योग्य अनुपान से देने से गठिया, उपदन्श, ज्वर, प्लेग, निमोनिया आदि को हटाती है। पथ्य—दुग्ध चावल भूख न लगे तो—

जम्बूपत्रजवारि मर्दितमयो तत्कल्क मध्येस्थितं ।
शंखं भस्म विधाय तस्य नयनं कर्षं समाहृत्यवै ॥
तन्मात्रं च विमिश्र्य पञ्चलवणं षण्माषकं रामठं ।
त्र्यर्द्धं स्याच्च फलत्रयन्त्रिकटुकं चूर्णं स दुग्धम्पिवेत् ॥
मन्दानलविनाशः स्याद्भुक्तं जीर्यति नान्यथा ।

अर्थ—जामुन की पत्ती को खरल कर उसकी लुगदी में भस्म की हुई शंखभस्म २ तो०, शुद्ध हींग ६ मा०, त्रिकुटा ३ तो०, त्रिफला ३ तो० पांचों नमक २ तो० का चूर्ण बना ४ मा० दुग्ध से दे। यह योग भूख को खूब बढ़ाता है।

नाड़ी च हृदयं चापि दुर्बलत्वम्प्रयाति चेत् ।
रोगे जीवित शंकावा प्रयुञ्जीततदा त्विदम् ॥
मल्लभस्म च कस्तूरीं सार्द्धगुंजं विमिश्रयेत् ।
लेहयेन्मधुना चान्ते सुरां कामपि योजयेत् ॥
अथवा भस्ममल्लस्य विषद्रुःसार्द्ध रक्तिकम् ।
रक्तिकंशुद्ध हिग्वंदं हिमोमृगमदस्तथा ॥

सर्वशुद्ध गृहीत्वैवं प्रदद्यात्सावधानतः ।
स्वबुद्धया चान्य रोगेषु सानुपानं प्रकल्पयेत् ॥
दुग्धौदनं घृतं नाल्पमपथ्य मेहेषु निश्चनम् ।
बालिनां साद्धं गुंजान्ता परमामद्धं रक्तिका ॥

अर्थ—कदाचित् नाड़ो क्षण हो तो उपयुक्त भस्म १॥ रत्ती कस्तूरी १॥ रत्ती को पीस किसी सुरासे दें या कुचला शुद्ध चूर्ण १॥ रत्ती, कस्तूरी आधी रत्ती, शुद्ध हींग, १ रत्ती भीमसेनी कपूर आधी रत्ती, उपयुक्त मल्ल भस्म १॥ रत्ती में मिला प्रयोग करें। पसली में दर्द हो तो मुर्गी के अण्डे की जरदी बारहसिंगा का सींग, सिंदूर, पुराना घृत मधु, कली चूना सम भाग मिला लेप करे या सत अजवाइन, सत पिपरमेंट, कपूर, केशर, गेन्दार्थरिय तैल (यह डाक्टरों के यहां मिलता है) उपरोक्तमतीतैल, यूकलिप्टस तैल, तारपीन तैल, इन समस्त दवाइयों को समान भाग ले दूने नारायण तैल में मिला लगावें ऊपर से गरम कर एरण्ड पत्र बांध दें। यदि यह तैयार न हो सके तो अलसी भूनकर कूटलें लहसन, प्याज, हल्दी, सेंधानमक समभाग को जल में पीस गरम कर लेप करें कफजन्य अन्यान्य रोगों पर भी दें।

मल्लप्रयोग नं० २

शुद्धं मल्लन्तु कर्षन्द्विपलपरमिते कल्लराख्ये निधाय ।
सम्यक्कृत्वा शरावद्वयगतमखिलं मृद्घटेस्थापयित्वा ॥
आदौकुम्भन्तु वैद्यो हरि तरुभसिता पूरितं संविधाय ।
पश्चादारोप्य चुल्ल्या प्रहरमथ पचेत्तीव्रवह्नेः शिखाभिः ॥
शीतं समुद्धृत्य यवार्द्ध मात्रया प्रदत्तमात्रेणनिहन्ति सत्वरम् ।
शूलोपदंशौनवजीर्णज्वरौ तथान्यरोगान्विविधर्वाग्नियोजितम् ॥

अर्थ—१ तोला शुद्ध संखिया को ४ तो० कल्लर (यह वह चीज़ है जो कच्चे मकानों में दीवारों से नमकीन सा झरता है. नोंना लगना यू० पी० में कहते हैं) में रख ऊपर से ४ तो० कल्लर बिछा दाबकर शराव सम्पुट में बन्द कर पीपल की राख से भरे हुये एक बर्तन में दबाकर १ प्रहर की अग्नि दें खड़िया फूला हुआ मिलेगा, मात्रा १

वमनं विरेचनशुद्धो लवणं निष्ठ त्यजेत्मग्न कुष्टी।
तस्य चापि विदृध्य तु सजयात कुष्ठन्त्रात विगलितम् ॥

(कौशल)

अर्थ—सिंदूर आठ तोले में ८ तोले शुद्ध मल्ल को दबा कर कोयलों की अग्निपर तपावे जब संखिया फूल जावे तो उसे निकाल कर ५ तोले सेहुँड के दुग्ध में पीसकर शराव सम्पुट में रख भस्म करले इस भस्म को आधा यव मात्रा मलाई में रखकर निगल जाये और ऊपर से आधसेर दुग्ध पान करे। इस प्रकार ४० दिन करे इस प्रयोग से खूब वमन विरेचन होंगे इनसे घबड़ाना नहीं चाहिये। केवल वायु और धूप को बचाता रहे पथ्य में चने की रोटी घृत से खावे मीठा और नमक छोड़ दे। नस्यादिक करता रहे इससे गलित कुष्ठ तक अच्छे होते हैं।

मल्लयोग नं० ५

मल्लं सितं कर्षमितं गृहीत्वा सुधोत्पुगोत्थरसैर्विमर्द्य।
संशोष्य तीक्ष्णं रविदुग्धलिप्तं विधाय भूयोऽपि विशोषणीयम्।
ततोऽर्कपत्रेण विवेष्टय बीजपूरस्यमध्ये विनिधाय पश्चात।
मृद्वस्त्रबद्धन्तु करीषवन्हौ दग्धं निदध्या दृढकाचपात्रे ॥
यवार्द्धमानस्पयसा प्रदत्तं विरेच्य हन्याज्जलोदराख्यम्।
रसोनहिङ्गु त्रिकटुप्रसंगान्निहन्ति शूलं शतधा समूलम् ॥
रोगेषु वातप्रभवेषुदत्तो विनाशयत्याशु समीररोगान्।
अन्येषु रोगेष्वपि योजनीयं बुद्ध्या नुपानेन बलानुमानम् ॥

(कौशल)

अर्थ—शुद्ध सफेद संखिया एक तो० लेकर बिजौरे नींबू के अर्क में एक दिन खरल कर टिकिया बना सुखाले उस टिकिया पर आक का दूध लपेटकर बार २ धूप में सुखा ले फिर अर्कपत्र में लपेट कर नींबू के बीच में भरकर कपरौटी करके गजपुट में फूंक दे बाद को भस्म निकाल पीस शीशी में रख छोड़े इसमें से आधे यव प्रमाण मात्रा दुग्ध से देने से वमन विरेचन होकर जलोदर को नष्ट होता

है। लहसुन, हींग, त्रिकुटा, के साथ देने से सब प्रकार के उदर शूल दूर करता है वातज रोगों में तथा अन्य २ रोगों में योग्य अनुपान द्वारा देने पर विशेष लाभ करता है।

देवदाली गुणाः

वान्तिकृत् कटु तीक्ष्णोष्णा श्लेष्मकास प्रश्वासनुत्।
पांडुःक्षयं कृमिहिक्कां ज्वरशोफान् प्रणाशयेत् ॥ १ ॥
विषभूतारुचीहन्यात् प्रायो मूषकविषान्तिका।
एतन्मूलं कटुरसं कफ गुल्म नाशनं प्रभुत् ॥ २ ॥
पांडुरोगं तथा शूलं वात व्याधिञ्च निर्हरेत्।
एतत्फलं तु सम्प्रोक्तं मल विस्रंसनं परम् ॥ ३ ॥

आदाय पंचैव फलान्हितस्या निरस्यबीजानि पृथक् त्वचश्च।
जालावशेषाणि तत. कुरुष्व सुभाजन स्थान जलान्वितानि ॥४॥
होरात्रमात्रं विनिधापयेत्तु ततो विनिष्कास्य विमर्दयश्च:।
तत्काल गु भागं वहिरस्य पश्चात् श्वेतायितं नीरमथो गृहाण ॥५॥
तत्कानकूप्या विनिधाय सम्यक् नस्यक्रियायामथ योजनीयम्।
अयं रसस्सप्तदिनानि यावन्न विक्रियायेतिहात: परस्तात् ॥ ६ ॥
विकारभीयादत एव वैद्यै: प्रस्तूय तात्कालिक एव याज्य:।

(मन)

सं०—देवदाली। हिं०—घगरबेल, सोनैयां। गुण—वमनकारण स्वाद में कड़वी वीर्य में उष्ण कफ, खांसी, दमा, को जीते तथा पांडु (पीलिया) क्षय (तपेदिक) कृमि (कीड़े बाहर के अन्दर के) हिक्का (हिचकी) ज्वर और शोफ (सूजन) को नाशे है।

जहर, भूतबाधा, अरुचि (जी मिचलाना) और विशेष करके चूहे के जहर को नाश करती है। इसकी जड़ रस में कड़वी कफ गुल्म (वायुगोला) बवासीर को हरती है। पांडु रोग तथा शूल और वात-व्याधियों को हरती है और मल आदि को ढीला करती है।

हवरस निर्माण और नस्य निर्माण—घगरबेल के ५ फलों को लेकर बीज तथा ऊपर का छिलका उतार लेने पर बाकी बचे

मात्र को अनुमान माफिक जल डाल सुन्दर बासन में रख छोड़े। आध घंटे रहने के बाद हाथों से मल डाले अनन्तर फोग को फेंककर सफेद सा पानी निथार लेवे और कानकुरा (शीशी) में भरकर डाट लगा करके रख छोड़े और नस्य के समय वक्त पर काम लाये। यह स्वरस सात दिन तक खराब नहीं होता। बाद हीनवीर्य हो जाता है। इसलिये हकीम को चाहिये कि ताजा बनाकर काम में लाये।

प्रयोग विधि

सिद्धे तस्मिन् योजयेद् वैद्यवर्यो नस्यं चैतद्दारुणे मूर्घ रोगे।
प्रातःकाले चन्नभोजनं रोगिणं याहंगू योऽदां प्रोक्षयेत् तत् पुरस्तात् ।१।
पूर्वाह्णे वाग्रणं शायित्वाऽधश्शय्या मुत्तानं स्यादानतं मूर्धदेशम्।
मात्रा प्रह्व वृन्दोपरस्य षड्विंशत्वार् विद्वान् वैद्यराजः ॥ २ ॥
वामेन रुद्ध्येत अथान्ययोरपि नस्यं प्रयुक्त परिगृह्य मारुतम्।
वेगेन नस्यं परतः समुत्थितः चवाश्रितं तद्विहरस्येत् क्षणात् ॥ ३ ॥
नाधापथेनदद्दुष्ट निरेत पानसं क्षणात्।
आदाच्छिन्नतया यस्य त्रिरात्रेण सुखी भवेत् ॥ ४ ॥
रसप्रवेश चेत्तुष्टं प्रतीयेत्तु गले तदा।
उपाय एषवक्तव्यस्तेन यायात् सुखं पुमान् ॥ ५ ॥
आरग्वधस्य मज्जाया धारणादथवा पुनः।
प्रपानकस्य तूरस्य किंवा तत्कालक्ष्वप्रचोषणम् ॥ ६ ॥
किंवा कोष्णेन गंडूषेणोपशाम्येत वेदना।
मांहनच्छसाक्षानश्यम स्थान कण्ठयेत रुजाकरम् ॥ ७ ॥
अनायासेन याऽयबलाद्वाकल्पयेत कफम्।
सकृत्प्रयोगतो ह्यस्यात्रिरात्रं स्तुतं वहेत ॥ ८ ॥
आमरणाद्वीनस नाम व्याधिर्नास्य पुनर्भवेत्।
सकृत्प्रयोगतश्चं तुभ्यानमांहत्तकं न विरेचितम् ॥ ९ ॥
द्विवारमथा त्रिवारमथा पुनरेनत्प्रयुज्यताम्।
अपाहाल परतस्कस्य सेवनं हितर्मारतम् ॥ १० ॥

यस्मिन्नहनि सेवेत तस्मिन् पथ्यमिदं कुरु ।
निःस्नेहं लवणमशनं सखास्य विशेषतः ॥ ११ ॥
पत्तनस्त्ववना मुद्गदालीयूषसहितं मतम् ।
गोधूममन्नमश्नीयाद्द्रवजये दितरद्भिषक् ॥ १२ ॥
सत्वं गुञ्जामितं वाऽम्या माषमाने जले क्षिपेत् ।
रसमेनं प्रयुञ्जीत पूर्वोण विधिना भिषक् ॥ १३ ॥
पूर्वाभावेऽनु कल्पोऽयं प्रोक्तो वैद्यविशारदैः ।
यदापेक्ष्यं तु नस्यं स्यान्मात्रयाऽहि कनिष्ठया ॥ १४ ॥
तत्र सत्वं प्रयोक्तव्यमरुचेर प्रसङ्गतः ।
स्वर्णात्रैत्रास्य सत्वस्य प्रयोगः सुकरो मतः ॥ १५ ॥
प्रवासेऽपि भवेत्सौख्यं भिषजां हि चिकित्सिते ।
आदाय वृतकोषायाः सारं वाऽप्यथवा रसम् ॥ १६ ॥
सुसंक्लेद्य च फूयेन कृमिदन्ते निधापयेत् ।
दिवानिशं परिक्रामयन् क्षणार्धेन सुखीभवेत् ॥ १७ ॥
आमाशयस्थाश्चेत् कृमयः पलमात्रं रसं पिब ।
निष्यांस्याशु हृदिष्ट श्च कृतस्थान अपिच्छणात् ॥ १८ ॥
आमाशयस्था ऽधस्ता दुपरिष्टाच्च हृदि स्थिताः ।
तद्रक्लिन्न फूयेन परिशोध्यव्रणं भिषक् ॥ १९ ॥
तज्ज कृमिगणं हन्यात् पुष्पाणां कृते क्षणु ।
तद्रसाक्तम कार्पासवर्तिकां स्मर मन्दिरे ॥ २० ॥
निधाप्याहि त्रिवारन्तु ह्यचिरात्तु प्रवर्तयेत् ।
सप्ताहाभ्यन्तरे स्त्रीणां पुष्पं संशोध्य रञ्चयेत् ॥ २१ ॥
चूर्णं वटुतुम्बयास्तु तद्रसोन्मिश्रितं कुरु ।
अर्शोऽङ्कुर प्रलेपेन मूलाघातं विघातयेत् ॥ २२ ॥
मस्तिष्कोष्मप्रतप्तानां योगाभ्यासब्रकुठिताम् ।
कामलापाण्डु जुष्टानामेतन्नस्यं विधीयते ॥ २३ ॥
उन्मादिनापूर्वकं मस्तिष्कोष्मा प्रशाम्यति ।

केवलं दालिकाचूर्णं कोष्णाम्भस्तु शीलितम् ।
हरेत्कुष्ट रोगांश्च रेचयेच्च लघूत्तमम् ॥ २४ ॥
फलानि चूर्णितान्यस्य खल्वे तान्यम्बुनि भृशम् ।
गोलत्वञ्च यथायाथ कोलमात्रां गुटीं कुरु ॥ २५ ॥
प्रातरेकां गुटीं भुक्त्वा तप्ते वर्मे ह्युपाविशेत् ।
कटुतैल समाभ्यक्तो वाम्यते रिच्यतेऽञ्जसा ॥ २६ ॥
स्वेदवम्यतीसाराद्या औषधोपद्रवाः स्मृताः ।
यावत्सायं विनश्येरन्स्वयमेवास्य रोगिणः ॥ २७ ॥
एवं क्रियं दिनाभ्यासात् कुष्ठरोगेण मुच्यते ।
सायमद्यात्कुलत्थान्नं माषान्न चातत: शृणु ॥ २८ ॥
प्रत्यहं सेवनतः किलास्याः मुद्गस्य यूषाऽशनमश्नीयं शिवम् ।
उद्वेगवर्षैः पिदुश्चिकित्स्यमसाध्यप्रायं विजहाति नूनम् ॥ २९ ॥

(मत)

अर्थ—जब नस्य सिद्ध होजाय तब उसे भयानक पीनस रोग शिरदर्द इत्यादि में प्रयोग करे। प्रयोग करने की यह रीति है। कि—प्रथम रोगी को खाट पर उत्तान (चित्त) सुलाकर कुछ शिरो भाग नीचा करके दांयें व बायें नासिका छिद्र में चगरवेल के रस को रोगी का बलाबल तथा देश काल परीक्षा कर ६ से ० बूंद तक टपकावे। रोगी इसको १—२ मिनट तक नासिका द्वार में प्राण वायु बन्द कर ठहरने देवे ताकि औषध मस्तिष्क में पहुँच जाये। अनन्तर छींक के द्वारा नस्यौषधि बाहर आ जायगी। तब उठ खड़ा हो जावे। नासिका-रन्ध्र से दुष्ट कफ तीन रात तक बराबर उस रोगी के जारी रहेगा। इससे रोगी को सुख लाभ होगा। रस के घुसने से अगर रोगी के गले में कष्ट मालूम हो तो उसे यह उपाय करना चाहिये कि अमलतास का गूदा लेकर मुंह में रख थोड़ा २ करके चूसे अथवा शहतूत पिये या गरम जल से कुल्ले करे।

इस क्रिया के करने से मगज में गाढ़ा जमा हुआ या अति कष्टदायक रेशा. (वह चाहे नजला का हो या अन्य रोग से हो)।

बलात्कार खींचकर बाहर निकल आता है। एक बार प्रयोग करने से पीनस (प्रतिश्याय नजला) फिर जन्म भर नहीं होता है। यह रोग यदि एक बार के प्रयोग से आराम न हो तो दो वा तीन बार ७ दिन का अन्तर दे इस्तेमाल करे। परन्तु स्मरण रहे कि सुबह को करना चाहिये धूप के वक्त न करे। जिस दिन नस्य लिया हो उस दिन घी, गरम वस्तु, लाल मिर्च ये वस्तुयें त्याग देवे और मूंग की दाल और गेहूँ तथा विशेष करके मखाने की खीर खाना हितकारक है। इस रस के अभाव में इसका प्रतिनिधि सत्व लेवे, १ रत्ती सत लेकर १ मासा पानी में घोलकर पूर्व विधि से प्रयोग करे। जहां छोटी मात्रा की आवश्यकता हो वहां इस सत्व का प्रयोग करे। कारण—इससे अरुचि नहीं होती और विशेष खट पट की जरूरत नहीं पड़ती। यह सत मुसाफिरी में रख सकते हैं। और हकीमों को बड़ा सुभीता इलाज करने में रहता है। इसलिये यह हर हालत में पास रखना चाहिये, जिसकी निर्माण क्रिया आगे लिखेंगे।

नागरबेल के रस को या सत के बने हुये जल मिश्रित रस को लेकर फोया रुई का डुबोकर दांत में रख देवे दिन रात जिसको पीड़ा से बेचैनी हो उसे फौरन आराम हो जाता है।

अगर पेट में कीड़े हों या छाती में जगह बनाली हो तो इसके ४ तो० रस को पीलो बस ऊपर के वमन द्वारा सब निकल जायेंगे और नीचे के मार्ग से पेट के निकल जावेंगे।

किसी भी जख्म में कीड़ा पड़ गये हों तो इसके पानी से रुआं भिगोकर धोये तो सब कृमि मर जायेंगे।

यदि स्त्री का आर्त्तव (मासिक धर्म) किसी कारण विशेष से नष्ट हो गया हो तो यह क्रिया करे। इसके रस से बत्ती रुई की भिगो॰ कर गुह्य स्थान पर रखे तो आर्त्तव ठीक समय पर परिमित रूपेण आने लगता है। यह ऋतु के दिनों में १ दिन में ३ बार रखे तो सप्ताह के भीतर तक काम दिखाती है।

यद सोर हो तो कड़वी तोम्बड़ी का चूर्ण कर इसके रसमें मरहम बनाकर मस्सों पर कुछ काल लेप करने से समूल नष्ट होजाते हैं जिससे फिर होने की आशंका नहीं होती।

जो मगज की गर्मी से तंग हो गये हैं और योगाभ्यास करते हैं। उन्हें यह नस्य क्रिया तत्काल गुण दिखाती है और पाण्डु, कामला रोगियों को इसका सेवन हितकरहै। जिसको उन्माद (मालेखौलिया की बीमारी है) उन्हें भी गुणकारक प्रमाणित हुई है। केवल चूर्ण का प्रयोग करने से कुष्ट पर चमत्कारिक गुण देखा है और साथ में एक दस्त भी आता है।

इसके फलों को कूट छानकर खरल में डाल पानी से गोली बांध लेवे प्रातः १ बेर के बराबर गोली लेकर पानी से खा लेवे पश्चात् सरसों धूप में कड़वे तेल की मालिश कर बैठ जाय। वमन, वमन अतिसार और पसीना दवाई के अनन्तर प्रारम्भ होंगे। शाम तक स्वयंमेव ये उपद्रव शांत हो जाते हैं। इसमें घबराना नहीं चाहिये। इस प्रकार कुछ दिन करते रहने से कुष्ठ रोग से मुक्त हो जाते हैं।

साथ मूंगकी दाल या उर्द का पथ्य देवे। और यदि इसका प्रति दिन सेवन किया जाय तो (सफेद कोढ़) जो बड़े २ वैद्यों से ला इलाज हो ऐसा असाध्य प्राय भी नष्ट हो जाता है।

तैल निर्माण प्रकारः

सम गुणसाधित तैलाभ्यङ्गा न्माशात् प्रणाशयेत सद्यः।

श्वित्रंवीसर्प पामा दद्रू कुष्ठं तथापि दारुणां पुंसाम ॥ १ ॥ (मन)

अर्थ—देवदाली के रस के समान भाग तिली का तेल लेकर मन्द २ आंच से पकावे तेल शेष होने पर्यन्त। इसकी कुछ दिन मालिश करने से श्वित्र विसर्प (विस्फोट वातरक्त आदि) दाद पामा और अति भयानक कुष्ट नाश होते हैं।

सत्व विधान प्रक्रिया

दालीफलानि पलसम्मितानि पादांशयुक्तानि विकुट्टितानि।

तक्र प्रमाणेन परिष्कृतानि तत्रैव आकुञ्च्य तु [illegible] विदधीत वानि ॥ १ ॥

विमर्दनीयानि दिनं समस्तं निम्ब खल्वादथ फल्गुभागम् ।
प्रक्षाल्य किञ्चित् किल वारिणातु वारिद्वयञ्चाथ प्रमेलनीयम् ॥ २ ॥
अवशिष्ट फल्गु परिहाय चास्य छायासु नीरं मथाविशोष्यम् ।
पुनश्च खल्वे परिपेष्य सूक्ष्म तत्काचकूप्यां निदधीत वैद्यः ॥ ३ ॥
आमासषट्कं विकृतं न यायात् सर्वेषु मेंऽत्र योजनीयम् । (मन)

अर्थ—देवदालीके ५ तो० फल लेकर ऊपर कहे तरीके के अनुसार साफ करके कूटकर खल में डाल पानी से १ दिन पर्यन्त घोटे । बाद उस बची हुई दवाई को थोड़ा पानी डाल धो लेवे और फोग को फेंक दे । बाद उस खरल के पानी को और धुले पानी को छाया में सुखा लेवे, सूखने पर खरल में डाल बारीक घोंट देवे । यह सत तयार हुआ । इसे एक शीशी में वैद्य रख छोड़े और समय पर काम में लावे । यह सत छः महीने तक हीन वीर्य नहीं होता है ।

वैद्य प्रार्थना

अनेकशो ह्येषमया परीक्ष्य प्रकाश्यतेऽद्भुत एषयोगः ।
मात्सर्यमुत्सार्य्य विचार्य्य वैद्याः, परन्तनश्चात्मसतं प्रदेयम् ॥ ॥
(मन)

शोथघ्नी रसायन

मण्डूरञ्च गवां मूत्रे षोडशके गुणे पचेत् ।
विशुद्धैक दिवसेरुद्ध्वा कन्यायां सम्पुटे पुटेत् ॥ १ ॥
गोमूत्रे त्रिफला क्वाथे पुटेदेव पृथक् दिने ।
पुनर्नवा रसे चैव गजपुटेऽपांत्रधा पुटेत् ॥ २ ॥
पञ्च कर्षमितम् भस्म गृह्णीयाच्च वराङ्कः ।
ततश्च तालकम् शुद्धम् रविक्षीरे विमर्दयेत् ॥ ३ ॥
पुनर्नवा रसे पञ्चदशादिने तु चाक्रकाम् ।
कृत्वासंशोष्य शोथघ्नी क्षारे चाष्टगुणे पचेत् ॥ ४ ॥
एवंतभस्म भवेदेवम् समायादेक तालकम् ।
कर्षमेकं फिटकरी शुद्धकं मत्र तु रसं क्षारकम् ॥ ५ ॥

पृथक् संचूर्ण्य गोमूत्रे दृढ़ं तं परिमर्दयेत् ।
वराक्वाथे दिनैकञ्च शोथघ्न्या द्विदिने रसे ॥ ६ ॥
छायाशुष्कं ततो ग्राह्यं मात्राचास्य द्विमाषिका ।
माषैकावा प्रयोज्याथ रोगवृत्तं विजानता ॥ ७ ॥
गोमूत्र त्रिफला क्वाथशोथघ्नी स्वरसेषु च ।
लेह्येदवलेह्योऽयमेषा मेवानुपानतः ॥ ८ ॥
गवांक्षीरेण वाल्हीम पथ्यापथ्यं तथाशृणु ।
रोटिकाञ्च घृतैर्हीनाँ खादेत युक्त्या विचारवान् ॥ ९ ॥
सितामाक्षिक गोक्षीरैः सर्पिषा सिवया सह ।
शीतलंवारिवातांम्ललवणानि च वर्जयेत् ॥ १० ॥
शोथघ्नी देवदार्वब्द गुडूचीस्वरसेन वा ।
गवांदुग्धेन, मूत्रेण सम्यगालोच्य कल्पयेत् ॥ ११ ॥
यदि स्यादतिसारोऽत्र शुण्ठी कुटज सम्भवः ।
पुटपाक विधानेन स्वरसो वा प्रयोजयेत् ॥ १२ ॥
यदि ज्वरातिसारः स्यात् रेचकानि विवर्जयेत् ।
ज्वरे ग्राहीणि स्निग्धानि वर्जयित्वा विकल्पयेत् ॥ १३ ॥
एवं यथा विकल्पेन शोथिनं समुपाचरेत् ।
सर्वदेह गतं शोथं दारुणं दुरतिक्रमम् ॥ १४ ॥
तत्क्षणान्नाशयेच्छोथं लोकविस्मयकारकं ।
द्विहोरानन्तरे मात्रा पृथग् देया पुनः पुनः ॥ १५ ॥
रसायनमिदञ्चोक्तं शोथघ्नीनामकं बुधैः ।
शोथंघोरतरं हन्ति नात्रकार्या विचारणा ॥ १६ ॥ (राम)

अर्थ—पुराने कोहकिट्ट "मण्डूर" को सोलहगुने गोमूत्र में फूंक देवे फिर एक दिन थीग्वार के रसमें घोटकर सम्पुट में बन्द कर गजपुट में फूंक देवे इसी प्रकार गोमूत्र और त्रिफला क्वाथ में एक २ दिन घोट कर अलग २ गज पुट में भस्म करे और पुनर्नवा रसमें घोटकर तीन पुट देवे ऐसी मण्डूर भस्म ५ तोला लेवे । फिर शुद्ध हर ताल तबकी आकके दूध में १५ दिन और पुनर्नवारस में १५ दिन

घोटकर टिकियां बनाकर सूखने पर अठगुने पुनर्नवा के बीच में रख हांडी में बन्दकर तेज अग्नि द्वारा की गई हरताल की भस्म १ तो॰ लेवे। और जवाखार १ तो॰ पीपल १ तो॰ कालीमिर्च १ तो॰ सोंठ १ तो॰ को कूटकर चूर्णकर कपड़े में छान लेवे और सब औष-धियों को मय मण्डूर भस्म के मिला देवे। पुनः एक दिन गोमूत्र में, एक दिन त्रिफला क्वाथ में, पुनर्नवा रसमें दो दिन खूब घोट कर छाया में सुखाकर रख लेवे। इसकी मात्रा १ माशा से २ मासे तक रोगी का हाल जानने वाला प्रयोग करे। गोमूत्र त्रिफला क्वाथ पुनर्नवा स्वरस में उक्त मात्रानुसार चूर्ण मिला के सेवन करे और ऊपर से गायका दूध तथा गोमूत्र त्रिफला क्वाथ पुनर्नवा स्वरस पिये। मात्रा रोगी की दशा समय आदि देखकर निश्चय करे। पथ्य में बिना चुपड़ी रोटी शहद गौ का दूध तथा मिश्री और घी से खावे ठंडा पानी हवा, नमक, खटाई न खाये। पुनर्नवा, देवदारु, नागरमोथा, गिलोय का अर्क या गोमूत्र तथा गाय का दूध उचित कल्पना कर पीने के लिये देवे। यदि साथ में दस्त हों तो शाङ्गधरोक्त सोंठ या कुरैया का पुट पक्व स्वरस भी आवश्यकतानुसार दें। यदि ज्वर और अतिसार हो तो रेचन औषधियों को छोड़कर उचित कल्पना करे। यदि ज्वर होवे तो ग्राही और चिकने पदार्थों को छोड़कर शेष द्रव्यों को काम में लावे। इस तरह यथा योग्य जरूरत के अनुसार कल्पना कर शोथ रोगी की चिकित्सा करे। जो शोथ सम्पूर्ण शरीर पर बड़े जोर का हो चिकित्सा करने में मुश्किल हो जिसको कि चिकित्सक छोड़ चुके हों और जिस सूजन की प्रबलता को देख लोग आश्चर्य करते हों ऐसे भयंकर शोथ को यह शोथघ्नी रसायन फौरन दूर करती है। इसकी मात्रा दो-दो घंटे बाद दिन और रात में बराबर देनी चाहिये। यह अतीव उत्तम योग शीघ्र लाभ दायक है।

उमेशचन्द्रेण भिषग्वराह संशोधितोऽयं जगतोहितेन।
सिद्धप्रयोगं परिबोध्य सन्तः कुर्युः प्रयासं सफलं मदीयम्॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः॥

ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित ग्रन्थरत्न

१—राजयक्ष्मा-तपेदिक को मिटाने के उपाय। मू० ।≈) आना।

२—दमा-श्वास को दूर करने के उपाय। मू० ।) आना।

३—अर्श-सब प्रकार की बवासीर और मस्से दूर करने के उपाय इसमें हैं। मू० ॥) आना।

४—हरिधारित ग्रन्थ रत्नम्-समस्त रोगों के सुलभ योग भाषा टीका सहित वर्णित हैं। मू० ।=) आना।

५—प्लीहा-तिल्ली नाश करने के सरल उपाय। मू० ।-) आना।

६—सिद्धौषधि प्रकाश-अनेक अनुभवी योगों का बड़ा संग्रह है। पुस्तक देखने योग्य है। मू० १॥) रु०।

७—स्त्री रोग चिकित्सा—स्त्रियों के सभी रोगों का वर्णन और परीक्षित चिकित्सा भी है। मू० ॥) आना।

८—व्रणोपचार पद्धति-समस्त प्रकार के घावों का इलाज। मू० ।=)

९—वैद्यक शब्द-कोष-काष्ठौषधियों के नाम संस्कृत से भाषा में वर्णित हैं। श्लोक लगाने और उनके अर्थ समझने में बहुत उपकारी है। मू० ।) आना।

१०—सरलरोग-विज्ञान-इसमें आयुर्वेदीय, यूनानी और आंग्ल, तीनों के निदानों का संग्रह कर, शरीर के किस स्थान पर कौन रोग होता है, वहां कितने रोग होते हैं? पुस्तक वैद्यों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मू० अजिल्द ३) रु०, सजिल्द ३॥) रुपया।

११—आयुर्वेदीय विश्व-कोष-आयुर्वेदीय यूनानी, एलोपैथिक चिकित्सात्रय के निदान, चिकित्सा निघण्टु शरीर एवं रसायन-शास्त्र पर वेद-काल से लेकर आजतक की तहकीकातों पर विस्तृत प्रकाश डाला है। वैद्यों के लिये परमोपयोगी है। मू० अ० ६), स० जि० ७) रु०।

नोट—जो सज्जन १) प्रवेशफीस भेज ग्रन्थमाला के स्थाई ग्राहक बन जाते हैं, उन्हें अब तक की प्रकाशित पुस्तकें पौने मूल्य में दी जावेंगी, अतः स्थाई ग्राहक बनकर लाभ उठाइये। मिलने का पता—

मैनेजर—अनुभूत योगमाला आफिस,

बराल्रोकपुर, इटावा यू० पी०।